महाभारत

कर्णपर्व्व समाप्त।

महर्षि कृष्णद्वैपायन वेदव्यास-कृत मूल संस्कृतसे

योग्य पण्डितोंके द्वारा

अनुवादित

और

११७।१ बहूबाजार ष्ट्रीट, कलकत्ते से

श्री शरच्चन्द्र सोमके द्वारा

प्रकाशित।

द्वितीय संस्करण।

कलकत्ता;

श्री माणिकचन्द्र चक्रवर्त्तीके द्वारा

११७।१ बहूबाजार ष्ट्रीट,—कलिज मेशिन प्रेससे मु

१९०६।

हिन्दी

महाभारत

आदि पर्व्वसे स्त्रीपर्व्व तक समाप्त हुआ और शान्तिपर्व्व आरम्भ हुआ।

महाभारत जैसा अमूल्य ग्रन्थ दूसरा नहीं है। प्रत्येक हिन्दुके घरमें इस अमूल्य ग्रन्
रहना एकान्त कर्त्तव्य है; इसी कारण जहांतक सम्भव हो सका मूल्य कम कर
संस्करण छपाना प्रारम्भ किया है।

शीघ्र सुविधा—सात रुपया अग्रिम भेजकर जो लोग ग्राहक होंगे, वह लोग सम्पूर्ण महाभारत
मय डाक महसूल १२) रुपयेमें पावेंगे। महाभारत सम्पूर्ण होनेसे मूल्य १४) रुपया और
डाक महसूल २) देना होगा। एक साथ ५ महाभारतका मूल्य अग्रिम ५५) भेजने
६ प्रति पुस्तकें मिलेंगी डाक महसूल नहीं देना होगा। पूराने ग्राहकगण जिनका ३)
भी जमा नहीं है वह लोग अब आगेकी पुस्तक नहीं पासकते हैं।

अङ्गरेजी शिक्षक।

अङ्गरेजी सीखनेके वास्ते ऐसा बढ़िया पुस्तक दूसरा नहीं है। जो लोग कुछ भी अङ्गरेजी
नहीं जानते; वे इस किताब को पढ़नेसे बिना गुरुकी मदत के हो बहुत सहजमें अङ्गरेजी
सीखेंगे और जो लोग अङ्गरेजी जानते हैं, वे भी इसकी मदतसे शुद्ध अङ्गरेजी लिख तथा बोल
सकेंगे। एक प्रति अंगरेजी शिक्षक ॥।) बारह आने। महसूल ‌-) एक आना। भि: पि, से ॥।‌-)

श्री शरत्चन्द्र सोम।
११७।१ बहूबाजा... कलकत्ता।

महाभारत।

शल्यपर्व्व।

नारायण नरोंमें श्रेष्ठ नर और दिव्य स्वरूप-
वाली सरस्वतीको प्रणाम करके जय
कीर्त्तन करना उचित है।

महाराज जनमेजय बोले, हे ब्राह्मणश्रेष्ठ! वैशम्पायन मुने! जब अर्ज्जुनने कर्णको इस प्रकार मार डाला, तब बचे हुए कौरवोंने क्या किया? राजा दुर्य्योधनने पाण्डवोंकी सेनाको बढ़ते हुए देख समयानुसार क्या उपाय किया! हे ब्राह्मण श्रेष्ठ! मैं अपने पूर्व्व पुरुषोंका चरित्र सुनकर तृप्त नहीं होता इसलिये इस कथाको सुनना चाहता हूं आप मुझसे कहिये!

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे महाराज! कर्णके मरनेके पश्चात् राजा दुर्य्योधन शोक समुद्रमें डूब गये और विजयसे निराश होकर बार बार हाकर्ण! हाकर्ण! कहकर रोने लगे, इस प्रकार रोते हुए राजोंके सहित बहुत कठिनतासे अपने डेरोंमें पहुंचे यद्यपि अनेक राजोंने शास्त्रमें लिखे अनेक उपायकर राजा दुर्य्योधनको बहुत समझाया तो भी उन्हें सूत-पुत्र कर्णके शोकसे शान्ति न हुई, परन्तु होन-हार और प्रारब्धको बलवान् समझ कर राजा दुर्य्योधन फिर युद्धको चले, उसी समय उन्होंने राजा शल्य को सेनापति बनाया और बचे हुए राजोंके समेत युद्धको चले, हे भरत कुलश्रेष्ठ! तब पाण्डव और कौरवोंकी सेनाका देवासुर संग्रामके समान घोर युद्ध हुआ। हे महाराज! शल्यने पाण्डवोंकी सेनाका बहुत नाश किया, परन्तु दो पहर समयके पश्चात् महाराज युधि-ष्ठिरके हाथसे मारे गये, तब राजा दुर्य्योधन अपने सब बन्धुओंको मरा देख युद्ध छोड़ कर भाग गये, और शत्रुओंके भयसे एक भयानक तालावमें घुसकर रहने लगे, उसी दिन दो पहरके पश्चात् भीमसेनने अपने बन्धुओंके सहित राजा दुर्य्योधनको तलावमेंसे पुकार कर मारडाला। हे राजन्! जब महा धनुषधारी राजा दुर्य्योधन मारे गये, तब तीन महारथोंने क्रोध करके रात्रिको सृञ्जय, सोमक और पाञ्चाल वंशी राजपूतोंका नाश कर दिया, तब युद्धके डेरोंसे चलकर दूसरे दिनके पहले पहरमें दुःख और शोकसे व्याकुल होकर सञ्जय हस्तिना पुरमें आये, सूतपुत्र सञ्जय शोकसे व्याकुल दोनों हाथ उठाये रोते हुए राज भवनमें पहुंचे और हाय राजा दुर्य्योधन हाय राजा कह कर रोने लगे, और कहने लगे। हाय उस महा-त्माके मरनेसे हम सब नष्ट होगये, प्रारब्ध बड़ी बलवान है, और बल निरर्थक है, देखो इन्द्रके समान महा पराक्रमी सब बीरोंको पाण्डवोंने मार डाला।

हे राजन् जनमेजय! जिस समय सञ्जयने नगरमें प्रवेश किया, उनका देखते हो सब नगर निवासी बालक, बूढ़े, जुवा हा महाराज! हा महाराज! कहकर सब स्थान और मार्गोंमें

रोने लगी। जिस समय सञ्जयके मुखसे सुना कि महाराज दुर्य्योधन मर गये, तब सब नगर निवासी घबड़ाकर इधर उधर छटपटाने लगी। उस समय हमने उन नगर निवासियोंको चेतनारहित और पागलके समान देखा, इसी प्रकार सञ्जय भी घबड़ाते और रोते हुए राजभवनमें पहुंचे, वहां जाकर सब जगत्के स्वामी बुद्धिरूपी नेत्रवाले, अर्थात् अन्धे, पापरहित महाराज धृतराष्ट्रके बेटोंकी बहू, गान्धारी, विदुर तथा और मन्त्री, हित चाहनेवाले, बन्धुओंके सहित बैठे और सूतपुत्र कर्णके मरनेके पश्चात् युद्धमें क्या हुआ, यह शोचते हुए देखा और देखकर तथा दुःखी होकर ऐसे वचन कहे। हे पुरुषसिंह भरतकुल श्रेष्ठ! मैं सञ्जय आपके चरणोंमें प्रणाम करता हूं। हे महाराज! महाराज मद्रराज शल्य, सुबलपुत्र शकुनी, पुरुषसिंह महाबली महावीर उलूक सब संसप्तक सब काम्बोज, शक, म्लेच्छ, पर्व्वती, यवन, पूर्व्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तरके सब क्षत्री राजा राजपुत्र और आपकी ओरके सब क्षत्री मारे गये, इसके पश्चात् पाण्डुपुत्र भीमसेनने अपनी प्रतिज्ञाके अनुसार अर्थात् जङ्घा तोड़कर राजा दुर्य्योधनको मारडाला। हे महाराज! आज राजा दुर्य्योधन जङ्घाहीन होकर धूलमें लपटे हुए पृथ्वीमें सोरहे हैं धृष्टद्युम्न, शिखण्डी उत्तमौजा, युधामन्यु, प्रभद्रक, सब पाञ्चाल, पुरुषसिंह राजा चेदरिकावंश समेत मारे गये। आपके सब पुत्र, द्रौपदीके पांचो पुत्र और महा वीर कर्णपुत्र वृषसेन भी मारे गये, सब रथी पदाति घोड़े और हाथियोंपर चढ़नेवाले वीर मारे गये। हे पृथ्वीनाथ! अब पाण्डव और कौरवोंके डेरोंमें बहुत थोड़े मनुष्य रह गये, वे सब परस्पर लड़कर मर गये, इस समय जगत्में केवल स्त्री ही बच गयीं हैं पाण्डवोंकी ओरसे सात और दुर्य्योधनकी ओरसे केवल तीन वीर बचे हैं उधर पांचों भाई पाण्डव, श्रीकृष्ण और सात्यकी और इधर कृपाचार्य्य, कृतवर्म्मा और विजयी अश्वत्थामा बचे हैं। हे महाराज! उन अठारह अक्षौहिणियोंमें केवल ये दश वीर बच रहे हैं और सब मारे गये। हे भरतकुलश्रेष्ठ! यह ऐसा समय आया कि सब जगत् मर गया, इस समय केवल दुर्य्योधनका वैर हेतु मात्र होगया और सब समयके अनुसार ही हुआ।

वैशम्पायन मुनि बोले, हे महाराज! राजा धृतराष्ट्र इस कठोर वचनको सुनते ही मूर्च्छित होकर पृथ्वीमें गिर गये, उनके गिरते ही महा बुद्धिमान् विदुर भी शोकसे व्याकुल होकर गिर गये, इसी प्रकार गान्धारी आदि सब कुरुकुलकी रानी मूर्च्छित हो गिर गईं, उस समय समस्त राज सभा मूर्च्छित होनेके कारण कागज पर लिखे हुए चित्रके समान दीखने लगी, थोड़े समयके पश्चात् महाराज धृतराष्ट्र चैतन्य होकर पुत्रके शोकसे व्याकुल होकर धीरे धीरे विदुरसे बोले, हे भरतकुलश्रेष्ठ! महा बुद्धिमान् इस समय तुम ही हमारी गति हो इस समय मेरे सब पुत्र मारे गये, मैं अनाथ होगया ऐसा कह फिर मूर्च्छित हो भूमिपर गिर गये, महाराजको मूर्च्छित देख सब बान्धव शीतल जल छिड़कने लगे, और पङ्खासे हवा करने लगे, बहुत समयके पश्चात् पुत्र शोकसे व्याकुल राजा धृतराष्ट्र सावधान हुए जैसे घड़ेमें बन्द सांप ऊंचे स्वांस लेता है, ऐसे ही राजा धृतराष्ट्र भी ऊंचे स्वांस लेने लगे। राजाको व्याकुल देखकर सञ्जय भी रोने लगे, इसी प्रकार सब स्त्रियों समेत यशस्विनी गान्धारी भी रोने लगी, फिर बार बार रोते हुए राजा धृतराष्ट्र विदुरसे सब स्त्रियों सहित यशस्विनी गान्धारीको विदा करो, मेरा मन इस समय बहुत घबड़ा रहा है, इसलिये सब सभासद अपने अपने घरको जांय, विदुरने ऐसी आज्ञा सुनकर सब सभासद और स्त्रियोंको विदा कर दिया, उस समय विदुरका शरीर भी दुःखसे कांप

रहा था, मुखसे वचन नहीं निकलता था, राजा को व्याकुल देख सब स्त्री और सभासद चले गये, तब राजाको अत्यन्त व्याकुल जानकर सञ्जय हाथ जोड़ कर और विदुर मीठे मीठे वचनोंसे खांस लेते हुए और रोते हुए राजाको समझाने लगे ।

१ अध्याय समाप्त ।

वैशम्पायन बोले, हे राजन् ! जब सब स्त्री चली गईं तब अम्बिकापुत्र धृतराष्ट्र अत्यन्त दुःखसे व्याकुल होकर रोने लगे, थोड़े समयके पश्चात् ऊंची खांस लेकर हाथ पटकते हुए ऐसे वचन बोले ।

धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय ! हाय बड़े दुःखकी बात है, कि मैं तुम्हारे मुखसे पाण्डवोंको कुशल सहित जीता सुनता हूं मेरा हृदय वज्रसे भी अधिक कठोर है जो पुत्रोंकी मृत्यु सुनकर भी नहीं फटता, हे सञ्जय ! अपने पुत्रोंके खेल और मृत्यु को स्मरण करके मेरा मन व्याकुल हुआ जाताहै, मैंने अन्धा होनेके कारण उनका रूप नहीं देखा था, तोभी पुत्रोंका मुझे बहुत प्रेम था, हे पाप रहित ! मेरे पुत्र बालक अवस्थासे युवा अवस्थाको प्राप्त हुए यह सुन कर मैं बहुत प्रसन्न हुआ था, आज उनका धन और तेज नष्ट हो गया, और वे भी मर गये, यह सुनकर मुझे कहीं शान्ति नहीं होती मैं अपने पुत्रोंके दुःखसे व्याकुल हो गया हूं ।

हे महाबाहो राजेन्द्र ! हे पुत्र दुर्य्योधन ! तुम मेरे पास आओ आओ अब तुम्हारे बिना मेरी कौन रक्षा करेगा ? हे तात ! आज तुम आये हुए राजोंको छोड़कर साधारण राजाके समान पृथ्वीमें मरे हुए क्यों पड़े हो ? हे महाराज ! हे वीर ! तुम सब राजा और सब बन्धुओंकी गति थे, आज मुझ अन्धेको छोड़ कर कहां चले जाते हो ? तुम्हें युद्धमें कोई नहीं जीत सक्ता था, आज पाण्डवोंने युद्धमें प्रीति, आदर और कृपा आदि तुम्हारे गुण कैसे नष्ट कर दिये ? हे वीर ! अब तुम्हारे बिना मुझे प्रतिदिन पिता महाराज और लोकनाथ कौन कहेगा ? हे पुत्र ! तुम प्रेमसे आंसू भर कर और कण्ठमें लेकर मीठे वचनोंसे कहो कि, हे कुरुराज ! मुझे कुछ आज्ञा दीजिये, तुमने पहले हमसे कहा था कि इस समस्त पृथ्वीपर जैसा हमारा अधिकार है ऐसा पाण्डवोंका नहीं, हमारी और भगदत्त, कृपाचार्य्य, शल्य, विन्द, अनुविन्द, जयद्रथ, भूरिश्रवा, सोमदत्त, महाराज वाह्लीक, अश्वत्थामा, कृतवर्म्मा, मगधराज, अतिबली काशिराज, सुबलपुत्र शकुनि, सहस्रों म्लेच्छ, शक, यवन, काम्बोज देशी सुदक्षिण, त्रिगर्त्तदेशी सुशर्म्मा, पितामह भीष्म, भरद्वाजपुत्र द्रोणाचार्य्य श्रुतायु, अश्रुतायु, बलवान शतायु, जलसन्ध, ऋष्य,शृङ्गी, अलायुध राक्षस महाबाहु अलम्बुष और महारथ सुबाहु, इनको आदि लेकर और भी अनेक राजा लोग मेरे लिये प्राण और धनका मोह छोड़कर युद्ध करनेको उपस्थित हैं। मैं इन सबके बीचमें खड़ा होकर अपने भाइयोंके सहित समस्त पाञ्चाल, सृञ्जय और पाण्डवोंसे युद्ध करूंगा। हे राजसिंह ! मैं एकला ही चन्देरीके राजा द्रौपदीके पांचोपुत्र सात्यकी कुन्ति भोज, और भोज घटोत्कच राक्षसको युद्धमें निवारण करूंगा। जिस समय मैं क्रोध करके युद्धमें अकेला जाऊंगा, उसी समय पाण्डवोंके सब वीरोंको जीत लूंगा। फिर इन वीरोंके सहित युद्ध करनेको तो कथा ही क्या है ? ये सब पाण्डवोंके शत्रु हैं। अथवा ये सब राजा पाण्डवोंके सहायकोंसे युद्ध करेंगे, तथा उन्हें मारेंगे। और एकले कर्ण्ण ही मेरी सहायतासे पांचो पाण्डवोंको मार डालेंगे। पाण्डवोंके मरनेके पश्चात् सब राजा और वीर मेरी आज्ञामें चलेंगे। हे राजन् ! जो महा-

जीते हैं, यदि सब मिलकर अर्जुनसे लड़े तो भी उसे जीत नहीं सकेंगे, क्यों कि आप श्रीकृष्ण ही उनके सारथी हैं। इन्द्रके धनुषके समान ऊंची वानरकी ध्वजा देखते ही तुम्हारी सेना भागने लगती है। गाण्डीव धनुष कृष्णका पाञ्चजन्य शंख और भीमसेनका गर्जना सुन हम लोगोंके रोएं खड़े होजाते हैं। अर्जुनका धनुष, बिजलीके समान जलती हुई आगके समान और चक्रके समान घूमता हुआ चारों ओर युद्धमें दीखता है। जैसे बादलमें बिजली दीखती है, ऐसे ही हम लोगोंको सोनेके तारोंसे खिंचा हुआ धनुष चारों ओर दिखाई दे रहा है। इसमें चारों ओर बहुत वेगसे चलनेवाले, चन्द्रमा और काशके फूलके समान सफेद अर्जुनके घोड़े ऐसे दिखाई देते हैं। मानों आकाशको उड़े चले जाते हैं। इसमें चारों ओर ऐसा दिखाई देता है, मानों कृष्ण सोनेके जालवाले, अर्जुन युक्त रथका इस प्रकार उड़ाये जाते हैं। जैसे मेघोंकी वायु। हे राजन्! अस्त्रविद्या जाननेवाले, अर्जुनने तुम्हारी सेनाका इस प्रकार नाश कर दिया जैसे गर्मीमें घोर बढ़ी हुई अग्नि सूखे काठको जलाती है। इसमें चारों ओरसे इन्द्रके समान पराक्रमी अर्जुन ही आता दीखता है, और हम उसे देखकर ऐसे डरते हैं। जैसे चार दांतवाले, हाथीको देखकर साधारण मनुष्य। जैसे दुर्बल कमलको हाथी उखाड़कर फेंक देता है। ऐसे ही तुम्हारी सेनाको मारते और राजोंको डराते अर्जुनहीको हम चारों ओर देख रहे हैं। जैसे सिंहको देख हरिण घबड़ाते हैं, तैसे ही हम अपने वीरोंको मारते और धनुष टङ्कारते अर्जुनको देखकर डरते हैं। सब जगत्के वीरोंसे श्रेष्ठ धनुषधारी कृष्ण और अर्जुनने अभी तक कवच नहीं उतारा है। हे राजन्! आज सत्रह दिन हुए कि, घोर युद्ध होरहा है, और लाखों वीरोंका नाश हो चुका तो भी उन्होंने कवच नहीं खोला, जैसे शरद्कालके मेघ वायु लगनेसे फट जाते हैं, ऐसे ही अर्जुनको देखकर तुम्हारी सेना भागी जाती है। जैसे समुद्रमें पड़ी नावको वायु हिला देता है। ऐसे ही अर्जुनने तुम्हारी सेनाको भगा दिया है। अर्जुनके आगे सूतपुत्र कर्ण सहायकों सहित द्रोणाचार्य्य क्या थे? हम, तुम, कृतवर्म्मा आदियोंके सहित तुम्हारे भाई दुःशासन, अर्जुनके बाणोंके आगे क्या वस्तु हैं? देखो जयद्रथके मरनेके समय ऊपर लिखे सभी वीर तो थे, परन्तु सबको जीतकर और सबके शिरपर होकर सबके देखते देखते उसको मारडाला, अब कौन ऐसा वीर बचा है जो अर्जुनको जीतेगा? महात्मा अर्जुन दिव्य शस्त्रोंको जानते हैं। उनके धनुष टङ्कार सुनते ही धीर जाता रहता है। जैसे चन्द्रमाके बिना रात्रि शून्य होजाती है। ऐसे ही हमारी सेना भी सेनापतिके मरनेसे शून्य होगयी है जैसे तटके वृक्षोंको हाथी तोड़कर नदीमें गिरा देता है। और वह नदी इधर उधरको बहने लगती है। ऐसे ही हमारी सेना व्याकुल होगयी है। हे महाबाहो! जैसे जलती हुई अग्नि वनमें घूमती है। ऐसे ही अर्जुन भी तुम्हारी सेनामें घूम रहे हैं। सात्यकी और भीमसेनका बल ऐसा भारी है, जिससे पर्व्वत फट सकते हैं। समुद्र सूख सकते हैं। हे राजन्! भीमसेनने जो सभामें प्रतिज्ञाकी थी, उसको उन्होंने सत्य कर दिखाया और जो रही है, उसे करेंगे। हे राजन्! जिस समय कर्ण जीते ही थे, तभी भीमसेनने अपनी सेनाकी कैसी रक्षा की थी और अर्जुनने कैसा घोर व्यूह बनाया था। हम लोगोंने महात्मा पाण्डवोंके सङ्ग वैसा ही अधर्म्म किया है। जैसा दुष्टोंको साधुओंके सङ्ग करना चाहिये. उसीका यह फल हो रहा है। हे भरतकुलसिंह पुत्र दुर्य्योधन! तुमने अपने सुखके लिये यत्न करके सब क्षत्रियोंका नाश कराया और अपनी भी रक्षा न कर

कहो, हे पुत्र! तुम अपनी रक्षा करो क्यों कि अपनी रक्षासे सब सुख होते हैं। अपना शरीर ही सब सुखोंका पात्र है। पात्र टूटनेसे उसमें रक्खी सब वस्तु गिर जाती हैं। बृहस्पतिने कहा है कि, जब अपना पक्ष दुर्व्वल हो, या कुछ हानि होगई हो, तब शत्रुसे मेल कर लेना चाहिये और जब अपनी बढ़ती हो तब फिर लड़ना उचित है। हे पृथ्वीनाथ! इस समय हम लोगोंका पक्ष पाण्डवोंसे बहुत ही दुर्व्वल है, इसलिये अब उनसे सन्धि करलेनी चाहिये. जो मूर्ख कल्याणको कल्याण नहीं समझता और दुःखके मार्गमें चलता है। उसका राज्य शीघ्र ही नाश होजाता है। और वह महा-दुःख भोगता है। हे राजन्! यदि आज हमको राजा युधिष्ठिरको दण्डवत करनेसे भी राज्य मिले तौ भी अच्छा है। परन्तु मूर्खतासे मरना अच्छा नहीं है। महाराज धृतराष्ट्र और श्रीकृष्णके कहनेसे युधिष्ठिर तुम्हें अवश्य राज्य दे देंगे, श्रीकृष्ण पाण्डवोंसे जो कुछ कहेंगे वे लोग निःसन्देह वैसा ही करेंगे हमें यह निश्चय है कि, महाराज धृतराष्ट्रके बचनको प्रमाण श्री कृष्णचन्द्र मानेंगे और श्रीकृष्णचन्द्रके बचनको युधिष्ठिर अवश्य मानेंगे। हम पाण्डवोंसे डरकर अपने प्राणोंकी रक्षाके लिये तुमसे कुछ नहीं कहते, वरन सब जगतके कल्याणके ही लिये कहते हैं कि पाण्डवोंसे मेल करना अच्छा है, हे राजन्! हम ये तुमसे ऐसे बचन कहते हैं, जैसे वैद्य रोगीको पथ्य देता है, यदि अब भी न मानोगे तो बहुत पछताओगे, ऐसा कहकर बूढ़े कृपाचार्य्य ऊंची स्वास लेकर रोने लगे और मूर्च्छित होगये।

४ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे पृथ्वीनाथ! तपस्वी गौतमवंशी कृपाचार्य्यके ऐसे बचन सुन राजा दुर्योधन ऊंचा स्वास लेकर चुप रह गये। थोड़े समयके पश्चात् शत्रुनाशन दुर्योधन शरद्वतपुत्र कृपाचार्य्यसे ऐसे बचन बोले, हे भगवन्! मित्रोंको जो कुछ कहना चाहिये आपने वैसा ही हमसे कहा और इसमें भी कुछ सन्देह नहीं कि आपने हमारे लिये प्राणोंका भी मोह छोड़कर सब कुछ किया। सब वीरोंने देखा कि महारथ पाण्डवोंके सङ्ग आपने घोर युद्ध किया, यद्यपि आपने सब बचन हमारे कल्याणहीके कहे तो भी मुझे इस प्रकार बुरे लगे, जैसे मरनेवाले रोगीको औषधि। हे ब्राह्मणश्रेष्ठ! मैं क्या करूं आपके बचन कारण और अर्थोंसे भरे हैं तौभी मुझे अच्छे नहीं लगे। क्यों, यह सन्देह है कि जिस महाधनवाले राजा युधिष्ठिरको अधर्मसे जूएमें जीतकर राज्यसे निकाल दिया था, वे अब हमारा विश्वास काहेको करेंगे? वह युधिष्ठिर अब मेरी बातोंका कैसे विश्वास करेंगे? और यह भी आप जानते हैं कि कृष्ण सदा पाण्डवोंहीका कल्याण चाहते हैं। हे ब्राह्मणश्रेष्ठ! हमने बिना विचारे श्रीकृष्णका निरादर किया था, सो अब वो हमारी बात कैसे मानेंगे? सभामें जो द्रौपदी रोई थी और हमने पाण्डवोंको राज्यसे निकाल दिया था, भला कृष्ण इन बातोंको कब क्षमा करेंगे? हे गुरुजी! हमने जो पहले सुना था, कि कृष्ण और अर्जुनका एक ही प्राण है सो अब प्रत्यक्ष देख लिया। अपने भानजेको मरा सुनकर क्या कृष्ण सुखसे सोते हैं? कदापि नहीं। हम लोगोंने उनके बहुत अपराध किये हैं, इसलिये वे हमारे ऊपर क्षमा न करेंगे, अभिमन्युके मरनेसे अर्जुनको बहुत दुःख हुआ है सो हमारे कल्याणका यत्न क्यों करेंगे? फिर भीमसेन महाक्रोधी है, वे शरीरके टुकड़े होनेपर भी हमसे मेल न करेंगे, आप जानते हैं कि नकुल और सहदेव यम और मृत्युके समान वीर हैं, तथा मेरी

औरसे मनमें भारी बैर रखते हैं इसी लिये, रात दिन कवच पहने ही रहते हैं भला वे कैसे क्षमा करेंगे? हे ब्राह्मणश्रेष्ठ! धृष्टद्युम्न और शिखण्डीके मनमें मेरी ओरसे कितना बैर है सो आप जानते ही हैं, भला वे मुझसे काहेको मेल करेंगे? दुःशासनने रजस्वला और एक वस्त्र धारिणी द्रौपदीको जो सब लोगोंके आगे दुःख दिया था पाण्डवोंको अभी तक द्रौपदीकी वही दशा दिखाई देती है, उन शत्रुनाशन वीरोंको युद्धसे कोई नहीं रोक सक्ता। जिस दिनसे मैंने अपने नाशके लिये द्रौपदीको दुःख दिया है, तभी से वह पृथ्वीमें सोती है, और जबतक बैरका बदला न हो चुकेगा तबतक सोवेगी। द्रौपदी अपने पतियोंको विजयके लिये घोर तपस्या कर रही है और कृष्णकी बहन सुभद्रा दासीके समान उनकी सेवा कर रही है, पाण्डव लोग इन बातोंको कैसे भूलेंगे? अभिमन्युके मरनेके पश्चात अब राजा युधिष्ठिर मुझसे कैसे सन्धि करेंगे? मैंने समुद्र पर्य्यन्त पृथ्वीका राज्य किया है और सब राजोंके शिरपर अपना तेज सूर्य्यके समान प्रकाशित किया है, सो मैं अब पाण्डवोंका दिया हुआ राज्य कैसे भोगगा? सब राज्यका भोग करके अब युधिष्ठिरके पीछे दासके समान कैसे चलूगा? अनेक भारी भारी दान देकर और सब भोगोंको भोगकर अब दरिद्री पाण्डवोंके सङ्ग दरिद्र कैसे भोगूंगा? मैं आपके वचनोंकी निन्दा नहीं करता, क्यों कि आपने हमारे हितके लिये मीठे वचन कहे हैं। परन्तु ऊपर लिखे कारणोंसे सन्धि करना भी स्वीकार नहीं करता। इस समय केवल युद्धहीसे पाण्डवोंका जीतना अच्छा जानता हूं। हे शत्रुनाशन! हम अनेक यज्ञ कर चुके और ब्राह्मणोंको मन भरके दक्षिणा भी दे चुके, अब कायर बनकर युद्ध छोड़ना अच्छा नहीं इस समय हमें अपने पराक्रमसे घोर युद्ध करना ही उचित है, हे भगवन्! हमें अब क्या करना शेष है। देखिये सब भोग भोग चुके, वेद पढ़े, शत्रुओंको जीता, दासोंका पालन करा, दुखियोंको दुःखसे छुड़ाया अपने राज्यकी रक्षाकी और शत्रुओंके राज्य छीन लिये, सो हम अब पाण्डवोंसे दीन वचन नहीं कह सक्ते, मैंने सब भोग भोगे, धन धर्म्म और सब काम प्राप्त किये पितरासे भी अनृण होगया, और क्षत्री धर्म्मका भी पालन होगया, अब बिना युद्ध किये सब यश और कीर्त्ति कहां प्राप्त हो सक्ती है, क्षत्रियोंका घरमें मरना बहुत लज्जाकी बात है, हम घरमें मरनेका शाप नहीं करेंगे, जो क्षत्री जन्मभे अनेक यज्ञ करके बनमें तपस्यासे या युद्धमें लड़ कर शरीर छोड़ता है, उसे धन्य है, और वही श्रेष्ठ कहाता है। जो मूर्ख क्षत्री बुढ़ापेमें कांपता हुआ दुःखसे पीड़ित रोता हुआ, रोती हुई स्त्रियोंके बीचमें शरीर छोड़ता है। उसे धिक्कार है और वह नपुंसक है। जो महात्मा हमारे लिये उत्तम उत्तम कर्म्म करके स्वर्गको चले गये, हम भी अब घोर युद्ध करके उन्होंके पास जाना चाहते हैं। जो महात्मा वीर अपने जन्ममें उत्तम कर्म्म और बड़े यज्ञ करते हैं। तथा युद्धसे कभी नहीं लौटते और युद्धमें मरते हैं। उन्हें अवश्य ही स्वर्गमें वास मिलता है, युद्धमें अनेक अप्सरा खड़ी हुई यही विचार किया करती हैं। कि कौनसा वीर मरे और हम लेजाय। स्वर्गमें वीरोंके सङ्ग अनेक अप्सरा रहती हैं, और उनके पितर अथवा देवता देखकर प्रसन्न होते हैं। जिस मार्गपर देवता और युद्धसे न लौटनेवाले, वीर जाते हैं, हमलोग भी उसीसे स्वर्गमें जाना चाहते हैं। बूढ़े पितामह भीष्म, गुरु द्रोणाचार्य्य, जयद्रथ, कर्ण और दुःशासन आदि अनेक प्रधान क्षत्री और राजा लोग हमारे लिये रुधिरमें भीगे मरे हुए पृथ्वीमें पड़े हैं। ये सब बुद्धिमान बलवान और धीर योद्धा थे, ये सब यश

करनेवाले, शस्त्र विद्याके पण्डित और वीर थे, अब शरीर छोड़कर इन्द्र लोकमें विहार करते हैं, उन सब महात्माओंने कठिनतासे जाने योग्य स्वर्गका मार्ग सीधा कर दिया है। यदि इस समय हमलोग चूक जांयगे, तो फिर वह मार्ग न पावेंगे, जो योद्धा मेरे लिये मर गये हैं। उनका कर्म्म देखकर मुझे ऐसा जान पड़ता है कि मैं उनका बहुत ऋणी हूं। इसीसे अब राज्य करनेकी इच्छा नहीं करता। भाई, मित्र, पितामह और गुरु आदि महात्माओंको मरवा कर यदि मैं अब अपनी रक्षा करूं तो लोग मुझे धिक्कार देंगे। भाई और मित्रोंके बिना अब मैं क्या राज्य करूंगा? और विशेष कर युधिष्ठिरको प्रणाम करके? सो अब हमने दृढ़ सङ्कल्प यही किया है, कि जगत्में अपनी अपकीर्त्ति न कराके युद्धमें मरकर स्वर्गको जाय। राजा दुर्य्योधनके ऐसे बचन सुन सब क्षत्री प्रसन्न होकर धन्य धन्य कहने लगे। और अपनी विजयकी इच्छा करके युद्ध करनेको उपस्थित हुए। तब सब क्षत्री अपने डेरोंमें गये फिर आठ कोसतक घूमकर घोड़े, हाथी, और ऊंटोंको सावधान करके पवित्र वृक्ष रहित हिमाचलकी तरहटीमें जाकर सबने पवित्र सरस्वतीका जल पिया। फिर राजा दुर्य्योधनका उत्साह देखकर सब क्षत्री अपने अपने डेरोंसे एक दूसरेको धीरज देते हुए राजाके पासको चले, हमने उसी समय निश्चय कर लिया कि इन सबका भी काल आगया।

५ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन् धृतराष्ट्र! अनन्तर सब क्षत्री निर्म्मल हिमाचलके शिखरपर चढ़ गये, वहां शल्य, चित्रसेन, महारथ शकुनि, अश्वत्थामा, कृपाचार्य्य, भोज वंशी कृतवर्म्मा, सुषेण, अरिष्टसेन, धृतसेन, जयत्सेन और राजा दुर्य्योधन इकट्ठे हुए और सब लोगोंने वहीं रात्रिको बिताया, हे राजन्! वीर कर्णके मरनेके पश्चात् विजयी पाण्डवोंसे डरे हुए तुम्हारे पुत्रोंको हिमाचलके सिवाय और कहीं सुख न मिला।

हे राजन्! उन सब क्षत्रियोंने राजा दुर्य्योधनके आगे राजा शल्यकी प्रशंसा करके युद्धके लिये ऐसे बचन कहे। हे राजन् दुर्य्योधन! आप ऐसे वीरको सेनापति कीजिये जिससे रक्षित होकर हमलोग क्षत्रियोंको जीत सकें। तब राजा दुर्य्योधन अपने रथमें बैठकर महारथोंमें श्रेष्ठ, सब युद्ध विद्याओंके जाननेवाले, यमराजके समान वीर, सुन्दर शरीर वाले, टेढ़ी पलकें, शङ्खके समान गलेवाले, मीठे बचन बोलनेवाले, फूले कमलके समान नेत्रवाले, सिंहके समान मुखवाले, मेरुके समान भारी, शिवके समान महात्मा, बैलके समान ऊंचे कंधे गम्भीर बाणी और बड़े नेत्रवाले, मन्द चलनेवाले मोटे और लम्बे हाथवाले, ऊंची एंड़ी छाती युक्त बल और वेगमें गरुड़के, तेजमें सूर्य्यके, बुद्धिमें बृहस्पतिके, शान्ति शोभा और सुखमें चन्द्रमाके समान, सोनेके टुकड़ोंके समान दृढ़ सन्धवाले, सुन्दर गोल जङ्घा, कमर और पिण्डलीवाले, सुन्दर चरण और अङ्गुली नखनवाले, जिनको ब्रह्माने गुणोंसे ढूंढ़ ढूंढ़के भरा था, सब लक्षणोंसे भरे, विद्याके समुद्र, शीघ्रता सहित शत्रुओंको जीतनेवाले, आप किसीसे न हारनेवाले, बून, सीखना, धारण करना, अभ्यास करना, स्मरण रखना, छोड़ना शत्रुको मारना, औषध करना, शस्त्रको तेज करना, खींचना, इन दसों अङ्ग और उपदेश, सेनाकी शिक्षा, अपनी रक्षा और लड़ाईको सब सामग्रीको ठीक रखना इन चारों चरणोंके सहित धनुर्वेदको जाननेवाले अङ्गोंके सहित चारों वेद और इतिहासके पण्डित जिन्होंने अनेक तपोंसे शिवको प्रसन्न किया था। जो बिना

योनिसे उत्पन्न हुए द्रोणाचार्य्यके वीर्य्यसे बिना योनिसे उत्पन्न हुई कृपीके गर्भसे उत्पन्न हुए थे गुणोंके समुद्र निन्दा रहित, सब विद्याओंके पार जानेवाले, गुण और रूपसेभरे अश्वत्थामाके पास गये, और यों बोले, हे गुरुपुत्र ! हम आपकी शरण है। आप हमारे सबके स्वामी है। जिसको आज्ञा कीजिये वही हमारा सेनापति होवे परन्तु वह ऐसा होना चाहिये जिसके आश्रयसे हमलोग पाण्डवोंको जीत लें।

अश्वत्थामा बोले, हे महाराज ! शल्य, यश, बल, कीर्त्ति कुल और तेजसे भरे हैं। इसलिये यही हमारे सेनापति होयं। हम और सब राजोंकी अपेक्षा इनके अधिक कृतज्ञ है क्यों कि ये अपने सगे भानजोंको छोड़कर हमारी ओर आये हैं। इनके बड़े हाथ और बड़ी सेना हैं, और ये बलमें भी राजा महासेनके तुल्य हैं। इन महाराजको सेनापति बनाकर हमलोगोंको विजय हो सक्ती है। जैसे स्वामकार्त्तिक देवताकी सेनाकी रक्षा करते हैं। ऐसे ही ये हमारी सेनाकी रक्षा करेंगे।

गुरुपुत्र अश्वत्थामाके ऐसे वचन सुन सब राजा सेनापति शल्यकी जय हो, सेनापति शल्यकी जय हो, पुकारने लगे, और प्रसन्न होकर युद्ध करनेको उद्यत होगए। तब राजा दुर्य्योधन पृथ्वीमें खड़े होकर और हाथ जोड़कर उत्तम रथमें बैठ हुए भीष्म और द्रोणाचार्य्यके समान योद्धा राजा शल्यसे बोले, हे महावीर ! जब पाण्डित लोग मित्र और शत्रुको पहचानते हैं। अब हमारा वही समय आगया है, इसलिये, आप हमारे सेनापति होकर हम लोगोंको अपनी आज्ञामें चलाइये। हे वीर ! आपको युद्धमें खड़ादेख मूर्ख पाण्डव अपने मन्त्री और पाञ्चालोंके सहित भाग जायगे।

मद्रदेशाधिपति सब शास्त्रोंके जाननेवाले, राजा शल्य दुर्य्योधनके वचन सुन सब राजोंके बीचमें ऐसा बोले।

हे कुरुराज ! तुमको कहोगे मैं वही करूंगा क्यों कि मेरे राज्य, धन और प्राण भी तुम्हारे ही लिये हैं।

दुर्य्योधन बोले, हे मामा ! आप महापराक्रमी और राजोंमें श्रेष्ठ हैं, इसलिये हम आपसे यही बरदान मांगते हैं। कि आप सेनापति होकर हमारी इस प्रकार रक्षा कीजिये जैसे स्वामकार्त्तिकने देवतोंकी की थी। हे वीर ! आप अपना अभिषेक कीजिये और जैसे इन्द्र दानवोंको मारते हैं, ऐसे पाण्डवोंको मारिये।

६ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन् धृतराष्ट्र ! राजा दुर्य्योधनके वचन सुन मद्रराज शल्य ऐसा बोले, हे राजा दुर्य्योधन ! हे महाबाहो ! हे अर्थ जाननेवालोंमें श्रेष्ठ ! तुम हमारे वचन सुनो तुम जो कृष्ण और अर्जुनको बड़ा बलवान जानते हो सो दोनोंही हमारे तुल्य नहीं हैं। मैं समस्त देवता, राक्षस और मनुष्योंके सहित जगत् भरके वीरोंसे युद्ध कर सक्ता हूं। तब पाण्डव क्या हैं ? अब हम सब पाण्डव और पाञ्चालोंको युद्धमें जीतेंगे। अब हम निःसन्देह तुम्हारे सेनापति बनकर ऐसा व्यूह बनावेंगे जिसको पाण्डव कभी न तोड़ सकें। हे दुर्य्योधन ! हम तुमसे जो कहते हैं सब सत्य मानो।

राजा शल्यके ये वचन सुन राजा दुर्य्योधनने शास्त्रमें लिखी विधिके अनुसार राजा शल्यका अभिषेक किया। हे भरत ! जब शल्यका अभिषेक होने लगा। तब तुम्हारी सेनामें अनेक बाजे बजने लगे, और सब गर्ज्जने लगे। सब मद्रदेशी वीर बहुत प्रसन्न हुए और सब राजा और राजा शल्यकी प्रशंसा करने लगे कि, हे राजन् ! हे महाबल ! आपकी जय हो आप पाण्डवोंको जीतिये, तुम्हारे बाहुबलसे धृतराष्ट्रके पुत्र बलवान दुर्य्योधन शत्रुओंको मारकर

सब जगत्का राज्य पावें। आप देवता और राक्षसोंको भी युद्धमें जीत सकते हैं, फिर पाञ्चा-लोंकी तो बात ही क्या है? इस प्रकारकी स्तुति सुनकर बलवान शल्य ऐसे प्रसन्न हुए जैसे मूर्ख लोग नहीं हो सकते।

शल्य बोले, आज युद्धमें पाञ्चालोंके सहित पाण्डवोंको या तो मारेहोंगे या हमही मर जांयगे। आज हम कैसे निडर हो युद्ध करते हैं सो सब लोग देखो. आज पांचो पाण्डव कृष्ण, सात्यकि, द्रौपदीके पांचो पुत्र धृष्टद्युम्न, शिखण्डी और सब प्रभद्रक हमारे परा-क्रम और धनुषविद्याको देखें। आज सब पाण्डव सिद्ध और चारणोंके सहित देखें मैं कितनी धनुर्विद्या जानता हूं। आज मेरे शीघ्र बाण चलाने। हाथोंके बल और शस्त्र-विद्याको सब पाण्डवोंके महारथ देखकर यत्न-रहित होजांय, आज पाण्डवोंकी सेनाके प्रधान योद्धा हमारे बाणोंके काटनेका यत्न करें, आज हम पाण्डवोंकी सब सेनाको भगा देंगे। हे दुर्य्योधन! आज तुम्हारे हितके लिये वह काम करूंगा। जो भीष्म, द्रोणाचार्य्य और कर्णने भी नहीं किया था।

सञ्जय बोले, हे राजन्! शल्यका अभिषेक होते ही तुम्हारी सेनाके सब योद्धा कर्णका युद्ध भूल गये, सब लोग बहुत प्रसन्न हुए और मनमें यह निश्चय कर लिया कि, शल्यने सब पाण्ड-वोंको मारडाला। हे राजन्! तुम्हारी सब सेनाने वह रात बड़े आनन्दसे बिताई।

उस सेनाका ऐसा प्रसन्न शब्द सुनकर राजा युधिष्ठिर सब क्षत्रियोंके बीचमें श्रीकृष्णसे यों बोले हे माधव! दुर्य्योधनने सब शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ महापराक्रमी मद्रराज शल्यको सेनापति बनाया आप इस सबको विचारकर जो कुछ करने योग्य काम हो सो कीजिये क्यों कि आपही हमारे आज्ञा देनेवाले और बहुत अच्छे मार्गमें चला-नेवाले हैं।

ऐसे वचन सुन श्रीकृष्ण युधिष्ठिरसे बोले, हे पृथ्वीनाथ! हे भारत! मैं अच्छी प्रकारसे शल्यके बलको जानता हूं, राजा शल्य बलवान तेजस्वी शीघ्र शस्त्र चलानेवाले विचित्र योद्धा और विशेषकर धर्मात्मा हैं मेरी बुद्धिमें भीष्म, द्रोणाचार्य्य और कर्ण जैसे बलवान थे, शल्य उनसे कुछ अधिक हैं। हे पृथ्वीनाथ! मैं इस समय यही विचार रहा हूं कि हमारी ओर ऐसा कौन वीर है जो शल्यसे लड़ सके? परन्तु अभीतक मेरी बुद्धिमें कोई स्थिर नहीं हुआ शिखण्डी अर्जुन, भीमसेन, सात्यकी और धृष्टद्युम्नसे शल्य अधिक बलवान है। हे महा-राज! सिंह और मतवाले हाथीके समान बल-वान शल्य हमारी सेनामें इस प्रकार घूमेंगे जैसे यमराज क्रोध करके जगत्में घूमते हैं। हे पुरुष सिंह! हे शार्दूलके समान वीर! हम अपनी ओर शल्यसे लड़ने योग्य आपके सिवाय और किसीको नहीं पाते। हे कुरुनन्दन! देव लोक और मनुष्य लोकमें आपके सिवाय ऐसा कोई वीर नहीं जो क्रोध भरे शल्यको युद्धमें मार सके यही शल्य प्रतिदिन आपकी सेनाका नाश करता है, इसलिये आप इसको इस प्रकार मारिये जैसे इन्द्रने सम्बरको मारा था। हे पृथ्वीनाथ! एकले शल्यको हो कोई नहीं जीत सकता जिसपर भी धृतराष्ट्रके पुत्रने सेनापति बनाया है। हमें यह निश्चय है कि शल्यके मर-नेहीसे आपकी विजय होगी। हे महाराज! शल्यके मरनेहीसे सब धृतराष्ट्रके पुत्र मर जांयगे। हे महाराज! आप हमारे वचनोंको स्वीकार करके महारथ शल्यसे युद्ध करनेको जाइये और जैसे इन्द्रने नमुचिको मारा था तैसे शल्यको आप मारें। हे महाराज! यह हमारा मामा है ऐसा विचारकर आप उस-पर दया मत कीजिये क्यों कि क्षत्रियोंका ऐसा ही धर्म है आपने भीष्म और द्रोणाचार्य्यरूपी समुद्र और कर्णरूपी तालाबको भी तैरा, अब

शल्यरूपी गायके पैरमें भाइयोंके सहित मत डूबिया आज हम आपकी तपस्या और हाथोंका बल देखेंगे, आप क्षत्रियोंके अनुसार इस महारथ शल्यको मारिये।

राजा युधिष्ठिरसे ऐसा वचन कहकर और उनकी आज्ञा लेकर श्रीकृष्ण सोनेके लिये अपने डेरेमें चले गये; श्री कृष्णके जानेके पश्चात् महाराज युधिष्ठिरने अपने सब भाई, पाञ्चाल और सोमकवंशी क्षत्रियोंको सोनेकी आज्ञा दी फिर आप भी सुखी मतवाले हाथीके समान सोरहे, अनन्तर अपने अपने डेरोंमें आकर सब पाञ्चाल और पाण्डव कर्णके मरनेसे प्रसन्न होकर सुखसे सोये, कर्णके मरनेसे राजा युधिष्ठिरकी सब सेनाको यह निश्चय होगया कि हमारी जीत होगई।

७ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! जब तीन पहर रात बीत चुकी तब राजा दुर्य्योधन उठे और सब सेनाको युद्धके लिये तैयार होनेकी आज्ञा दी, राजाकी आज्ञा सुनते ही सब योद्धा तैयार होने लगे, कोई अपने रथको ठीक करने लगा, कोई हाथी और कोई घोड़ेको कसने लगा, कहीं सहस्रों रथ इकट्ठे होने लगे और कहीं पैदलोंके झुण्ड बंधने लगे। हे राजन्! उस समय सेनाको ठीक करनेके लिये और वीरोंका उत्साह बढ़ानेके लिये तुम्हारी सेनामें अनेक प्रकारके बाजे बजने लगे। हे राजन्! तब सब बची हुई सेना एक दिन अवश्य ही मरना होगा यह विचार युद्धको उपस्थित होगई। तब महापराक्रमी महारथ सेनापति शल्यने सब सेनाका विभाग किया तिसके पीछे कृपाचार्य्य, कृतवर्म्मा, अश्वत्थामा और सुबलपुत्र शकुनि आदि सब प्रधान वीर शल्यको आगे करकेराजा दुर्य्योधनके पास आये और उनसे सत्कार पाकर ऐसा विचार करने लगे, कि हम कौन, किस प्रकार पाण्डवोंसे युद्ध करें, मद्रराज शल्यने यह आज्ञा दी कि जो हमारी ओरका वीर एकला पाण्डवोंसे युद्ध करेगा, या लड़ते हुए पाण्डवोंको छोड़ कर हटेगा, उसे पांच महापाप और सब छोटे छोटे पाप लगेंगे, आज हम सब महारथ एक स्थानपर खड़े होकर एक दूसरेकी रक्षा करते हुए युद्ध करेंगे, ऐसा कहकर आप सबसे आगे, और सब योद्धा उनके पीछे युद्ध करनेको चले।

हे राजन्! उधर पाण्डवोंने भी युद्ध करनेके लिये अपनी सेनाका व्यूह बनाया और युद्ध करनेको चले, हे महाराज! वह रथोंसे भरी सेना इस प्रकार चली जैसे शुक्ल पक्षमें समुद्र बढ़ता है।

धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! हमने भीष्म, द्रोण और कर्णका मरना सुना अब शल्य और दुर्य्योधनके मरनेका बयान करो राजा युधिष्ठिरने शल्यको और भीमसेनने दुर्य्योधनको कैसे मारा।

सञ्जय बोले, हे राजन्! आप स्थिर होकर हमसे मनुष्य हाथी और घोड़ोंके नाश होने और घोर संग्रामका वर्णन सुनो, हे शत्रुनाशन! भीष्म, द्रोणाचार्य्य और कर्णके मरनेके पश्चात् तुम्हारे पुत्रोंको यह ठीक निश्चय होगया कि राजा शल्य सब पाण्डवोंको मार डालेंगे। हे महाराज! इस आशासे तुम्हारे सब पुत्र राजा शल्यको आगे करके और उनकी प्रशंसा करके युद्ध करनेको चले, अपनेको स्वामी सहित माना, तब पाण्डवोंके योद्धा भी सिंहके समान गर्ज्जने लगे। हे महाराज! जब कर्ण मरे थे, तब तुम्हारे सब वीरोंको अपनी जीतकी आशा नहीं थी, परन्तु प्रतापी मद्रराज शल्यने उन सबको सावधान किया और आप भी युद्ध करनेको चले तब प्रतापी शल्यने घोर सर्व्वतोभद्र व्यूह बना, फिर सिंधुदेशके घोड़ोंसे युक्त रथपर बैठकर शत्रु-

वीरोंको नाश करनेवाले, वीर और विचित्र धनुषको घुमाते हुए युद्ध करनेको चले, हे महाराज! राजा शल्यके रथमें बैठते ही उनका सारथी भी बैठ गया तब शत्रुनाशन वीर शल्यकी बहुत शोभा बढ़ी, हे राजन्! आपके पुत्रोंके भय नाशक राजा शल्य, महायोद्धा कर्णके बेटे और मद्रदेशके प्रधान क्षत्रियोंके सहित सावधान होकर व्यूहके मुखमें खड़े होगये। बाईं ओर त्रिगर्त्त देशके क्षत्रियोंके सहित कृतवर्म्मा, कृपाचार्य्य, शक, यवन वीरोंके सहित दहिनी ओर; और अश्वत्थामा काम्बोजदेशी वीरोंके सहित पीछे और राजा दुर्य्योधन प्रधान कुरुवंशी क्षत्रियोंसे रक्षित होकर व्यूहके बीचमें खड़े हुए। सुबलपुत्र जुआरी शकुनि घुड़चढ़ी सेनाको लेकर अलग ही पाण्डवोंसे युद्ध करनेको चले।

शत्रुनाशन पाण्डवोंने भी अपना व्यूह बनाकर सेनाके तीन टुकड़े किये, पहलेमें धृष्टद्युम्न, शिखण्डी और महारथ सात्यकि शल्यकी सेनासे युद्ध करनेको खड़े हुए। दूसरे भागको लेकर और अपने सब प्रधान वीरोंके सहित महाराज युधिष्ठिर शल्यको मारनेके लिये दौड़े। अर्ज्जुन, महाधनुषधारी कृतवर्म्मा, और संशप्तकोंसे युद्ध करनेको गये, गौतम वंशी कृपाचार्य्यसे लड़नेको महारथ पाञ्चालोंके सहित भीमसेन चले नकुल शकुनिको मारनेको और सहदेव उलूकको, मारनेको चले। इन दोनोंके सङ्ग भारी सेना शकुनि और उलूककी सेनासे युद्ध करनेको चली। इसी प्रकार और भी सहस्रों योद्धा अपने अपने समान वीरोंसे भिड़गये। हे राजन्! इस समय दोनों ओरके अनेक शस्त्रधारी वीरोंको घोर क्रोध आगया।

महाराज धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! हमें ऐसा जान पड़ता है। कि भीष्म, द्रोणाचार्य्य, और महारथ कर्णके मरने पर दोनों ओर थोड़े ही वीर बचे होंगे। जिस समय पाण्डवोंने शल्यके युद्धमें चढ़ाई करी तब दोनों ओर कितने वीर शेष रहे?

सञ्जय बोले, हे राजन्! जिस समय हमलोग और पाण्डव युद्ध करनेको खड़े हुए, उस समय जितनी सेना बची थी, उसकी गिन्ती सुनो हमारी ओर ग्यारह सहस्र रथ, दश हजार सातसौ हाथी, दो लाख घुड़चढ़े और तीन करोड़ पैदल थे। और पाण्डवोंकी ओर छः सहस्र रथ, छः सहस्र हाथी, दश हजार घुड़चढ़े और केवल एक करोड़ पैदल थे, ये सब योद्धा पहले कहे भागोंके अनुसार उपस्थित होगये तब शल्यने अपनी सब सेनाके वीरोंको आज्ञादी कि, पाण्डवोंको मारो और अपनी विजय करो, इसी प्रकार विजयी पाण्डवोंने भी यशस्वी और वीर पाञ्चालोंके सहित अपनी सेनाको युद्ध करनेकी आज्ञादी तब ये दोनों सेना लड़नेके लिये भिड़ गईं। हे पृथ्वीनाथ! उस ही समय सूर्य्य भी आकाशमें उदय हुए तब दोनों ओरके वीर एक दूसरेको मारनेके लिये घोर युद्ध करने लगे।

८ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजेन्द्र! तब कुरुवंशका नाश करनेवाला सृञ्जय और कौरवोंका घोर युद्ध होने लगा। पैदल, रथी, हाथी और घोड़ों पर चढ़े वीर एक दूसरेको मारने लगे, जैसे वर्षा कालमें मेघ गर्ज्जते हैं। तैसे ही भागते हुए भारी हाथियोंका शब्द सुनाई देने लगा, कोई रथ वीरोंके समेत हाथियोंके पैरोंसे पिस गये। कहीं हाथियोंसे डरकर पैदल भागने लगे। अनेक हाथियोंकी रक्षा करनेवाले, रथोंपर बैठे और पैदल वीर बाणोंके लगनेसे परलोकको चले गये। हे राजन्! अनेक घोड़ोंपर चढ़े वीर अपनी चिराससे रथोंको घेरकर उनमें बैठे वीरोंको खड्ग और भालोंसे काटने लगे, कहीं अनेक पैदल अपने बाणोंसे रथमें बैठे वीरोंको मारकर परलोकको भेजने लगे, कहीं

एक ही मनुष्य अनेक वीरोंको मारने लगा। कोई महारथ अपने बाणोंसे काटकर सामग्रीके सहित रथ और हाथियोंको पृथ्वीमें गिराने लगा। कहीं अनेक बाण चलाते हुए रथमें बैठे वीरोंको हाथियोंने मारडाला। हे भरत! कहीं हाथी हाथीकी ओर रथी रथीकी ओर दौड़कर बाण और प्रास आदि शस्त्र चलाने लगे। कहीं हाथी, घोड़े और रथोंकी झपेटमें आकर अनेक पदाति मर गये, कहीं चमरोंके युक्त घोड़े इस प्रकार दौड़ने लगे। मानो सब पृथ्वीमें घूम आवेंगे। उनकी शोभा ऐसी दीखती थी, जैसे हिमाचल पर उड़ते हुए हंसोंकी॥ हे पृथ्वीनाथ! घोड़ोंके खुरोंसे खुदी हुई पृथ्वी ऐसी दीखती थी, जैसे नखूनोंके लगनेसे स्त्री, घोड़ोंके खुर रथके पहियोंके शब्द पदातियोंके गर्ज्जने हाथियोंके चिंघाड़नेसे सेनाके बाजे और वीरोंके शङ्ख शब्दसे पृथ्वी ऐसी जान पड़ती थी, मानों आज ही प्रलय होगी, खिंचती हुई धनुषकी टङ्कार, शस्त्र और कवचोंके चमकनेसे कुछ जान नहीं पड़ता था, कहीं हाथीके सूंड़के समान कटे हुए हाथ तड़फ रहे थे। कभी उठते थे, कभी गिर जाते थे, कहीं वीरोंके शिर कटकर इस प्रकार पृथ्वीमें गिरते थे, जैसे ताड़के फल वृक्षसे गिरते हैं। कटे हुए रुधिरमें भीगे सोनेके समान रङ्गवाले खुले नेत्र बलहीन शिरोंसे पृथ्वी ऐसी सुन्दर दीखने लगी जैसे कमलोंसे भरा तलाव।

हे पृथ्वीनाथ! जैसे अनेक इन्द्र धनुषोंसे भरा हुआ आकाश सुन्दर दीखता है, ऐसे ही बाजूबन्द सहित कटे हाथोंसे भरी पृथ्वी दीखने लगी, हे राजन्! इसी प्रकार अनेक राजोंके कटे हुए मध्य शरीरोंसे पृथ्वी भर गई। जैसे अनेक रङ्गोंके फूलोंसे भरा हुआ वन शोभित होता है ऐसे ही कटे हुए शिर और कटे छत्र, चमर आदिसे भरी हुई सेना दिखाई देने लगी; हे राजन्! वहां रुधिरमें भीगे घूमते हुए योधा फूले हुए टेसुओंके समान दिखाई देने लगे और बेडर होके घूमने लगे। अनेक हाथी, तोमर और बाण लगनेसे मेघके समान कटकर पृथ्वीमें गिर गये। जैसे वायु चलनेसे मेघ फट जाते हैं वैसे ही वीरोंके बाण लगनेसे हाथियोंके झुण्ड चारों ओरको भागने लगे। जैसे प्रलयकालमें वज्र लगनेसे पर्व्वत पृथ्वीमें गिरते हैं तैसे ही बाणोंके लगनेसे हाथी पृथ्वीमें गिर गये। चारों ओर चढ़े हुए वीरोंके सहित मरे हुए घोड़ोंके पहाड़ोंके समान ढेर होगये, तब उस युद्ध भूमिमें परलोकको जानेवाली रुधिरकी नदी बहने लगी उसमें रथ, भौंर, पताका, टूटे हुए वृक्ष, हड्डियोंका चूरा बाल, हाथ नाक, धनुष, सोते, तटपर पड़े हुए हाथी पर्व्वत, घोड़े पत्थर, चर्व्वी कीच, छत्रहंस गदा, डोंगी पगड़ी और कवच सिवार, ऊंट, वृक्ष चक्र चक्री चकवाके समान दीखने लगे उस नदीको देखकर वीर प्रसन्न और कायर डरने लगे। उसमें कौरव और सृञ्जयबंशी क्षत्री आनन्द पूर्व्वक घूमने लगे। इस वैतरणीके समान घोर नदीको बलवान वीर वाहनरूपी नावोंपर बैठकर तैरने लगे। हे पृथ्वीनाथ! इस समय यह चतुरङ्गिणी सेनाके नाश करनेवाला मर्य्यादा रहित देवता और राक्षसोंके समान घोर युद्ध होने लगा। कोई अपने बन्धुओंको पुकारने लगा, कोई बन्धुओंका पुकारना सुनकर ही डरके मारे युद्धको न लौटा, उस घोर युद्धमें अर्ज्जुन और भीमसेन तुम्हारी सेनाका नाश करने लगे; जैसे मतवाली स्त्री कामदेवसे व्याकुल होजाती है ऐसे ही तुम्हारी सेना पाण्डवोंके बाणोंसे व्याकुल होगई, इस प्रकार उस सेनाको व्याकुल करके भीमसेन और अर्ज्जुन सिंहके समान गर्ज्जने और शङ्ख बजाने लगे। उनके शब्दको सुनकर धृष्टद्युम्न और शिखण्डी धर्म्मराज युधिष्ठिरकी रक्षा करते हुए शल्यसे युद्ध करनेको चले।

हे महाराज! अनेक वीर एकले शल्यसे युद्ध करने लगे। शल्य भी एकलेही सबसे लड़ते रहे, यह देखकर हमको बड़ा आश्चर्य हुआ इसी प्रकार महापराक्रमी महाशस्त्रधारी वीर नकुल और सहदेव भी तुम्हारी सेनाका नाश करते हुए शीघ्रता सहित घूमने लगे। हे राजन्! तब विजयी पाण्डवोंके बाणोंसे व्याकुल होकर तुम्हारी सेना घोर युद्ध करने लगी तुम्हारी सेना तुम्हारे पुत्रोंके देखते ही देखते सेना चारों ओरको भागने लगी। हे राजन्! कोई वीर हा! हा! कर करता हुआ भागता था और कोई खड़ा रह खड़ा रह पुकारता था। अनेक तुम्हारी ओरके क्षत्री जय चाहने-वाले पाण्डवोंके वीरसे डरकर भागने लगे। हे भरत! वीर अपने प्यारे बेटे, मित्र, दादा, मामा, भानजे और भाइयोंको छोड़कर युद्धसे भागे। हे भरतकुलसिंह! केवल अपने प्राण बचानेके लिये वीर लोग हाथी और घोड़ोंको दौड़ाते हुए युद्धसे भागे।

९ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! अपनी सेनाको भागते देख महाप्रतापी शल्यने अपने सारथीसे कहा कि, घोड़ोंको बहुत तेज हांको यह देखो पाण्डुपुत्र महाराज युधिष्ठिरका सफेद छत्र चमक रहा है तुम हमारे रथको ठीक उन्होंके सामने ले चलो और हमारा बल देखो। युधिष्ठिर हमसे कदापि युद्ध नहीं कर सकते हैं। राजाके ये वचन सुन सारथीने सत्यवादी महाराज युधिष्ठिरकी ओर रथ हांका; शल्यको आते देख पाण्डवोंके सैकड़ों प्रधान योद्धा राजाकी रक्षा और उनसे युद्ध करनेको दौड़े परन्तु एकले शल्यने उन सबको इस प्रकार रोक दिया जैसे समुद्रके तटके पर्व्वत समुद्रकी तरङ्गोंको; जैसे पर्व्वत तक आकर समुद्रकी तरङ्ग आगे नहीं बढ़ सकतीं ऐसे ही पाण्डवोंके वीर शल्यके पास जाकर आगे न चल सके। राजा शल्यको घोर युद्ध करते देख तुम्हारे वीर मृत्युका निश्चय करके युद्धको लौटे। हे राजन्! इस सेनाके लौटनेपर राजा शल्यने फिर व्यूह बनाया और फिर घोर युद्ध होने लगा। उसी समय नकुल चित्रसेनके ऊपर बाण बर्षाने लगे। दोनों महापराक्रमी वीर विचित्र धनुष लेकर घोर युद्धको उपस्थित हुए, जैसे दक्षिण और उत्तरको बर्षनेवाले दो मेघ जल बर्षाते हैं, तैसे ही ये दोनों भी बाण बर्षाने लगे, नकुल, और सुषेणको शस्त्रविद्यामें हमें कुछ भेद नहीं दिखाई देता था। क्यों कि दोनों ही शस्त्रविद्यामें निपुण और महावीर थे। ये दोनों एक दूसरेके मारनेका यत्न करने लगे। तब चित्रसेनने एक विषमें बुझे तेज बाणसे नकुलका धनुष बीचसे काट दिया, और उनके शरीरमें भी अनेक सोनेके पङ्खवाले बाण मारे, फिर तीन तेज बाण माथेमें मारकर चार बाणोंसे घोड़ोंको मारडाला, फिर तीन तीन बाणोंसे ध्वजा और सारथीको काटडाला। हे राजन्! उन माथेमें लगे तीन बाणोंसे नकुल तीन शिखरवाले पर्व्वतके समान शोभित होने लगे। फिर खड्ग और ढाल लेकर इस प्रकार रथसे कूदे जैसे पर्व्वतकी चोटीसे सिंह। उन्हें कूदते देख सुषेण बाण बर्षाने लगे। नकुल भी उन सब बाणोंको ढालसे बचाते हुए और विचित्र युद्ध करते हुए सुषेणके रथतक पहुंच गये और सब वीरोंके देखते देखते रथपर चढ़गये, फिर शीघ्रता सहित चित्रसेनके कुण्डल मुकुट, सुन्दर नाक और बड़ी बड़ी आंखोंके सहित शिर काट लिया। जैसे सन्ध्याको सूर्य्य अस्त होजाते हैं। ऐसे ही नकुलके हाथसे शिर कटकर चित्रसेन रथमें गिर गये। चित्रसेनको मरा देख पाण्डव और पाञ्चाल नकुलकी प्रशंसा करके सिंहके समान गर्जने लगे। तब अपने भाईको मरा देख

महारथ सुषेण और सत्यसेन बाण बर्षाते हुए महारथ नकुलकी ओर इस प्रकार दौड़े, जैसे बनमें एक हाथीके मारनेको दो सिंह दौड़े। जैसे दो मेघ पानी बर्षाते हुए दौड़ते हैं। ऐसे ही कर्णके पुत्र महारथ नकुलकी ओर बाण चलाते दौड़े। उन बाणोंके लगनेसे पाण्डुपुत्र नकुल बहुत प्रसन्न हुए, इतनेहीमें उनका दूसरा रथ आगया, तब रथ पर बैठकर नकुलने धनुष धारण किया, उस समय क्रोध भरे नकुल-का रूप ऐसा दीखता था मानो साक्षात् यमराज प्रलय करनेको आये हैं। तब कर्णके दोनों पुत्र भी अपने तेज बाणोंसे नकुलका रथ काट-नेका यत्न करने लगे। तब नकुलने हंसकर चार बाणोंसे सत्यसेनके चारों घोड़ोंको मारडाला। फिर एक शिलापर घिसे सोनेके पङ्खवाले बाणसे धनुष भी काट दिया। तब सत्यसेनने दूसरे रथ-पर बैठ दूसरा धनुष लिया, तब फिर दोनों भाई सावधान होकर नकुलसे घोर युद्ध करने लगे। प्रतापी नकुल भी अकेले ही दोनोंसे लड़ने लगे, और दो दो बाण दोनोंके शरीरमें मारे, तब सुषेणने क्रोध करके एक बाणसे नकुलका धनुष काट दिया, तब नकुलने क्रोधसे व्याकुल होकर दूसरा धनुष लेकर पांच बाण सुषेणके शरीरमें मारे, एकसे ध्वजा काट दी, फिर दो बाणोंसे चित्रसेनका धनुष और तलहस्थो काट दी, नकु-लकी इस शीघ्रताको देख पाण्डव गर्जने और कौरव घबड़ाने लगे, इतने ही समयमें सत्यसेनने दूसरा धनुष धारण किया। और बाणोंसे नकु-लको छिपा दिया परन्तु नकुलने क्षण मात्रमें सब बाणोंको काटकर दोनोंके शरीरमें दो दो बाण मारे, उन दोनोंने भी अनेक तेज बाण नकुलके शरीरमें मारे, फिर दोनोंने मिलकर नकुलके सारथीको मारडाला। सुषेणने धनुष और रथके आसनको काट दिया। तब प्रताप-वान महारथ नकुलने सोनेके दंडवाली विषमें बुझी चमकती हुई, तेज धारवाली, सांपकी जीभके समान लपकती, विष भरी नाग कन्याके समान भयानक, एक सांग सत्यसेनकी ओर चलाई उससे सत्यसेनकी छाती फट गई और मरकर पृथ्वीमें गिर गये, अपने भाईको मरा देख सुषेणको महाक्रोध हुआ, फिर पांच बाणोंसे नकुलकी ध्वजा और चारसे चारों घोड़ोंको मारडाला। फिर नकुल रथसे नीचे उतरे अपनी विजय देख सुषेण सिंहके समान गर्जने लगा, अपने पिताको रथहीन देख द्रौपदीपुत्र महारथ श्रुतसेन बेगसे दौड़े, तब नकुल भी दौड़कर उनके रथपर चढ़ गये। उस समय रथ पर बैठे नकुलकी ऐसी शोभा बढ़ी, जैसे पर्व्वतके शिखर पर चढ़नेसे सिंहकी; तब दूसरा धनुष लेकर सुषेणसे युद्ध करने लगे। दोनों महा-रथ घोर बाण बर्षाते हुए एक दूसरेको मार-नेका यत्न करने लगे। तब सुषेणने क्रोध करके नकुलके हाथ और छातीमें तीन और श्रुत-सोमके बीस बाण मारे, हे महाराज! तब शत्रु-नाशन महापराक्रमी नकुलने महाक्रोध करके अपने बाणोंसे सुषेणके रथको छिपा दिया। तब एक महातेज अर्द्धचन्द्र बाण धनुषपर चढ़ाकर कर्ण पुत्रकी ओर चलाया, उस बाणसे सुषेणका शिर कटकर पृथ्वीमें गिर पड़ा। नकुलके इस अद्भुत पराक्रमको देखकर हम सब लोग आश्चर्य करने लगे। जैसे नदीके बेगसे टूटकर वृक्ष गिर पड़ता है। ऐसे ही नकुलके बाणोंसे कटकर सुषेण पृथ्वीमें गिरे। हे भरतकलश्रेष्ठ! नकुलके इस पराक्रमको देखकर और कर्णके बेटोंको मरा हुआ, जानकर तुम्हारी सेना चारों ओरको भागने लगी, हे महाराज! अपनी सेनाको भागते देख सेनापति शल्यने स्थिर किया, अपनी सेनाको स्थिर करके प्रतापी शल्य बेडर होकर सिंहके समान गर्जने और धनुषकी टङ्कारने लगे, शल्यको खड़ा देख तुम्हारी सब सेना प्रसन्न होकर युद्धको लौटी, हे महाराज! तुम्हारे सब प्रधान योद्धा महारथ शल्यकी रक्षा करने

लगे। घोर युद्धको उपस्थित हुए इसी प्रकार सात्यकि, भीमसेन, नकुल और सहदेव युधिष्ठिरकी रक्षा करने लगे। घोर युद्धको उपस्थित होगये। पाण्डवोंके सब वीर युधिष्ठिरको घेर कर कूदने और शङ्ख बजाने लगे, इसी प्रकार तुम्हारे सब प्रधान वीर शल्यको घेर कर युद्ध करने लगे। हे महाराज! तब तुम्हारे और पाण्डवोंके वीरोंका घोर युद्ध होने लगा, सबने मृत्युको अवश्य होनेवाली समझ लिया। इस युद्धको देख कायर भागने लगे, जैसे पहले देवता और राक्षसोंका युद्ध हुआ था, ऐसे ही यह भी हुआ। उसी समय संशप्तक सेनाका नाश करके अर्जुन भी उसी सेनाकी ओर लौटे। तभी धृष्टद्युम्न और शिखण्डी आदि पाण्डवोंके प्रधान वीर भी अपने अपने कामोंको समाप्त करके उस ही सेनाकी ओर लौटे और घोर बाण बर्षाने लगे, पाण्डवोंके प्रधान वीरोंको आते देख तुम्हारी सब सेना घबड़ा उठी किसीको दिशाओंका भी ज्ञान न रहा, पाण्डवोंके वीरोंने अपने बाणोंसे तुम्हारी सेनाके व्यूहको तोड़ डाला। और वीरोंको व्याकुल कर दिया। जिस प्रकार उन वीरोंने तुम्हारी सेनाको व्याकुल किया, ऐसे ही इधरके वीरोंने भी पाण्डवोंकी सेनाको व्याकुल कर दिया, तुम्हारे पुत्रने सहस्रों पाण्डवोंके वीरोंको मार डाला, तब दोनों सेना व्याकुल होगई जैसे वर्षा ऋतुमें नदी अपनी मर्य्यादा छोड़ कर बहने लगती हैं वैसे ही ये दोनों सेना टुकड़े टुकड़े होकर युद्ध करने लगीं। ऐसा होनेसे तुम्हारी ओरके शल्य आदि प्रधान वीर और उधर धृष्टद्युम्न आदि सब डरने और घबड़ाने लगे।

१० अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन् धृतराष्ट्र! ऐसा घोर युद्ध होनेसे किसीको व्यूहका ध्यान न रहा इधरसे, हाथी, घोड़े और पदाति इधर उधरको भागने लगे, कहीं पड़े हुए मनुष्य और पैदलोंके कण्ठसे आह आह का शब्द निकलने लगा, कहीं अनेक प्रकारके शस्त्र चलने लगे। कहीं सहस्रों मनुष्य गिरकर मरने लगे। कहीं रथ और हाथी कटने लगे। ऐसा देखकर वीर प्रसन्न होने लगे। और कायर डरके मारे कांपने लगे, एक वीर दूसरेके मारनेकी घात देखने लगा, वीरोंके जीव शरीरोंको छोड़कर यमपुरीको जाने लगे। तब पाण्डवोंके प्रधान वीर तुम्हारी और तुम्हारे वीर पाण्डवोंकी सेनाका नाश करने लगे। इस प्रकार युद्ध होते होते दिनका पहला पहर समाप्त हुआ ।.',

हे राजन्! दूसरे पहरमें महात्मा युधिष्ठिरसे रक्षित होकर पाण्डवोंकी सेना तुम्हारी सेनाको मारने लगी, जैसे बनमें आग लगनेसे हरिण घबड़ाते हैं ऐसे ही चारों ओरसे प्रतापी पाण्डवोंके बाण बर्षनेसे तुम्हारी सेना घबड़ाने लगी। जैसे कीचड़में फंसी हुई गौकी रक्षा करनेको कोई मनुष्य दौड़ता है ऐसे ही अपनी सेनाको बचानेको शल्य पाण्डवोंकी ओर दौड़े। मद्रराज शल्य क्रोध करके घोर धनुष लेकर बाण बर्षाते हुए सब पाण्डवोंकी ओर अकेले ही दौड़े। पाण्डव भी अपने बाणोंसे शल्यको मारने लगे। तब महारथ शल्यने अपने सहस्रों बाणोंसे युधिष्ठिरके देखते देखते इनकी सेनाको व्याकुल करदिया. उस समय अनेक बुरे शकुन होने लगे, पर्व्वत और बनोंके सहित पृथ्वी हिलने लगी, सूर्य्यके मण्डलसे बिना मेघोंके भाले और दण्डके समान बिजली गिरी। अनेक हरिण और भैंसे तुम्हारी सेनाके दहिनी ओरसे बाईं ओरको जाने लगे, उल्लू आदि पक्षी बोलने लगे, उसी समय सब राजोंके देखते देखते पाण्डवोंकी सेनाकी ओर शुक्र, मङ्गल बुध उदय हुए तुम्हारी सेनामें शस्त्रोंसे अग्नि निकलने लगी। चोटे और उल्लू ध्वजा और शिरों

पर बैठने लगे। हे पृथ्वीनाथ! तब दोनों ओरके सेना पतियोंने अपनी अपनी सेनाओंको ठीक करके घोर युद्ध करनेकी आज्ञादी और भयानक युद्ध होने लगा, जैसे इन्द्र अपने बाणोंसे दानवोंको व्याकुल कर देते हैं। ऐसे ही शल्यने भी पाण्डवोंकी सेनाको व्याकुल कर दिया फिर धर्मात्मा युधिष्ठिर, भीमसेन, नकुल, सहदेव, सात्यकि, द्रौपदीके पांचो पुत्र, धृष्टद्युम्न और शिखण्डीके शरीरमें एक एक बाण मार कर इस प्रकार बाण बर्षाये जैसे मेघ जल बर्षाते हैं। उस समय शल्यके बाणोंसे सहस्रों सोमक और प्रभद्रक वंशी चत्री गिरते और गिरे हुए दीखते थे, जैसे टौड़ीदल झुंड भौरोंके और मेघसे जलकी धारा छूटती हैं ऐसे ही शल्यके बाण चारोंओर दिखाई देने लगे, उनसे हाथी, घोड़े और रथोंपर चढ़े बीर कांपने, घूमने और गिरने लगे, जैसे प्रलय कालमें यमराज अपना बल दिखाते हैं। ऐसे शल्य भी घोर कर्म्म करके अपना बल दिखाने लगे, और शत्रुओंको बाणोंसे मारने लगे। जैसे बर्षाऋतुमें मेघ गर्ज्जकर जल बरसाता है ऐसेही मद्रराज शल्य भी गर्ज्जते हुए बाण बर्षाने लगे। उनके बाणोंसे सेनाको व्याकुल होकर पाण्डवोंकी सेना महाराज युधिष्ठिरकी शरण गई। तब शीघ्र बाण चलानेवाले राजा शल्य युधिष्ठिरकी ओर अनेक बाण चलाने लगे। उनको अपनी ओर आते देख राजा युधिष्ठिरको महाक्रोध हुआ और तेज बाणोंसे उनके सब बाण काटकर उनके शरीरमें अनेक बाण मारे। जैसे अङ्कुश लगनेसे हाथीको क्रोध होता है ऐसे ही युधिष्ठिरके बाण लगनेसे शल्यको क्रोध हुआ अनन्तर एक तेज बाण युधिष्ठिरके शरीरमें मारा वह महात्मा युधिष्ठिरके शरीरमे लगकर पृथ्वीमें घुस गया, तब भीमसेनने क्रोध करके शल्यको सात बाण मारे। सहदेवने पांच, नकुलने दस और द्रौपदीके पुत्रोंने अनेक बाण शल्यके ऊपर इस प्रकार बर्षाये जैसे मेघ पर्व्वतपर जल। तब शल्यको चारों ओरसे पाण्डवोंसे घिरा देख कृतवर्म्मा, कृपाचार्य्य, महावीर उलूक, सुबलपुत्र शकुनि, महावीर अश्वत्थामा और तुम्हारे सब पुत्र दौड़कर शल्यकी रक्षा करने लगे। कृतवर्म्माने क्रोध करके भीमसेनके शरीरमें तीन बाण मारकर अनेक बाण बर्षाये, शकुनिने क्रोध करके धृष्टद्युम्न और द्रौपदीके पुत्रोंके ऊपर अनेक बाण चलाये और नकुल सहदेवसे अश्वत्थामा युद्ध करनेको दौड़े। इसी प्रकार महापराक्रमी बीर दुर्य्योधन कृष्ण और अर्ज्जुनसे युद्ध करने और अनेक बाण बर्षाने लगे।

हे पृथ्वीनाथ! इस प्रकार दोनों ओरके दो दो बीर मिलकर घोर और विचित्र युद्ध करने लगे। कृतवर्म्माने अपने बाणोंसे भीमसेनके चारों घोड़ोंको मारडाला, फिर भीमसेन गदा लेकर रथसे कूदे और दण्डधारी यमराजके समान घोरयुद्ध करने लगे। उतने ही समयमें शल्यने सहदेवके घोड़े मारडाले। सहदेव भी खड्ग लेकर रथसे नीचे उतरे और शल्यके बेटेका शिर काटडाला। इसी प्रकार सावधान और यत्न करते हुए धृष्टद्युम्नसे कृपाचार्य्य युद्ध करने लगे। हंसते हुए अश्वत्थामाने भी द्रौपदीके पांचों पुत्रोंकोदस दस बाण मारे। भीमसेन गदा लेकर दण्डधारी यमराजके समान कृतवर्म्माकी ओर दौड़े और घोड़े तथा रथको चूर करडाला तब कृतवर्म्मा उस रथसे उतरकर भागे, शल्य भी अनेक पाञ्चालोंका नाश करके फिर युधिष्ठिरकी ओर बाण चलाने लगे। तब भीमसेनने युधिष्ठिरको व्याकुल देखकर दांतोंसे ओठ चबाये और हम इसी समय शल्यको मारेंगे ऐसा बिचारकर यमराजके दण्डके समान ऊंची, कालरात्रिके समान भयानक, हाथी, घोड़े और मनुष्योंको मारनेवाली, सोनेके तारोंसे मढ़ी, जलती हुई अग्निके समान चमकती, बिष भरी नागिनके

समान चमकती, इन्द्रके वज्रके समान भयावनी, चन्दन और अगर लगी अपनी स्त्रीके समान भीमसेनको प्यारी चर्बी और मेदसे भरी, यमराजकी जिह्वाके समान और सैकड़ों घण्टा लगी, इन्द्रके वज्रके समान सुन्दर, क्रोध भरे सांपके समान भयानक, हस्तिमदसे भरी, शत्रुओंको डरानेवाली, अपनी सेनाको अत्यन्त प्रसन्न करनेवाली, मनुष्य लोकमें प्रसिद्ध, पर्व्वतोंको तोड़नेवाली, गदा लेकर दौड़े। जिस गदाको लेकर बलवान भीमसेनने क्रोध करके कुबेरको युद्ध करनेको पुकारा था, जिसकी सहायतासे द्रौपदीकी प्रसन्नताके लिये कुबेरके स्थानमें अनेक मायाविगुह्यकोंको मारा था उस ही मणिजटित वज्रके समान दृढ़ गदाको लेकर गर्ज्जते हुए गदायुद्धको जाननेवाले भीमसेन शल्यकी ओर वेगसे दौड़े और शल्यके चारों घोड़ोंको मारडाला तब वीर शल्य सिंहके समान गर्ज्जने लगे। और क्रोध करके एक तोमर भीमसेनकी छातीमें मारा, उसके लगनेसे भीमसेनकी छातीमें घाव होगया परन्तु भीमसेन कुछ न घबड़ाये और उस ही तोमरको छातीसे निकालकर शल्यके सारथीके मारा, उसके लगनेसे शल्यका सारथी मरकर गिर गया, भीमसेनका पराक्रम देख आश्चर्य करने लगे। तब धर्म्मात्मा शल्य भी गदा लेकर रथसे कूदे और भीमसेनकी ओर क्रोध करके देखने लगे। भीमसेनका अद्भुत कर्म्म देखकर पाण्डवोंकी सब सेना गर्ज्जने और बाजे बजाने लगी।

११ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! अपने सारथीको मरा देख मद्रराज शल्य लोहेकी गदा लेकर पर्व्वतके समान खड़े होगये उनको जलती हुई अग्नि, फांसी लिये काल, शिखरधारी कैलास पर्व्वत, वज्रधारी इन्द्र और शूलधारी शिवके समान खड़ा देख भीमसेन गदा लेकर इस प्रकार दौड़े, जैसे वनमें सिंह हाथीकी ओर दौड़ता है। तब दोनों ओरसे प्रसन्न करनेके लिये शङ्ख और अनेक बाजे बजने लगे तथा दोनों ओरके वीर गर्ज्जने लगे। दोनोंका गदायुद्ध देखकर दोनों ओरके वीर प्रशंसा करने लगे और युद्ध देखने लगे तब कहने लगे कि भीमसेनकी गदाको यदुकुल श्रेष्ठ बलराम और शल्यके सिवाय कोई नहीं सह सक्ता। इसी प्रकार भीमसेनके सिवाय शल्यकी गदाको भी कोई नहीं सह सक्ता, वे दोनों मतवाले बैलके समान गर्ज्जने और अनेक गतियोंसे लड़ने लगे, गदाको चलाने और चलनेमें भीमसेन और शल्य एकसमान ही दीखते थे, उस समय तपे हुए सोनेसे मढ़ी हुई शल्यकी गदा जलती मशालके समान दीखने लगी। इसी प्रकार अनेक गतियोंसे घूमते हुए महात्मा भीमसेनकी गदा भी बिजलीके समान चमकने लगी, भीमसेन और शल्यकी गदा लगनेसे दोनोंमेंसे अग्निके पतङ्ग गिरने लगे। जैसे दांतोंसे दो मतवारे हाथी, और सींगोंसे दो बैल लड़ते हैं। ऐसे ही भीमसेन और शल्य गदा-युद्ध करने लगे। थोड़े समयमें दोनों रुधिरसे भीग गये और फूले हुए टेसूके समान सुन्दर दीखने लगे। शल्यकी अनेक गदा लगनेपर भी भीमसेन पर्व्वतके समान इधर उधरको न हटे इसी प्रकार भीमसेनकी अनेक गदा लगनेपर शल्य भी न घबड़ाये, भीमसेनकी गदा शल्यके शरीरमें ऐसी लगती थी जैसे पहाड़में हाथीके दांत। जैसे बिजलीके गिरनेका शब्द होता है। ऐसे ही उन दोनोंकी गदाका शब्द चारों ओर सुनायी देने लगा, कभी दोनों पीछेको हटकर और पैतरे बदल कर फिर भिड़ जाते थे, कभी आठ पैर आगे बढ़कर लोहेकी गदासे एक दूसरेको मारता था। इन दोनोंका यह कर्म्म मनुष्योंकी शक्तिसे अधिक था, दोनों एक दूसरेका शिर फोड़नेका विचार कर रहेथे, दोनों

अपनी अपनी घात देखते थे किसी विद्या और बलमें कुछ भेद जान नहीं पड़ता था। कभी गदा उठाकर शिखर सहित पर्व्वतके समान दौड़ते थे, और एक दूसरेको मारते थे, कभी अनेक प्रकारके पैतरे बदलते थे, कभी गोड़ो टेककर पर्व्वतके समान स्थिर होजाते थे, कभी एक दूसरेको बलसे गदा मारता था, एक समय भीमसेनकी गदा शल्यके शिरपर और शल्यकी भीमसेनके शिर जा लगी। तब दोनों एक ही बार मूर्च्छित होकर गिर गये, इन दोनोंको इन्द्रकी पताकाके समान गिरा देख दोनों ओर हाहाकार होने लगा। दोनोंके मर्म्मस्थान गदाओंसे टूट गये, और पीड़ासे व्याकुल होगये, तब कृपाचार्य्यने शल्यको उठाकर अपने रथमें डाल दिया, और युद्धसे हटा दिया इतने ही समयमें भीमसेन चैतन्य हुए और फिर गदा लेकर खड़े होगये और शल्यको पुकारने लगे, तब इस शब्दको शल्य न सुनें, इसलिये तुम्हारी सेनामें अनेक बाजे बजने लगे, और वीर गर्ज्जने लगे। तब फिर घोर युद्ध होने लगा, तब दुर्य्योधन आदि वीर पाण्डवोंसे युद्ध करनेको चले, उस सेनाको आते देख पाण्डव भी सिंहके समान गर्ज्जते हुए दौड़े। तब दुर्य्योधनने चेकितानकी छातीमें एक प्रास मारा, उसके लगनेसे वे रथमें गिर पड़े, तब चेकितानको मरा देख पाण्डवोंकी ओरके सब महारथ तुम्हारी सेनापर बाण बर्षाने लगे। इधरसे भी कृपाचार्य्य, कृतवर्म्मा, सुबलपुत्र शकुनि आदि वीर शल्यको आगे, करके फिर युधिष्ठिरसे युद्ध करने लगे। राजा दुर्य्योधन महापराक्रमी द्रोणाचार्य्यके मारनेवाले, धृष्टद्युम्नसे युद्ध करनेको चले, इसी प्रकार तीन सहस्र वीरोंको सङ्ग लेकर प्राणोंकी आशा छोड़कर अपनी विजयके लिये अश्वत्थामा अर्ज्जुनसे युद्ध करने लगे। तुम्हारे वीर इस प्रकार पाण्डवोंकी सेनामें घुसे जैसे तालाबमें हंस, तब दोनों ओरसे घोर युद्ध होने लगा। हे राजन्! दोनों ओरके वीर अपने अपने शत्रुओंको मारने लगे, और प्रसन्न होकर युद्धकरने लगे।

हे महाराज! पहले एकबार बड़ी धूल उड़ी उससे किसीको कुछ नहीं दीखने लगा। उस समय केवल युधिष्ठिर और दुर्य्योधनका नाम लेनेसे ही शत्रु और मित्रोंका ज्ञान होता था, परन्तु फिर रुधिर बहनेसे धूल पृथ्वीमें जम गई और सब जगह प्रकाश होगया उस समय दोनों ओरसे कोई वीर नहीं भगा, और सबने स्वर्ग या विजयको निश्चय करली थी, साधारण वीरोंने भी स्वामीके ऋण चुकानेका यही समय पाया और प्राणोंका मोह छोड़ घोर युद्ध करने लगे। सब वीर स्वर्ग जानेका निश्चय करके अनेक प्रकारके शस्त्र चलाने और युद्ध करने लगे। चारों ओर वीरोंको काटते हुए वीरोंका यही शब्द सुनाई देने लगा, कि मारो काटो, पकड़ो, और बांधो तब राजा शल्यने धर्म्मराज युधिष्ठिरको और उन्हें मारनेके लिये अनेक तेज बाण चलाये तब महारथ युधिष्ठिरने चौदह तेज बाण शल्यके मर्म्मस्थानमें मारे। तब महापराक्रमी शल्यने उनके सब बाणोंको काटकर शरीरमें अनेक बाण मारे, फिर एक तेज बाण महायशस्वी युधिष्ठिरके शरीरमें मारा, तब राजा युधिष्ठिरको महाक्रोध हुआ। और शल्यके शरीरमें सत्तर बाण मारे, इसी प्रकार द्रुमसेनको ६४ बाणोंसे मारडाला। पहियोंकी रक्षा करनेवाले, द्रुमसेनको मरा देख राजा शल्यने पचीस प्रधान चली चन्द्रेलोंको मारडाला। फिर सात्यकिके शरीरमें पचीस, भीमसेनके पांच नकुलके सौ और सहदेवके सौ तेज बाण मारे, इस प्रकार युद्धमें घूमते हुए शल्यके युधिष्ठिरने अनेक बाण मारे, फिर उनकी ध्वजाको काट दिया, महात्मा युधिष्ठिरके बाणसे कटकर शल्यकी ध्वजा इस प्रकार गिरी जैसे पर्व्वतका शिखर टूटकर गिर पड़े अपनी ध्वजाको कटा और युधिष्ठिरको युद्धके लिये, खड़ा देख

शल्यने क्रोध करके इस प्रकार बाण बर्षाये जैसे वर्षाकालमें मेघ जल बरसाता है। महावीर्य्यवान् शल्यने केवल युधिष्ठिरहीकी ओर बाण नहीं चलाये वरन सात्यकि, भीमसेन, नकुल, और सहदेव आदि सब क्षत्रियोंको व्याकुल कर दिया। शल्यने सबके शरीरमें एक एक बाण मारकर युधिष्ठिरको ओर सहस्रों बाण चलाये, तब धर्मराजको छातीमें बाणोंका जाल सा दिखाई देने लगा। उस समय युधिष्ठिरका रूप ऐसा दीखता था, जैसे मेघोंके बीचमें सूर्य्य, तब शल्यने सब ओरसे युधिष्ठिरके रथको बाणोंसे छिपा दिया उस समय राजा युधिष्ठिर शल्यके बाणोंसे ऐसे व्याकुल होगये, जैसे वृत्रासुरके बाणोंसे इन्द्र।

१२ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! युधिष्ठिरको शल्यके बाणोंसे व्याकुल देख सात्यकि, भीमसेन, नकुल और सहदेव शल्यको अपने बाणोंसे व्याकुल करने लगे। अनेक महारथोंसे एकले शल्यको लड़ते देख सब सिद्ध, चारण और मुनि आश्चर्य करके धन्य धन्य कहने लगे। लगी हुई हृदयकी फांसके समान शल्यको जीता देख भीमसेनने पहले एक फिर सात; सात्यकिने सौ, सहदेवने पांच और नकुलने धर्मराज युधिष्ठिरकी रक्षा करनेके लिये पांच बाण मारकर फिर सात बाण मारे, और सिंहके समान गर्जने लगे। इन सब महारथोंसे पीड़ित होनेपर भी वीर शल्यने अपने घोर धनुषको खींचकर सात्यकिके सत्तर नकुलके सात बाण मारे, फिर एक बाणसे महाधनुषधारी सहदेवका धनुष काटकर उनके शरीरमें इक्कीस बाण मारे, सहदेवने भी क्रोध करके दूसरे धनुषपर रोदा चढ़ाकर शीघ्रतासे तेजस्वी मामाके शरीरमें पांच बाण मारे, फिर विष भरे सांपके समान घोर तीस बाणसे शल्यके सारथीको मारकर गिरा दिया, फिर क्रोध करके शल्यके शरीरमें भोजलती आगके समान अनेक बाण मारे, फिर भीमसेनने सत्तर, सात्यकिने नौ और धर्मराज युधिष्ठिरने चौसठ बाण मारे। उन बाणोंके लगनेसे शल्यके शरीरसे इस प्रकारसे रुधिर बहने लगा, जैसे पर्व्वतसे गेरूके झरने। तब इन सबके शरीरमें फिर पांच पांच बाण मारे, शल्यकी इस शीघ्रताको देख सब वीर आश्चर्य करने लगे। फिर एक बाणसे रोदा सहित धर्मराजका धनुष काट दिया, तब उन्होंने दूसरे धनुषपर रोदा चढ़ाकर घोड़े, सारथी, रथ और ध्वजा सहित शल्यको अपने बाणोंसे छिपा दिया। तब शल्यने क्रोध करके युधिष्ठिरके शरीरमें दश बाण मारे, युधिष्ठिरको व्याकुल देख सात्यकिको महाक्रोध हुआ तब शल्यके शरीरमें पांच बाण मारे, फिर शल्यने उनका धनुष काट डाला। और भीमसेन आदि सब क्षत्रियोंके शरीरमें तीन तीन बाण मारे, तब सात्यकिने क्रोध करके एक सोनेके दण्डवाला भारी तोमर शल्यके शरीरमें मारा, भीमसेनने एक बाण, नकुलने शक्ति सहदेवने गदा और धर्म्मराजने शतघ्नी मारी परन्तु शल्यने उन सब अस्त्रोंको अपने बाणोंसे काट दिया। हे भारत! प्रतापी वीर शल्यने एक बाणसे सात्यकिके तोमर भीमसेनके बाण दोसे नकुलको भयानक शक्ति, एकसे सहदेवकी गदा और दोसे युधिष्ठिरको शतघ्नीको काट दिया। पाण्डवोंके आगे, ऐसा घोर कर्म्म करके शल्य सिंहके समान गर्जने लगे। परन्तु सात्यकि शत्रुकी इस प्रसन्नता और विजयको क्षमा न कर सके और दूसरे धनुषपर रोदा चढ़ाकर दो बाण शल्यके और तीन उनके सारथीके मारे; इस समय सात्यकि मारे क्रोधके कांप रहे थे, तब शल्यने इन पांचों महारथोंके शरीरमें दो दो बाण इस प्रकार मारे, जैसे महावत हाथीको अंकुश मारता है।

हे मधुनायन ! उस समय शल्यकी विद्या और बल देखकर किसी महारथको यह शक्ति न रही कि युद्धमें खड़ा रहे, शल्यका यह पराक्रम देख राजा दुर्य्योधनने यह निश्चय कर लिया, कि पाण्डव पाञ्चाल और सब सृञ्जय मारे गये, हे राजन् ! तब महाबाहु प्रतापी भीमसेन प्राणोंका मोह छोड़कर शल्यसे युद्ध करने लगे, इसी प्रकार नकुल, सहदेव और महारथ सात्यकिभी सब ओरसे शल्यके ऊपर बाण वर्षाने लगे परन्तु इन चारों महारथोंसे घोर युद्ध करने पर भी शल्य कुछ न घबड़ाये, तब राजा युधिष्ठिरने एक बाणसे उनके पहियेकी रक्षा करनेवालेको मारडाला। अपने महारथ चक्ररक्षकको मरा देख शल्यको महाक्रोध हुआ और युधिष्ठिरके प्रधान वीरोंको मारने लगे। अपनी सेनाको व्याकुल देख युधिष्ठिर सोचने लगे, कि कृष्णका वचन किस प्रकार सत्य होगा? हम शल्यको कैसे मार सकेंगे? ये तो हमारी सब सेनाका नाश करे देते हैं, तब युधिष्ठिरने सब हाथी, घोड़े, रथ और पैदल सेनाके सहित प्रधान वीरोंको केवल शल्यसे ही युद्ध करनेकी आज्ञा दी और आप भी लड़ने लगे, तब शल्यके ऊपर इस प्रकार शस्त्र बर्षने लगे। जैसे वर्षाकालमें पानीकी धारें। परन्तु शल्य कुछ न घबड़ाये और जिधरको देखते थे, उधर ही युधिष्ठिरकी सेना इस प्रकार फट जाती थी। जैसे आंधीके चलनेसे मेघ। हमें इस समय सोनेके पङ्खवाले, आकाशमें घूमते हुए शल्यके बाण टीड़ी दलके समान दीखते थे।

हे पृथ्वीनाथ। इस समय युधिष्ठिरकी सेनामें कोई ऐसा स्थान न था जहां शल्यके बाण न दीखते हों। उस समय बाणोंसे अन्धकार होगया था, इसलिये हम और पाण्डव अपनी औरके वीरोंको नहीं पहचान सके। हम केवल इतना ही कह सक्ते हैं कि, बलवान शल्यके बाणोंसे पीड़ित पाण्डवोंकी समुद्र जैसी सेना सब ओर बहती सी दीखती थी, शल्यकी इस पराक्रमको देख सब देवता, सिद्ध और गन्धर्व्व आश्चर्य करने लगे। फिर सब महारथोंको बाणोंसे व्याकुल करके युधिष्ठिरको बाणोंसे छिपा दिया और सिंहके समान गर्जने लगे तब युधिष्ठिर और भीमसेन आदि किसी वीरकी यह शक्ति न हुई कि शल्यसे युद्ध कर सके, परन्तु युद्धमें शल्यको छोड़कर भागनेकी भी इच्छा न हुई।

१३ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन् ! अश्वत्थामा और त्रिगर्त्तदेशी अनेक महारथोंने अर्ज्जुनको और अनेक बाण चलाये तब अर्ज्जुनने अश्वत्थामा आदि सब वीरोंको तीन तीन बाण चलाये और फिर सहस्रों बाण छोड़ अर्ज्जुनके बाणोंसे व्याकुल होनेपर भी अश्वत्थामा आदि वीरोंने इन्हें छोड़ा नहीं और अर्ज्जुनको चारों ओरसे घेरकर बाण बरषाने लगे। इनके छोड़े हुए सोनेके पङ्खवाले बाण अर्ज्जुनके रथके चारों ओर दिखाई देने लगे, कृष्ण और अर्ज्जुनके शरीरमें अनेक घाव होगये, छतुरी, जुआ और धुरी बाणोंसे भर गयी। हे राजन्। जैसे अर्ज्जुनके ऊपर बाण बरषते उस समय देखे ऐसे पहले कभी न देखे न सुने थे।

हे राजन्। इस समय अर्ज्जुनका रथ अनेक मसालयुक्त विमानके समान दीखता था, तब अर्ज्जुनने इस सेनापर इस प्रकार बाण बरषाये जैसे मेघ पर्व्वतपर जल बरषाते हैं। अर्ज्जुनके बाणोंसे व्याकुल होकर उस सेनाको चारों ओर अर्ज्जुन ही अर्ज्जुन दीखने लगे। इस समय ऐसा जान पड़ता था, मानो क्रोधरूपी वायुसे जलता हुआ बाणरूपी ज्वाला युक्त अर्ज्जुनरूपी अग्नि तुम्हारी सेनाको भस्म कर देती है। कहीं बाणोंसे कटकर पहिये, कहीं धुरे तूणीर कहीं

कुण्डे, कहीं जुए, कहीं रथ, कहीं धुरा, कहीं बैल और कहीं रथके चाबुक पड़े दीखते थे, कहीं पखियोंको नाभि, कहीं दास कहीं, घोड़ेकी लगाम कहीं घोड़े, कहीं कुण्डल समाडो सहित कटे सिर, कहीं हाथ, कहीं धुन और कहीं कटे हुए मुकुटोंके ढेर पड़े थे। उस समय जिधरको क्रोधभरे अर्जुनका रथ निकल जाता था, उधर ही कायरोंको डरानेवाली और वीरोंका उत्साह बढ़ानेवाली मांस और रुधिरकी कीच होजाती थी। हे राजन्! वह रणभूमि महाश्मशानके समान होगयी थी। अर्जुन दो सहस्र वीरोंको मारकर ऐसे प्रकाशित हुए जैसे बिना धुएंकी अग्नि और प्रलयके समय घोर रूपधारी शिव। अर्जुनका यह पराक्रम देख अश्वत्थामा अपनी पताका उड़ाते हुए युद्ध करनेको दौड़े तब इन दोनों पुरुषसिंह महा धनुषधारी वीरोंका घोर युद्ध होने लगा। हे भरतकुलसिंह! जैसे वर्षाकालमें मेघ बरसते हैं, तैसे ही ये दोनों वीर बाण बरसाने और युद्ध करने लगे।

हे महाराज! जैसे दो बैल सींगोंसे युद्ध करते हैं ऐसे ही ये दोनों वीर बहुत समयतक लड़ते रहे उस युद्धमें अनेक प्रकारके दिव्य अस्त्र भी चले तब अश्वत्थामाने सोनेके पङ्खवाले नौ बाण अर्जुनके शरीरमें और दश कृष्णके शरीरमें मारे। तब अर्जुनने प्रसन्न होकर गाण्डीव धनुषपर टङ्कार दी अर्जुनने जो इतने समयतक अश्वत्थामाको बाणोंसे व्याकुल नहीं किया इसका कारण केवल गुरुपुत्रका आदर ही था, फिर थोड़े ही समयमें अश्वत्थामाके घोड़े, सारथी और रथको काटडाला। फिर धीरे धीरे अनेक बाण उनके शरीरमें भी मारे, अश्वत्थामा भी बिना घोड़ेके रथमें बैठे रहे और हाथ न सकुचाये फिर एक लोहेके तारोंसे मढ़ा हुआ पर्वतके समान भारी मूसल अर्जुनकी ओर चलाया, तब महाशय अर्जुनने उसे मार्गहीमें बाणोंसे काटकर चूर चूर कर दिया। अपने मूसलको कटा देख युद्धमें पण्डित अश्वत्थामाने क्रोध करके एक पर्वतके शिखरके समान भारी परिघ अर्जुनकी ओर चलाया क्रोध भरे यमराजके दण्डके समान परिघको आते देख अर्जुनने पांच बाणोंसे मार्गहीमें काटडाला। अर्जुनके बाणसे अश्वत्थामाका केवल परिघ ही कटकर नहीं गिरा वरन उसके सङ्ग ही दुर्य्योधन आदि राजाओंके हृदय भी फट गये तब फिर महात्मा बलवान अर्जुनने अश्वत्थामाके शरीरमें तीन बाण मारे अनेक बाण लगनेपर भी महात्मा अश्वत्थामा कुछ नहीं डरे।

अनन्तर उस ही घोड़े हीन रथपर बैठे हुए अश्वत्थामाने पाञ्चालदेशी महारथ सुरथके ऊपर अनेक बाण बरसाये सुरथ भी अपने मेघके समान रथको दौड़ाते हुए अश्वत्थामाके पास आये और अत्यन्त दृढ़ शत्रुओंके नाश करनेवाले धनुषको खींचकर जलती अग्नि और विष भरे सांपके समान बाण छोड़ने लगे। उस पाञ्चालवंशी महारथके बाण लगनेसे अश्वत्थामाको ऐसा क्रोध हुआ जैसे डण्डा लगनेसे सांपको। तब भौंह टेढ़ी करके दांत और ओठ चबाने लगे फिर क्रोधसे सुरथकी ओर देखकर और धनुषके रोदेको साफकर, मलकर यमराजके दण्डके समान एक बाण उनकी छातीमें मारा, वह उनकी छाती और रथको काटकर इस प्रकार पृथ्वीमें घुस गया जैसे इन्द्रका वज्र। जैसे वज्र लगनेसे पर्वतका शिखर गिर जाता है। वैसे ही उस बाणके लगनेसे सुरथ पृथ्वीमें गिर पड़े।

सुरथको मारकर अश्वत्थामाने उस ही रथमें दूसरे घोड़े जुड़वाये और फिर संशप्तकोंसे वेष्टित अर्जुन होसे घोर युद्ध करनेको चले, जिस समय इधर अर्जुन अश्वत्थामा, और संशप्तकोंका घोर युद्ध होरहा था, तब ही मध्याह्न

सूर्य्यने दिनका दूसरा पहर समाप्त किया, अर्जुन एकही हो सब वीरोंसे युद्ध करते रहे यह देखकर हम सबको आश्चर्य होगया, जैसे पहले समयमें इन्द्रने अनेक दानवोंके सङ्ग घोर युद्ध किया था तैसे ही अर्जुन अनेक वीरोंसे लड़ते रहे।

१४ अध्याय समाप्त

सञ्जय बोले, हे राजन्! इसी प्रकार राजा दुर्य्योधन और धृष्टद्युम्न भी बाण और सांगियोंसे घोर युद्ध करने लगे। हे राजन्! उन दोनोंके धनुषसे छूटे हुए बाण ऐसे दिखाई देते थे, मानो वर्षाकालमें दो मेघ बर्ष रहे हैं राजा दुर्य्योधनने द्रोणाचार्य्यके मारनेवाले धृष्टद्युम्नके शरीरमें पांच बाण मारकर फिर सात बाण मारे. महापराक्रमी धृष्टद्युम्नने भी एक ही बार दुर्य्योधनके शरीरमें अनेक बाण मारे, उन बाणोंके लगनेसे राजा दुर्य्योधन बहुत व्याकुल होगये, उनको व्याकुल देख उनके भाई बहुत सेनाके सहित धृष्टद्युम्नसे लड़ने लगे। हे राजन्! अनेक महारथोंसे घिरनेपर भी वीर धृष्टद्युम्न अपनी शस्त्रविद्याको दिखाते हुए युद्धमें घूमने लगे। इसी प्रकार शिखण्डी, कृतवर्म्मा और महाधनुषधारी कृपाचार्य्यसे एकले लड़ते रहे और सब पाञ्चाल शिखण्डीकी रक्षा करते रहे।

हे राजन्! उस समय कृपाचार्य्य और कृतवर्म्मा भी अपने प्राणोंका मोह छोड़कर शिखण्डीके सङ्ग घोर युद्ध करने लगे।

उधर शल्यभी अपने बाण बर्षाते हुए युधिष्ठिर, भीमसेन, नकुल सहदेव और सात्यकिसे युद्ध करने लगे। उस समय यमराजके समान वीर केवल नकुल और सहदेव ही अपने बल और बाणोंसे युद्ध करते रहे। उस समय ऐसा ज्ञान पड़ता था, मानो अब जगतमें पाण्डवोंको रक्षा करनेवाला कोई नहीं है, अपने बड़े भाईको व्याकुल देख महारथ नकुल अपने मामा शल्यको मारनेको वेगसे दौड़े और अपने बाणोंसे शल्यके रथको छिपाकर फिर हंसकर दस बाण उनकी छातीमें मारे, सब लोहेके बने विषमें बुझे सोनेके पङ्खवाले नकुलके धनुष और यन्त्र (कलसे) छूटे बाणोंके लगनेसे शल्य बहुत व्याकुल होगये, फिर सावधान होकर अपने भानजेके शरीरमें अनेक तेज बाण मारे तब राजा युधिष्ठिर, भीमसेन, माद्रीपुत्र, सहदेव और सात्यकी शल्यकी ओर दौड़े उनके रथोंके शब्द और वेगसे पृथ्वी हिलने लगी, तब हमारे सेनापति शत्रुनाशन शल्य एकही हो उन सबसे लड़ने लगे। युधिष्ठिरके तीन, भीमसेनके पांच, सहदेवके तीन और सात्यकिके सौ बाण मारे, फिर अनेक तेज बाणोंसे महारथ नकुलका धनुष काट कर पृथ्वीमें गिरा दिया, तब महारथ नकुलने भी शीघ्रतासे दूसरा धनुष लेकर इतने बाण चलाये कि शल्यका रथ भर गया उसी समय सहदेव और युधिष्ठिरने भी शल्यकी छातीमें दश दश बाण मारे भीमसेनने साठ और सात्यकिने भी दश बाण मारे, तब शल्यने क्रोध करके सात्यकिके शरीरमें नौ बाण मार कर फिर सत्तर बाण चलाये फिर बाण सहित धनुष काट कर चारों घोड़ोंको मार डाला, इस प्रकार सात्यकिको विरथ करके फिर उनके शरीरमें सौ बाण मारे, फिर युधिष्ठिर, भीमसेन, नकुल और सहदेवके भी शरीरमें दश दश बाण मारे, चारों पाण्डव और सात्यकि अकेले शल्यको नहीं जीत सके, यह देखकर हम लोगोंको बहुत आश्चर्य हुआ इतने ही समयमें महावीर सात्यकि दूसरे रथपर बैठ गये और पाण्डवोंको शल्यके बाणोंसे व्याकुल देखकर वेगसे दौड़े उनको आते देख महावीर शल्य भी उनकी ओर इस प्रकार दौड़े जैसे मतवाला हाथी मतवाले हाथीकी ओर। उस समय

और सात्यकि और मद्रराज शल्यका ऐसा घोर युद्ध हुआ जैसे सम्बर दैत्य और देवराज इन्द्रका हुआ था, तब सात्यकिने शल्यसे खड़ा रह; ऐसा कह कर उनके शरीरमें दश बाण मारे, तब महात्मा शल्यने भी सात्यकिको ओर अनेक बाण चलाये तब चारों पाण्डव भी अपने मामाको मारनेके लिये विशेष यत्न करने लगे, उस समय युद्ध भूमिमें रुधिर बहने लगा और लड़ते हुए वीर ऐसे दीखने लगे, जैसे नाचते हुए सिंह। ये सब वीर इस प्रकार युद्ध करने लगे। जैसे मांसके लिये गर्ज्जकर बाज युद्ध करते हैं उस समय पृथ्वी और आकाशमें केवल बाणही बाण दीखते थे; महात्मा वीरोंके बाण आकाशमें ऐसे छागये थे, जैसे वर्षाकालमें मेघ। बाणोंके मारे सब युद्धभूमिमें अन्धेरा होगया था। उस अन्धेरेमें सोनेके पङ्खवाले घूमते हुए बाण चमकते थे, एकले शत्रुनाशन शल्य अनेक वीरोंसे लड़ते रहे यह बहुत अद्भुत कर्म्म हुआ शल्यके हाथोंसे छूटे मोर और कौवेके पङ्खलगे, बाणोंका शब्द सब ओर सुनायी देता था। उस समय युद्धमें घूमते शल्यका रथ ऐसा दिखाई देता था, जैसे दानवोंके नाश करते समय इन्द्रका।

१५ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! फिर तुम्हारे सब वीर शल्यको प्रधान बना सब वेगसे शल्यको ओर चले उस समय पाण्डवोंके गर्ज्जने हाथियोंकी चिंघाड़, घोड़ोंके शब्द और शङ्ख आदिके शब्दसे ऐसा जान पड़ता था। मानों पृथ्वी फट जायगी उन सबको आते देख राजा शल्य और दुर्य्योधन भी युद्ध करनेको चले, ये दोनों इस प्रकार युद्ध करने लगे। जैसे उदयाचल और अस्ताचल मेघोंको जलधाराको सहते हैं। तब महावीर शल्य शत्रुनाशन युधिष्ठिरके ऊपर इस प्रकार बाण वर्षाने लगे। जैसे इन्द्रने शम्बरके ऊपर वर्षाये थे, राजा युधिष्ठिरने भी विचित्र धनुष लेकर शीघ्रता सहित विचित्र और अद्भुत बाण वर्षाने आरम्भ करे; उस समय यह जान पड़ता था कि, युधिष्ठिर भी द्रोणाचार्य्यके एक प्रधान शिष्योंमें हैं, उस समय किसी वीरको यह शक्ति नहीं थी कि, इस बातको जान सके कि युधिष्ठिर कब बाण निकालते हैं, कब चढ़ाते हैं, कब धनुष खींचते हैं। और कब छोड़ते हैं, राजा शल्य भी उस समय इसी प्रकार बाण छोड़ते थे, उस समय ये दोनों राजा ऐसे दिखाई देते थ। मानों दो शार्दूल मांसके लिये लड़रहे हैं। तब भीमसेन भी वीर दुर्य्योधनसे लड़ने लगे। धृष्टद्युम्न, सात्यकि, नकुल और सहदेव आदि वीर शकुनि आदि क्षत्रियोंसे लड़ने लगे।

हे राजन्! तब फिर दोनों ओरके वीर अपनी अपनी विजयके लिये घोर युद्ध करने लगे। यह केवल आपकी उस बुरी सम्मतिहीका फल हुआ, तब दुर्य्योधनने एक बाणसे सोनेके दण्डवाली भीमसेनकी ध्वजा काट दी। वह अनेक घण्टाओंसे युक्त सुन्दर ध्वजा भीमसेनके देखते देखते कटकर पृथ्वीपर गिर गई। हे पृथ्वीनाथ! फिर एक तेज बाणसे हाथीके सूंड़के समान भीमसेनका धनुष काट दिया। तेजस्वी भीमसेनने एक तेज साङ्गी दुर्य्योधनके हृदयमें मारी, तब राजा दुर्य्योधन मूर्च्छा खाकर रथमें गिर पड़े राजाको मूर्च्छित करके फिर भीमसेनने एक तेज बाणसे सारथीको शिर काट लिया सारथीके मरनेसे दुर्य्योधनके घोड़े रथ लेकर इधर उधरको भागने लगे। तब उनकी सेनामें हाहाकार होने लगा। उनकी रक्षा करनेको महारथ अश्वत्थामा, कृतवर्म्मा और कृपाचार्य्य दौड़े अब भीमसेनसे डरकर यह सेना इधर उधरको भागने लगी, तब अर्ज्जुनने अपने धनुषपर टङ्कार दी और बाणोंसे उन्हें मारने लगे। राजा युधिष्ठिर भी निर्भय होनेके समान

सफेद घोड़ोंको शीघ्र दौड़ाते हुए क्रोधमें भरकर राजा शल्यकी ओर दौड़े, उस समय राजा युधिष्ठिरका स्वरूप हमने अद्भुत देखा क्यों कि पहिले वे परम शान्त और इस समय महातेज होगये थे. उस समय राजा युधिष्ठिरके पुत्र लाल होरहे थे, शरीर कांप रहा था तब उन्होंने अपने बाणोंसे सैकड़ों और सहस्रों वीरोंको मारडाला। उस समय महाराज जिस सेनाकी ओर चले जाते थे, उसको बाणोंसे इस प्रकार काटडालते थे, जैसे इन्द्र अपने वज्रसे पर्व्वतोंको जैसे एकला वायु अनेक मेघोंको उड़ा देता है। ऐसे ही एकले बलवान महाराजने रथ, ध्वजा, पताका, सारथी और घोड़ोंके सहित अनेक महारथोंको मारकर पृथ्वीमें गिरा दिया। जैसे भगवान शिव प्रलयकालमें क्रोध करके जगत्‌का नाश करते हैं। ऐसे ही महाराजने घोड़ोंके सहित वीर और सहस्रों योद्धोंको मारडाला। इस प्रकार सेनाको मार कर राजा शल्यकी ओर दौड़े और ऊंचे स्वरसे बोले कि, रे शल्य! खड़ा रह महावीर युधिष्ठिरके इस अद्भुत कर्म्मको देखकर तुम्हारी ओरके सब वीर डरने लगे। परन्तु शल्य वेडर होकर इनसे लड़नेको चले, तब ये दोनों राजा क्रोधमे भरकर अपने अपने शङ्ख बजाने लगे और एक दूसरेको ललकारके डराने और युद्ध करनेको पुकारने लगे। शल्यने युधिष्ठिरके ऊपर और युधिष्ठिरने शल्यकी ओर सहस्रों बाण चलाये, युधिष्ठिरसे युद्ध करनेको चले तुम्हारे सब वीर व्याकुल होनेपर भी पाण्डवोंकी सेनासे युद्ध करने लगे। और बहुत होनेके कारण उन्होंने पाण्डवोंकी सेनाको व्याकुल कर दिया। यद्यपि भीमसेनने बहुत रोका तो भी पाण्डवोंकी सेना खड़ी न हो सकी और कृष्ण तथा अर्जुनके देखते देखते भागने लगी, तब अर्जुनने महाक्रोध करके कृतवर्म्मा और कृपाचार्य्यके ऊपर बाण वर्षाने आरम्भ करे, सहदेव सेना सहित शकुनिसे युद्ध करने लगे। नकुलने शल्यके पास जाकर क्रोधसे उनकी ओर देखा द्रौपदीके पांचों बेटेने अनेक राजोंको युद्धमें रोक दिया, शिखण्डीने अश्वत्थामाको व्याकुल कर दिया, भीमसेन भी गदा लेकर रथसे उतरे और राजा दुर्य्योधनसे लड़ने लगे, और एकले महाराज युधिष्ठिर शल्यसे घोर युद्ध करने लगे, तब दोनों ओरकी सेना भी जहां तहां घोर युद्ध करने लगी, हमने उस समय भी शल्यके कर्म्मको अद्भुत देखा कि एकले ही सेना सहित युधिष्ठिरसे लड़ते रहे, उस समय गोरे रङ्गवाले, युधिष्ठिरके आगे खड़े काले शल्य चन्द्रमाके पास शनैश्चरसे दीखते थे, युधिष्ठिरको बाणोंसे व्याकुल करके फिर शल्य बाण बर्षाते हुए भीमसेनकी ओर दौड़े, शल्यकी इस शस्त्र विद्या और अभ्यासको देख दोनों ओरके वीर धन्य धन्य कहने लगे, युधिष्ठिरको व्याकुल देखकर उनकी ओरके प्रधान वीर शल्यके बाणोंसे बहुत व्याकुल होने परभी युद्ध करनेको दौड़े। अपनी सेनाका व्याकुल देख महाराज युधिष्ठिरको शल्यके ऊपर महाक्रोध आया, तब महारथ युधिष्ठिरने यह निश्चय कर लिया कि या तो शल्यको मारेंगे या मर ही जायंगे। तब उनके ऊपर अनेक बाण बर्षाने लगे, फिर अपने सब भाई, सेनापति मन्त्री और कृष्ण आदि मित्रोंको बुलाकर कहने लगे तुम सब लोगोंने अपने अपने भाग और सम्बन्धके अनुसार भीष्म और द्रोणाचार्य्य आदि सब दुर्य्योधनकी ओरके राजोंको मारा। अब केवल हमारा ही भाग शेष रह गया है। उसमें राजा शल्य ही आगये इसलिये तुम लोगोंके आगे हम इसके मारनेकी प्रतिज्ञा करते हैं अब हम जो कहते हैं, सो तुम लोग सुनो, हमारी यह इच्छा है कि वीर नकुल और सहदेव हमारे रथके पहियोंकी रक्षा करें क्यों कि, इन्हें यह निश्चय है, कि इन दोनोंको युद्धमें

साक्षात् इन्द्र भी नहीं जीत सक्ते इनके बल, पराक्रम, शस्त्र विद्या और क्षत्रिय धर्म्मको सब कोई जानते हैं, इन दोनोंको जगत्के महायोद्धा पराक्रमी महावीर क्षत्री कहते हैं, ये शल्यको जीतनेमें समर्थ हैं हम इन दोनों आदर पाने योग्य वीरोंको अपना सहायक बनाते हैं, और तुम लोगोंको आशीर्वाद देते हैं, कि ईश्वर सबका कल्याण करे अब यातो हम शल्यको मारेंगे, या वे ही हमें मारेंगे, तुम सब अपने अपने स्थानपर जाओ। हे जगत् प्रसिद्ध वीर! और राजों! तुम हमारी एक और सत्य प्रतिज्ञा सुनों; आज हम क्षत्रियोंका धर्म्मधारण करके अपने मामासे भी युद्ध करेंगे, आज हम मृत्यु, या जीतका निश्चय करके मामासे लड़ेंगे, परन्तु उनके पास अस्त्र आदि युद्धकी सामग्री हमसे अधिक है, अब सब वीर हमारी आज्ञासे शस्त्र भरे रथोंमें बैठो और इस प्रकार हमारे सङ्ग रहो अगाड़ीके दोनों पहियोंकी रक्षा करनेको नकुल और सहदेव, पिछले दहने पहियेकी रक्षाको सात्यकि, बांयेको सेनापति धृष्टद्युम्न,पीछेसे हमारे रथकी रक्षाके लिये अर्जुन और रथके आगे सब अस्त्र धारियोंमें श्रेष्ठ भीमसेन रहें। ऐसा होनेसे हम शल्यसे अधिक बलवान् होजायेंगे, राजाकी ऐसी आज्ञा सुन सब प्रसन्न होकर बहुत अच्छा बहुत अच्छा कहने लगे और उसी प्रकार खड़े होगये तब पाण्डवोंकी सेनामें फिर अत्यानन्द होने लगे, विशेषकर पाञ्चाल, सञ्जय, सामक और मत्स्य देशी क्षत्री बहुत प्रसन्न हुए। जिस समय राजा युधिष्ठिरने शल्यके मारनेकी प्रतिज्ञाकी तब पाञ्चाल वीर गर्ज्जने और कूदने लगे, सेनामें शंख, भेर और नगारे बजाने लगे, तब दोनों राजोंके शरीरसे रुधिर बहने लगे। सब शरीरोंमें बाण लग गये उस समय प्राणका मोह छोड़नेवाले दोनों महात्मा राजोंकी ऐसी शोभा बढ़ी जैसे बसन्त ऋतुमें फूले हुए कचनारोंकी।

हे भरत! उस समय दोनों ओरके वीरोंमेंसे किसीको यह निश्चय नहीं था कि कौन जीतेगा? कोई कहेगा कि आज शल्यको मारकर महाराज युधिष्ठिर चक्रवर्त्ती राजा होंगे और कोई विचार रहा था, कि आज राजा शल्य युधिष्ठिरको मारकर दुर्य्योधनको महाराज बनावेंगे, तब युधिष्ठिरके सारथीने अपना रथ शल्यके दहनी ओर लगा दिया तब, राजा शल्यने युधिष्ठिरके शरीरमें सौ बाण मारे और फिर एक तेज बाणसे उनका धनुष काट दिया तब युधिष्ठिरने शीघ्र दूसरा धनुष लेकर शल्यके शरीरमें तीन बाण मारे, फिर एक बाणसे उनका धनुष काटकर चार बाणोंसे चारों घोड़ोंको मारडाला। फिर एक तेज बाणसे सारथी और एकसे रक्षा करनेवालेको मारडाला। फिर एक महातेज बाणसे उनकी ध्वजा भी काट दी, तब दुर्य्योधनकी सेना इधर उधरको भागने लगी तब इनकी रक्षा करनेको अश्वत्थामा दौड़े और उन्हें अपने रथमें बिठाकर युद्धसे भाग गये, तब राजा युधिष्ठिर सिंहके समान गर्ज्जने लगे। थोड़ी ही दूर जानेपर राजा शल्यका दूसरा रथ आगया, तब राजा शल्य अश्वत्थामाके रथसे उतरकर उस मेघके समान शब्दवाले शत्रुओंको कंपानेवाले सब युद्धकी सामग्रीसे भरे उत्तम घोड़े और सारथीसे युक्त रथपर बैठे।

१६ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन् धृतराष्ट्र! तब दूसरा धनुष लेकर शल्यने युधिष्ठिरके शरीरमें बाण मारे, और सिंहके समान गर्ज्जने लगे। तब क्षत्रियश्रेष्ठ महापराक्रमी शल्य वीर युधिष्ठिरके ऊपर इस प्रकार बाण बर्षाने लगे। जैसे मेघ जल बर्षाते हैं। फिर सात्यकिके दश, भीमसेनके तीन और नकुलको तीन बाण मारकर

युधिष्ठिरके अनेक बाण मारे, फिर सब वीरोंको घोड़े, सारथी और रथोंके सहित इस प्रकार व्याकुल कर दिया, जैसे मनुष्य मशालोंसे हाथीको भगाते हैं। महारथ शल्यने अपने बाणोंसे हाथी, रथ और घोड़ोंपर चढ़े वीरोंको वाहनोंके सहित काट डाला, अनेक वीरोंके हाथ काट डाले, और मरे हुए शरीरोंसे पृथ्वी इस प्रकार भर दी जैसे होम करनेवाले, ब्राह्मण वेदीपर कुशा बिछाते हैं। तब पाण्डव, पाञ्चाल और सोमकवंशी प्रधान वीर उनकी ओर इस प्रकार दौड़े जैसे यमराज मृत्युकी ओर दौड़ते हैं। तब महापराक्रमी युधिष्ठिरसे लड़ते हुए शल्यको भीमसेन, वीर नकुल, सहदेव और सात्यकि अपनी अपनी ओर पुकारने लगे। हे महाराज! तब ये सब वीर अपने तेज बाणोंसे वीर शल्यको युद्धमें रोककर बाण चलाने लगे, अनन्तर भीमसेन, नकुल और सहदेव आदि सब वीर युद्ध छोड़कर केवल राजाकी रक्षा करने लगे। तब राजा युधिष्ठिरने शल्यको छातीमें तीन बाण मारे, इनके लगनेसे राजा शल्य व्याकुल होगये तब दुर्य्योधनकी आज्ञासे अनेक वीर राजा शल्यकी रक्षा करनेको दौड़े, तब राजा शल्यने शीघ्र सात बाण युधिष्ठिरके मारे, महाराज युधिष्ठिरने भी उस समय नौ बाण मारे, तब ये दोनों महारथ राजा एक दूसरेकी ओर तेज बाण चलाने लगे। दोनों महापराक्रमी शत्रुनाशन राजा एक दूसरेके मारनेको घात देखने लगे, और तेज बाण चलाने लगे, मद्रदेशके राजा और महावीर महाराज युधिष्ठिरके उस युद्धमें चारों ओर धनुष और तालका ऐसा शब्द सुनाई देता था, जैसे बिजली गिरनेका। उस समय ये दोनों वीर युद्धमें इस प्रकार लड़ रहे थे, जैसे मांसके लिये दो सिंह लड़ते हैं। जैसे एक मतवाला हाथी दूसरे मतवाले हाथीके शरीरमें दांत मारता है, ऐसे ही ये दोनोंभी बाण चला रहे थे। तब महात्मा शल्यने महा-

वीर युधिष्ठिरके हृदयमें एक अग्नि और सूर्य्यके समान तेज बाण मारा; तब कुरुकुलश्रेष्ठ महापराक्रमी महात्मा युधिष्ठिरने भी उनकी छातीमें एक वैसा ही बाण मारा और बहुत प्रसन्न हुए उसके लगनेसे शल्यको मूर्च्छा होगई, तब फिर चैतन्य होकर इन्द्रके समान वीर शल्यने युधिष्ठिरकी ओर बाण चलाये, तब राजा युधिष्ठिरने क्रोध करके सोनेके बने राजा शल्यके कवचको काटकर छः तेज बाण उनकी छातीमें मारे, तब राजा शल्यने क्रोध करके अपना धनुष खींचा और दो बाणोंसे कुरुकुल-श्रेष्ठ युधिष्ठिरका धनुष काट दिया तब महात्मा, युधिष्ठिरने एक दूसरा घोर धनुष लेकर शल्यको अपने बाणोंसे इस प्रकार व्याकुल कर दिया, जैसे इन्द्रने नमुचिको व्याकुल किया था, तब महात्मा शल्यने अपने तेज बाणोंसे भीमसेन और राजा युधिष्ठिरके सोनेके कवचोंको काट-कर दोनोंके हाथोंमें अनेक बाण मारे, और फिर एक तेज बाणसे महाराज युधिष्ठिरका धनुष काट दिया उसी समय कृपाचार्य्यने उनके सारथीको मारकर गिरा दिया, तब राजा शल्यने चार बाणोंसे घोड़े भी मारडाले, और अनेक वीरोंको भी मारडाला। तब राजाको व्याकुल देख महात्मा भीमसेनने एक तेज बाणसे शल्यका धनुष काटकर दो बाण उनकी छातीमें मारे, फिर क्रोध करके एक बाणसे सारथी और चारसे चारों घोड़ोंको मारडाला, तब सब धनुषधारियोंमें श्रेष्ठ अनेक वीरोंसे अकेले युद्ध करते हुए वीर शल्यके शरीरमें भीमसेन और सहदेवने सौ सौ बाण मारे, उनसे राजा शल्यका कवच कटकर पृथ्वीमें गिर पड़ा तब राजा शल्य घबड़ाकर सहस्रों फूलवाली ढाल और खड्ग लेकर रथसे उतरे और युधि-ष्ठिरकी ओर दौड़े, तब नकुलकी अपनी ओर आते देख उनके रथका जुआ काट दिया, राजा शल्यको क्रोध भरे यमराजके समान युधिष्ठि-

रकी ओर दौड़ते देख धृष्टद्युम्न अपने भाइयोंके सहित रथसे उतर कर राजाकी रक्षा करनेको दौड़े। इतनेही समयमें भीमसेनने भी वाणोंसे शल्यके खड्ग और ढालको काट दिया और गर्जने लगे, भीमसेनकी जीत और शल्यकी हार देखकर उधरके वीर प्रसन्न होकर चन्द्रमाके समान सफेद शंख बजाने लगे। उस शब्दसे और वाणोंसे व्याकुल होकर तुम्हारी सेना इधर उधरको भागने लगी। उन भीमसेन आदि वीरोंके वाणोंको सहते हुए टूटा खड्ग लिये राजा शल्य युधिष्ठिरकी ओर इस प्रकार दौड़े जैसे बड़ा सिंह छोटे हरिणपर दौड़ता है। राजा युधिष्ठिर सारथी और घोड़ोंके मरनेसे क्रोधमें भरकर अग्निके समान प्रकाशित होने लगे। शल्यको अपनी ओर आते देख और यदुकुल श्रेष्ठ श्रीकृष्णके वचनको स्मरण करके शल्यके मारनेका विचार करने लगे। फिर महात्मा शल्यके पराक्रमको विचारकर श्रीकृष्णका वचन सत्य करनेके लिये साङ्गी चलानेकी इच्छाकी तब युधिष्ठिरने उस सोनेके दण्डवाली, रत्नोंसे जड़ी, साङ्गीको हाथमें लेकर और क्रोधसे आंख फैला कर शल्यकी ओर देखा।

हे राजन्! पापरहित रानोंके महाराज महावीर राजा युधिष्ठिरके क्रोध भरे नेत्रोंके देखनेसे राजा शल्य भस्म न होगये, यही देखकर हम सब आश्चर्य करने लगे. तब कुरुकुलश्रेष्ठ महात्मा युधिष्ठिरने वह रत्न जड़े सोनेके दण्डवाली साङ्गी बलसे शल्यकी ओर चलाई उस जलती हुई, वेगसे दौड़ती हुई साङ्गिको आते देख सब वीरोंने यह जाना कि यह प्रलय कालकी बिजली आकाशसे चली आती है, वह हाथमें लिये कालरात्रिके समान घोर यमराजकी माताके समान भयानक, ब्रह्माके दण्डके समान घोर और जलती हुई आगके समान सांगि युधिष्ठिरके हाथसे छूटी, युधिष्ठिरने जिसे अनेक वर्षोंसे सुगन्ध, माला और भोजनोंसे पूजा था जो बहुत दिनसे पाण्डवोंके घरमें थी, उसी सांगिको अथर्वा और अङ्गिरा मुनिकी बनाई हुई मायाके समान छोड़ा वह शक्ति प्रलयकालकी जलती हुई अग्निके समान चली। इस शक्तिको विश्वकर्म्माने शिवके लिये बनाया था यह सब शत्रुओंका मांस खानेवाली तथा आकाश, पाताल और भूमिके सब वीरोंको मारनेमें समर्थ थी, यह राक्षसोंके मारनेवाली अत्यन्त यत्नसे विश्वकर्म्माकी बनाई, घोर शक्ति पक्के सोनेके दण्डवाली, घण्टा जड़ी और मणियोंसे भरी थी, इसीको महाराज युधिष्ठिरने घोर मन्त्रोंसे मन्त्रित करके अत्यन्त बल और यत्नसे शल्यके मारनेको छोड़ा धर्म्मराजने उस शक्तिको इस प्रकार चलाया जैसे शिवने अन्धक दानवके मारनेको वाण छोड़ा था। फिर क्रोधसे नाचते हुए धर्म्मराज दोनों हाथ उठाकर शल्यसे बोले, रे पापी! तू मारा गया जैसे घी पड़नेसे आग बढ़ती है ऐसे ही उस युधिष्ठिरके बलसे भरी हुई न निवारण करने योग्य साङ्गको अपनी ओर आते देख राजा शल्यका क्रोध भड़क उठा और उसे बचानेको उन्होंने बहुत यत्न किये परन्तु कुछ न होसका वह शक्ति महाराज शल्यके मर्म्मस्थान और हृदयको काटती हुई उनके यशके सहित इस प्रकार पृथ्वीमें घुस गई। जैसे कोई लकड़ी जलमें घुस जाती है, तब राजा शल्यके आंख, नाक, कान और हृदयसे रुधिर बहने लगा और इस प्रकार पृथ्वीमें गिर पड़े जैसे जड़ कटनेसे बड़ा वृक्ष। पर्व्वत और इन्द्रके हाथीके समान पराक्रमी महात्मा शल्य वज्रसे कटे पर्व्वतके शिखरके समान पृथ्वीपर हाथ फैलाकर गिर गये। राजा शल्य मरते हुए भी दोनों हाथ फैलाकर इन्द्रकी ध्वजाके समान राजा युधिष्ठिरके आगेहीको गिरे, मनुष्योंमें श्रेष्ठ राजा शल्य सब शरीर कटनेपर पृथ्वीमें पड़े ऐसे दीखते थे, मानों अभी बहुत प्रसन्न हैं, जैसे

हम इन मद्रदेशी वीरोंकी अवश्य रक्षा करेंगे और वे हमारी भी रक्षा करेंगे सब लोग इसी बातको स्वीकार करके अपनी सेनाके पास युद्ध करनेको गये।

सञ्जय बोले, शकुनिका वचन सुनकर राजा दुर्य्योधन अपने सङ्ग बहुत सेना लेकर पृथ्वीको कपाते हुए युद्ध करनेको चले, तब तुम्हारी सेनाके वीर सिंहके समान गर्ज्जते हुए मारो, बांधो, पकड़ो, काटो ऐसा शब्द पुकारने लगे, मद्र देशकी सेनाको आते देखकर धृष्टद्युम्नने अपनी सब सेनाका व्यूह बनाया और राजाको बीचमें करके लड़ने चले, तब क्षणभरमें चारों ओर कटे हुए मद्र देशी वीर दिखाई देने लगे। तब हमारी सेनाभी घोर युद्ध करने लगी। पाण्डवोंकी सेनामें प्रसन्नताका शब्द होने लगा सहस्रों कवन्ध नाचने लगे। सूर्य्यके मण्डलसे बिजली गिरी, चारों ओर टूटे हुए रथ और पहिये दीखने लगे। कहीं मरे हुए घोड़े पड़े थे और कहीं खाली पहिये ही लिये घोड़े दौड़े फिरते थे, कहीं कोई टूटे हुए रथके घोड़ोंको सम्हाल रहा था कहीं कोई किसीको मार रहा था कहीं आधे रथको और कहीं पूरे रथको और कहीं केवल बम लिये ही घोड़े दौड़ रहेथे। कहीं महारथ वीर इस प्रकार रथोंसे गिरते थे जैसे पुण्य नाश होनेसे तारे टूटते हैं। मद्रदेशी वीरोंको मार कर हमारी भागी हुई सेनाको पाण्डवोंने देखा तब धनुष टङ्कारते, शङ्ख बजाते और बाण चलाते हुए दौड़े। हमारी सेनाके पास आकर वे सब वीर धनुष टङ्कारते हुए बाण चलाने और गर्ज्जने लगे, वीर शल्य और उनकी सब सेनाको मरा देख पाण्डवोंके बाणोंसे व्याकुल होकर सब सेना फिर भागने लगी, यह सेना महा धनुषधारी पाण्डवोंके बाणोंसे बहुत ही व्याकुल होगई।

१८ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! जब महापराक्रमी वीर शल्य मारे गये, तब तुम्हारे सब पुत्र और बची हुई सेना इधर उधर भागने लगी, जैसे समुद्रमें टूटी नाव पर बैठे बनिये डूबनेके समय घबड़ाते हैं और अपार समुद्रके पार जानेकी इच्छा करते हैं, ऐसे ही वीर शल्यके मरने पर तुम्हारी सेनाकी दशा होगई। जैसे सींङ्ग टूटे बैल, दांत टूटे हाथी और सिंहसे डरे हरिण अनाथ होकर किसीकी शरण जाना चाहते हैं, ऐसे ही तुम्हारी सेना भी व्याकुल होगई, उस समय हमारी ओरके प्रधान वीरोंने दो पहरमें महात्मा युधिष्ठिरसे हार कर सेनाका प्रबन्ध करना विचारा और किसीने युद्ध करनेकी इच्छा न की।

हे राजन्! भीष्म, द्रोणाचार्य्य और कर्णके मरनेसे हमारी ओरके वीरोंको जो भय हुआ था और जैसी उनकी इच्छा हुई थी, शल्यके मरनेसे भी वैसी ही हुई परन्तु इतना विशेष हुआ कि महारथ वीर शल्यके मरनेसे किसीको अपनी जीतकी आशा न रही क्योंकि सब बड़े बड़े वीर मारे गये, और बचे हुए वीर पाण्डवोंके बाणोंसे व्याकुल हो रहे थे, तब कोई हाथी, कोई घोड़े और कोई रथोंपर चढ़कर इधर उधरको भागे। कोई पैरों ही भागने लगे, शल्यके मरनेके पीछे पर्व्वतोंके समान दो सहस्र हाथी वेगसे भाग गये। उस समय हमें चारों ओरसे तुम्हारी सेना भागती ही दीखती थी, उनको उत्साह रहित और भागते देख पाञ्चाल, सोमक, सृञ्जय और पाण्डव सिंहके समान गर्ज्जते बाण बर्षाते और शङ्ख बजाते दौड़े, भयसे व्याकुल और भागती हुई तुम्हारी सेनाको देखकर पाण्डवोंकी ओरके वीर प्रसन्न होने लगे, सब पाञ्चाल पुकार उठे कि अब जगत्‌में सत्यवादी महाराज युधिष्ठिरका कोई शत्रु जीता नहीं रहा। आज राजा दुर्य्योधन राज लक्ष्मीसे हीन होगये। अब राजा धृतराष्ट्र दुर्य्योधनको

मरा हुआ सुन मूर्च्छित होंगे, अब सब जगत् महाराज युधिष्ठिरके बल, धनुष और प्रतापको जानेगा, आज मूर्ख धृतराष्ट्र अपने कपटको स्मरण करे, दुर्बुद्धि धृतराष्ट्र विदुरके वचनोंको स्मरण करें, आजसे राजा धृतराष्ट्र महाराज युधिष्ठिरके सेवक होकर रहें और उन दुःखोंको भागें जो पहले पाण्डवोंने भोगे थे, आज कृष्णकी सम्मतिका फल, अर्जुनके धनुषको टङ्कार, अस्त्र और बाहुबलको राजा धृतराष्ट्र जाने ; आज दुर्य्योधनके मरने पर राक्षसोंको मारनेके समय इन्द्र जो कर्म्म करतेहैं वैसे हो दुःशासनके मारनेमें महात्मा भीमसेनने जो कर्म्म किया था, उसका स्मरण करें। आज शल्यको मरा सुनकर महाराज युधिष्ठिरके बलको जाने, युधिष्ठिरने ऐसा महाघोर कर्म्म किया है, जो देवतोंसे भी नहीं होसक्ता, भीमसेनने इस युद्धमें जो कर्म्म किया सो दूसरमें करनेकी सामर्थ नहीं थी, आज सब वीरोंके सहित वीर शकुनिको मरा सुन राजा धृतराष्ट्र जानेंगे कि नकुल और सहदेव कैसे बलवान हैं ? जहां राजा तो साक्षात् युधिष्ठिर, सेनापति साक्षात् धृष्टद्युम्न, आज्ञा करनेवाले साक्षात् जगत् स्वामी श्रीकृष्ण, आश्रय देनेवाले धर्म्म युद्ध करनेवाले; अर्जुन, भीमसेन, नकुल, सहदेव, सात्यकि, द्रौपदीके पांचों पुत्र और महारथ शिखण्डी हो तहांपर विजय क्यों न हो ?

साक्षात् भीष्म, द्रोणाचार्य्य, कर्ण, मद्रराज शल्य आदि सैकड़ों सहस्रों महाबलवान राजा और वीरोंको महाराज युधिष्ठिरका छोड़ और कौन जीत सक्ता, है ? जो सदा हो श्रीकृष्णको आज्ञामें रहते हैं, उनके सिवाय सत्य और यशका समुद्र कौन हो सक्ता है ? ऐसा कहते हुए ये सब वीर प्रसन्न होकर तुम्हारी सेनाके पीछे दौड़े। वीर अर्जुन रथ सेनाकी ओर महारथ नकुल, सहदेव और सात्यकी शकुनिकी ओर चले, अपनी सेनाको भीमसेनके डरसे भागती देख राजा दुर्य्योधन अपने सारथीसे बोले, जैसे समुद्र तटके पर्व्वतको नहीं नांघ सक्ता ऐसे हो अब मैं धनुष लेकर युद्ध करूंगा। तब भीमसेन जीत नहीं सकेंगे, इसलिये हमारे रथको सेनाके आगे खड़ाकर दो देखो हमारी सेना चारों ओर भागो चलो जाती है। ये देखो कैसी धूल उड़ रही है, ये पाण्डवोंकी ओरके वीर कैसे गरज रहे हैं। जिनसे हमारी सेना डर रही है ; इसलिये तुम व्यूहको जङ्घाको रक्षा करते हुए धीरे धीरे हमारे घोड़ोंको हांको हम जब युद्ध करेंगे, तब पाण्डव रुक जायगे और हमारी सेना फिर युद्ध करनेको लौटेगी।

राजाके वीर और महात्माओंके समान वचन सुन सारथीने सोनेके जालवाले, घोड़ोंको धीरे धीरे हांका राजाको चलते देख अनेक देश और अनेक नगरोंमें रहनेवाले इक्कीस सहस्र पैदल युद्धको लौटे, इन सबकी यह इच्छा थी कि हमारा यश जगत्में फैले; उस समय दोनोंके वीर फिर घोर और भयानक युद्ध करने लगे। तब पराक्रमी भीमसेन और धृष्टद्युम्न चतुरङ्गिणी सेना लेकर उस सेनासे युद्ध करनेको चले और सबको मारने लगे। तुम्हारी ओरके अनेक महा वीर केवल भीमसेन होसे लड़ने लगे। कोई स्वर्ग जानेके लिये कूदते गर्जते और उछलते योद्धा भीमसेनसे युद्ध करने लगे। सब तुम्हारे पुत्र भीमसेनको मारनेके लिये केवल उन्हींसे लड़ने लगे। जैसे मैनाक पर्व्वत चारों ओरसे समुद्रकी तरङ्ग लगनेसे भी अपने स्थानसे नहीं चलता ऐसे हो चारों ओरसे पैदलोंसे घिरने और अनेक शस्त्र लगनेसे भी भीमसेन अपने स्थानसे नहीं हटे तब अनेक वीरोंने महात्मा भीमसेनके जीते पकड़नेका विचार किया तब भीमसेनको महाक्रोध हुआ और गदा लेकर रथसे नीचे उतरे और सोनेके तारोंसे जड़ो गदासे तुम्हारी सेनाका इस प्रकार नाश करने लगे। जैसे यमराज अपने दण्डसे प्रजाका

अन्न राक्षसोंका भाग होगा, जो इस अन्नको खायगा वह राक्षसोंका अन्न खानेवाला होगा, इसलिये बुद्धिमान यत्नके सहित विचार करके इन अन्नोंको छोड़ देय। ऋषियोंने उन उन राक्षसोंको मुक्तिके लिये सरस्वतीसे वरदान मांगा। हे पृथ्वीनाथ! ऋषियोंकी सम्मति जानकर सरस्वतीने अरुणा नामक अपनी दूसरी धाराको बुलाया राक्षसोंने उसमें स्नान किया और उनकी मुक्ति होगई।

अरुणामें स्नान करनेसे ब्रह्महत्या छूट जाती है यह विचार देवराज इन्द्रने इस तीर्थमें स्नान किया और ब्रह्महत्यासे छूट गये।

राजा जनमेजय बोले, हे भगवन्! इन्द्रको ब्रह्महत्या क्यों लगी थी? और इस तीर्थमें स्नान करनेसे वे पाप रहित कैसे होगये?

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे महाराज! जिस प्रकार इन्द्रने विश्वासघात किया था, सो कथा हम तुमसे कहते हैं तुम सुनो।

पहिले समयमें नमुची इन्द्रसे डर कर सूर्य्यकी किरणोंमें घुस गये, तब इन्द्रने उससे मित्रता करली और उसके सङ्ग यह प्रतिज्ञा करी कि, हे राक्षस श्रेष्ठ मित्र! हम सत्यकी शपथ खाकर कहते हैं कि तुम्हें न सूखेसे न गीलेसे न रातको और न दिनको मारेंगे।

इस प्रतिज्ञाको नमुचीने भी स्वीकार कर लिया एक दिन इन्द्रने पानीमें फेना देखा तब उसहीसे कुहर पड़नेके समय उसका शिर काट दिया। वह कटा हुवा नमुचीका शिर बोला! अरे मित्रको मारने वाले पापी! ऐसा कहता हुआ इन्द्रके बहुत पीछे दौड़ा इन्द्र उससे व्याकुल होकर ब्रह्माके पास गये, और यह सब समाचार कह सुनाया।

लोक गुरू ब्रह्माने कहा कि, हे इन्द्र! सरस्वतीका मुनियोंने पवित्र जलवाली बनादिया है इसलिये तुम उसहीके पाप भय नाशक तीर्थ पर जाकर यज्ञ करो और जलका स्पर्श करो यह नदी पहिले समयमें गूढ़ भावसे यहां आई थी, यह स्थान सरस्वती और अरुणाका सङ्गम है, इसलिये बहुत पवित्र तीर्थ है।

हे देवेन्द्र! तुम वहां जाकर यज्ञ करो और अनेक प्रकारके दान दो तब तुम इस घोर ब्रह्महत्यारूपी पापसे छूटोगे

ब्रह्माके ऐसे वचन सुन इन्द्रने उस तीर्थमें जाकर स्नान किया, और विधिके अनुसार यज्ञ किया, तब उस ब्रह्महत्यासे छुट कर और अत्यन्त प्रसन्न होकर स्वर्गको चले गये। वह शिर भी उस तीर्थमें स्नान करके अक्षय लोकोंको चला गया।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, उस तीर्थमें भी उत्तम कर्म करनेवाले, महात्मा बलरामने जलस्पर्श करके बहुत दान दिये फिर वहांसे सोम तीर्थको चले गये।

हे राजेन्द्र! इस ही तीर्थमें चन्द्रमाने राजसूय यज्ञ करी थी; उस यज्ञमें ब्राह्मण श्रेष्ठ बुद्धिमान् महात्मा अत्रि होता थे।

इसी स्थानमें देवता और राक्षसोंका घोर युद्ध हुवा था, इसी युद्धमें कार्त्तिकेयने तारकासुरको मारा था, इसी स्थान पर दैत्योंके नाश करनेवाले, स्वामिकार्त्तिकको देव सेनापति पद मिला था, यहीं स्वामिकार्त्तिक पाकरके वृक्षके नीचे सदा निवास करते हैं।

४३ अध्याय समाप्त।

राजा जनमेजय बोले, हे ब्राह्मण श्रेष्ठ! आपने हमसे सरस्वतीका महात्म कहा अब कार्त्तिकेयके अभिषेककी कथा हमसे कहिये।

हे कहनेवालोंमें श्रेष्ठ! भगवान् कार्त्तिकेयका किस समय किस देशमें किसने किस विधिसे अभिषेक किया था? उन्होंने किस प्रकार दैत्योंका नाश किया था? यह कथा सुननेकी हमारी बहुत इच्छा है, आप कहिये।

श्रीवैशम्पायन मुनि बोले, हे राजन् जनमेजय! तुम जो हमारे वचन सुनकर प्रसन्न हुए हो यह कुरुकुलके अनुसार ही है, हम महात्मा कार्त्तिकेयका अभिषेक और प्रभाव तुमसे वर्णन करते हैं सुनो।

पहिले समयमें शिवका तेज अग्निमें गिरा था, यद्यपि भगवान् अग्नि सब वस्तुको खा सक्ते हैं तौभी उस अक्षय वीर्य्यको भस्म न कर सके, तब अग्निका तेज बहुत बढ़ गया, तौभी अग्नि उस तेजसे भरे गर्भको धारण न कर सके अनन्तर अग्निने ब्रह्माकी आज्ञासे वह सूर्य्यके समान तेजस्वी गर्भ गङ्गाको दे दिया परन्तु गङ्गा भी उस गर्भको धारण न कर सकी और देव पूरित हिमालय पर्व्वतपर फेंक दिया। वह अग्निके समान तेजस्वी गर्भ वहीं बढ़ने लगा, और सब लोक उसके तेजसे पूरित होगये।

एक दिन उस सरकंडेके बनमें पड़े महात्मा भगवानको कृत्तिका नक्षत्रोंने देखा तब उन सबने उन्हें पुत्र बनानेके लिये कहा कि ये हमारे पुत्र हैं।

भगवान् कार्त्तिकेय भी उनका अभिप्राय जान कर अपने छः मुख बनाकर उन छःवोंका दूध पीने लगे।

दिव्य शरीर धारण करनेवाली कृत्तिका देवी उस बालकका प्रभाव देखकर विस्मित होगईं

हे कुरुकुल श्रेष्ठ! जहां पर गङ्गाने उस गर्भको गिराया था, वह पर्व्वत उत्तम सोनेके समान चमकने लगा, बढ़ते बढ़ते वह तेज सब जगतमें फैल गया। इसलिये सब पर्व्वत भी भरगये और उनमेंसे सोना निकलने लगा।

हे राजेन्द्र! गङ्गापुत्र महायोगी महाबलवान कार्त्तिकेय उसी दिनसे कार्त्तिकेय नामसे प्रसिद्ध हुए; तब वे अपने श्रम, तपस्या और वीर्य्यके बलसे चन्द्रमाके समान बढ़ने लगे, और वैसे ही सुन्दर भी होगये उस ही सरकण्डेके बनमें उनकी स्तुती करनेके लिये गन्धर्व्व और मुनि आने लगे। सुन्दर रूपवाली सहस्रों गन्धर्व्व और देवतोंकी कन्या उनके पास आके नाचने गाने और दिव्य बाजे बजाकर उनकी स्तुती करने लगीं। नदियोंमें श्रेष्ठ गङ्गाभी उनके पास आती थी, जबसे पृथ्वीने उन्हें धारण किया था, तबसे पृथ्वीका भी तेज बहुत बढ़ गया था।

अनन्तर वृहस्पतिने उनका जातकर्म्म किया था। चारों वेद चारों उपवेद चरण शस्त्र और संग्रह ग्रन्थोंके सहित धनुर्वेद हाथ जोड़कर उनके पास आये इसी प्रकार सरस्वती भी उनके पास पहुंच गईं।

एकदिन कार्त्तिकेयने पार्व्वती और अनेक प्रकारके रूपधारी भूतोंके सङ्ग बैठे महाबलवान शिवको देखा शिवके सङ्गके भूत अद्भुत थे, कोई विचित्र ध्वजावाला, कोई विचित्र भूषणवाला, किसीका सिंहके ऐसा मुंह, किसीका गधेके समान मुख, किसीका रीछके समान मुंह, किसीका भेड़िये, किसीका मगर, किसीका हाथी, किसीका ऊंट, किसीका उल्लू, किसीका गिद्ध, किसीका कुक्क और किसीका कबूतरके समान मुख था।

किसीका शरीर भेड़िये, किसीका साही, किसीका गोह, किसीका बकरी, किसीका भेड़, और सिकीका गायके समान था।

कोई पर्व्वत और मेघोंके समान शरीरवाले, थे। कोई गदा और कोई चक्र लिये थे, कोई अञ्जनके समान काले और कोई सफेद पर्व्वतके समान सुन्दर थे।

हे पृथ्वीनाथ! शिवके सङ्ग साती मातृगण, साध्य, विश्वेदेव, वसु, पितर, रुद्र, आदित्य, सिद्ध, सर्प, पक्षी, पुत्र सहित भगवान् ब्रह्मा, इन्द्र, नारदादिक, मुनि, देवता, गन्धर्व्व, वृहस्पत्यादि सिद्ध, देव ऋषि, विष्णु, जगत् श्रेष्ठ पितर और यामा, धामा, आदि देवतोंके देवता उस अविनाशी बालकको देखने आये।

अपनी प्यारी स्त्रीसे बहुत दिन भोग करके विदेश चलते समय पति अपने हृदयसे उसे लगाता है ऐसे ही बहुत दिन भूमिको भोग करके पृथ्वीमें पड़े राजा शल्य दीखते थे मानों इसे अपने हृदयसे लगा रहे हैं।

उस समय धर्म्मात्मा युधिष्ठिरकी शक्तिसे धर्म्मयुद्धमें मरे हुए राजा शल्य ऐसे दीखते थे मानो सब शरीरोंसे अपनी प्यारी स्त्रीसे लपटे हुए सोते हैं। जैसे अनेक आहुति पाई यज्ञकी अग्नि शान्त होजाती है ऐसे ही राजा शल्य भी शान्त होगये। ध्वजा और शस्त्र नाश होनेपर भी और शक्तिसे मरनेपर भी राजा शल्यका तेज नाश नहीं हुआ।

तब राजा युधिष्ठिर इन्द्रकी धनुषके समान धनुष लेकर शत्रुओंको इस प्रकार मारने लगे। जैसे गरुड़ सांपको मारे, तब राजा युधिष्ठिरके बाण तुम्हारी सब सेनामें दीखने लगे और योद्धा आंख बन्द करके इधर उधरको भागने लगे। उनके भागनेसे उन्हींकी सेनाका नाश होने लगा, तुम्हारी सेनाके सब वीरोंके शरीरसे रुधिर बहने लगा। राजा शल्यके मरनेके पश्चात् उनका छोटा भाई रथमें बैठकर युधिष्ठिरसे युद्ध करनेको आया और अनेक बाण चलाने लगा। ये भी राजा शल्यहीके समान सब गुणोंसे भरा था उसकी यह इच्छा थी कि अपने मरे हुए भाईका बदला लूं तब धर्म्मराजने शीघ्रता सहित उसके शरीरमें छः बाण मारे फिर एक बाणसे धनुष और एकसे ध्वजा काट दी फिर एक तेजबाणसे कुण्डल और मुकुट सहित उसका शिर काटकर पृथ्वीमें गिरा दिया। रथसे गिरता हुआ उसका शिर ऐसा दीखा जैसे पुण्य नाश होनेपर आकाशसे तारा टूटता है। जब रुधिरमें भीगा शिर रहित उसका शरीर पृथ्वीमें गिरा तब उसके सङ्गके सब वीर इधर उधरको भागने लगे। शल्यके भाईको मरा देख तुम्हारी सेनामें हाहाकार होने लगा और सब लोग प्राणोंकी आशा छोड़ रोते और चिल्लाते इधर उधरको भागने लगे। तुम्हारी सेनाकी यह दशा देख महारथ महाधनुषधारी सात्यकी बाण बर्षाते दौड़े। उनको आते देख कृतवर्म्मा बेडर होकर युद्ध करने लगे। ये दोनों वृष्णिवंशी वीर उत्तम घोड़े युक्त रथोंपर बैठकर मतवाले सिंहोंके समान लड़ने लगे। ये दोनों सूर्य्यके समान तेज वृष्णिकुल सिंह वीर तरुण सूर्य्यकी किरणके समान तेज बाण चलाने लगे। हमने उस समय इनके बाण वेगसे उड़ते हुए पक्षियोंके समान आकाशमें देखे तब कृतबर्म्माने सात्यकीके शरीरमें तीन और घोड़ोंके एक एक बाण मारा फिर एक बाणसे उनका धनुष काट दिया। सात्यकीने उस धनुषको फेंककर शीघ्रतासे एक दूसरा श्रेष्ठ धनुष लिया और कृतबर्म्माकी छातीमें दश बाण मारकर रथ काट दिया और रक्षकोंको भी मारडाला उनको रथ देखकर बलवान कृपाचार्य्य दौड़े और अपने रथमें बिठाकर युद्धसे उन्हें हटा दिया। शल्यके मारे जाने और कृतबर्म्माके भागनेपर दुर्य्योधनकी सब सेना इधर उधरको भाग गई परन्तु उस समय इतनी धूल उठी कि, पाण्डवोंकी कोई भागता हुआ न दीखा, जब यह दुर्य्योधनको सब सेना भाग गई और भूमि शान्त होगई तब सबने युद्धभूमिमें किसीको न देखा दुर्य्योधन अपनी सेनाको भागते देख तथा पाण्डव और धृष्टद्युम्नको रथपर चढ़े अपनी ओर आते देख एकलेही सबसे युद्ध करने लगे, उनको लड़ते देख तुम्हारी ओरके और वीर भी लौटे तब कृतवर्म्मा दूसरे रथमें बैठकर फिर युद्ध करनेको आये, तब महारथ महाराज युधिष्ठिर बहुत शीघ्रतासे इनके चारों घोड़ोंको मारडाला। और कृपाचार्य्यके शरीरमें छः बाण मारे, तब अश्वत्थामाने कृतबर्म्माको अपने रथपर बिठलाकर युधिष्ठिरके आगेसे हटा दिया तब कृपाचार्य्यने युधिष्ठिरके

शरीरमें छः बाण मारकर इनके घोड़ोंको आठ बाणोंसे मारडाला। हे भरत! हे महाराज! इस प्रकार यह अन्त समयमें घोर युद्ध हुआ। इसका कारण केवल आपको और आपके पुत्रोंकी दुष्टता है। युधिष्ठिरकी सांगीसे महाधनुषधारी शल्यको मरा हुआ देख पाण्डवोंके प्रधान वीर सब अपने अपने शङ्ख बजाने और प्रसन्न होकर गर्ज्जने लगे। युधिष्ठिरकी सेनामें चारों ओर बाजे बजने लगे। तब सब वीर उनके पास आकर इस प्रकार प्रशंसा करने लगे, जैसे वृत्रासुरको मारने पर देवतोंने इन्द्रकी स्तुति की थी।

१७ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! मद्रराज शल्यके मरनेपर उनकी सेनाके सात सौ, महारथ अपनी सब सेनाके सहित अपने देशका चले, तब राजा दुर्य्योधन एक मतवाले हाथी पर चढ़के उन्हें लौटानेको चले और जाकर कहने लगे। कि आपलोगोंको युद्ध छोड़कर जाना उचित नहीं राजा दुर्य्योधनकी बहुत प्रार्थना सुनकर मद्रदेशी सेना फिर लौटी और पाण्डवोंकी सेनासे फिर घोर युद्ध करने लगी और उन सब वीरोंने यह निश्चय कर लिया कि, केवल युधिष्ठिरहीको मारेंगे, उनके धनुषोंके शब्दसे पृथ्वी कांपने लगी, और युधिष्ठिरके सङ्ग घोर युद्ध करने लगे, राजा शल्यको मरा और युधिष्ठिरको उनकी सेनासे घिरा सुनकर गाण्डीव धनुषपर टङ्कार देते हुए अर्ज्जुन दौड़े, उनके रथके शब्दसे सब दिशा पूरित होगईं तब भीमसेन, अर्ज्जुन, नकुल, सहदेव, पुरुषसिंह सात्यकि, द्रौपदीके पांचोपुत्र धृष्टद्युम्न और शिखण्डी आदि पाञ्चाल और सोमकवंशी प्रधान वीर युधिष्ठिरको चारों ओरसे घेरकर तुम्हारी सेनासे घोर युद्ध करने लगे। उस समय तुम्हारी सेना इस प्रकार व्याकुल होगई जैसे बड़े मगरके आनेसे समुद्र, उस समय दुर्य्योधनकी ओरके वीर ऐसे कांपते थे, जैसे आंधीके चलनेसे वृक्ष; जैसे कोई छोटी नदी गङ्गाका जल आनेसे इधर उधरको बहने लगता है। ऐसे ही मद्रदेशी सेना घुसनेसे पाण्डवोंकी सेना व्याकुल होगई, थोड़े समयके पश्चात् पाण्डवोंको व्याकुल करके मद्रदेशी महात्मा योद्धा चारों ओरसे पुकारने लगे, कि जिसने हमारे राजाको मारा था, वह राजा युधिष्ठिर इस समय कहां है? उनके वीर चारों भाई, धृष्टद्युम्न, महारथ शिखण्डी, सात्यकि आदि कोई वीर यहां दीखता नहीं। तब युयुधान और महारथ द्रौपदीके पुत्र उनसे युद्ध करनेको दौड़े।

हे राजन्! उन्होंने किसीके रथका पहिया और किसीकी ध्वजा काट डाली। तब तुम्हारी सेना फिर व्याकुल होगई, तब अपनी सेनाको भागते देख राजा दुर्य्योधन शान्तिपूर्व्वक लौटाने लगे। परन्तु उस समय इनकी आज्ञा किसीने न सुनी तब सुबलपुत्र शकुनि बोले, हे दुर्य्योधन! बहुत शोककी बात है। कि हमारे देखते देखते मद्रदेशी योद्धा मरे जाते हैं। हे राजन! तुम्हारे बैठे हुए ऐसा होना उचित नहीं इसलिये हम सब इकट्ठे होकर युद्ध करेंगे, ऐसा हम लोगोंने पहले विचार किया था, तब अब बैठे हुए क्यों देखते हो?

दुर्य्योधन बोले, हमने पहले इस भागती हुई सेनाको बहुत लौटाया परन्तु किसीने हमारी बात नहीं सुनी इसीसे सब सेनाका नाश होरहा है।

शकुनि बोले, युद्धमें यह नियम है, कि क्रोध भरे, वीर राजाको आज्ञाको नहीं सुनते हैं। इसलिये आप इनपर क्रोध मत कीजिये क्योंकि यह समय क्रोध करनेका नहीं है। चलिये हम सब लोग; हाथी, घोड़े और रथोंको इकट्ठा करके घोर युद्ध करेंगे, हे राजन्!

नाश करते हैं। इस प्रकार थोड़े ही समयमें पुरुषसिंह भीमसेन और धृष्टद्युम्नने इक्कीस सहस्र पैदलोंको मारडाला। रुधिरमें भीगे पृथ्वीमें पड़े मरे पैदल ऐसे दीखने लगे जैसे आंधीसे टूटे हुए कचनारके वृक्ष, ये सब अनेक प्रकारके भूषण और शस्त्रधारी वीर अनेक जाति और अनेक देशोंके थे, उनके मरनेसे उनके झण्डे और पताका सब टूट गए तब वह सेना बहुत भयानक दीखने लगी। उधर युधिष्ठिरभी प्रधान सेना सङ्ग लेकर दुर्य्योधनसे युद्ध करने चले, जैसे समुद्र पर्व्वतको नहीं नांघ सक्ता ऐसे ही पाण्डवोंका कोई महारथ दुर्य्योधनको न जीत सका, सब पाण्डव इकट्ठे होनेपर भी दुर्य्योधनको न जीत सके यह देखकर हम लोग आश्चर्य्य करने लगे। अपनी भागती हुई और बाणासे व्याकुल थोड़ी दूर गई हुई सेनासे दुर्य्योधन बोले, हमें ऐसा कोई देश या पर्व्वत नहीं दीखता जहां भागकर तुम लोग पाण्डवोंके हाथसे बच जाओगे, इसलिये भागनेसे क्या होगा? अब पाण्डवोंकी सेना बहुत थोड़ी रह गई है, तथा कृष्ण और अर्ज्जुन घावोंसे व्याकुल होगये हैं। यदि इस समय हम लोग मिलकर युद्ध करें तो अवश्यही हमारी विजय होगी, यदि तुमलोग भाग जाओगे तो तुम्हारे वैरी पाण्डव वहां भी तुमको मारेंगे, इसलिये, युद्धमें मरना ही अच्छा है। जितने चत्री यहां हैं सो सब हमारे वचनोंको सुनें "यमराज" कादर और वीर सबहीको मारता है ऐसा विचारकर ऐसा कौन मूर्ख चत्री होगा जो युद्धमें मरनेकी इच्छा न करें? हम लोगोंको यही अच्छा होगा कि क्रोध भरे भीमसेनके आगे खड़े होकर युद्ध करें? मनुष्यको घरमें पड़कर भी अवश्यही मरना होगा, इससे चत्रियोंको युद्धहीमें मरना अच्छा है सो तुम लोग चत्रियोंके धर्म्मानुसार युद्ध करो चत्रियोंका यही धर्म्म है, कि युद्धमें मरें क्यों कि युद्धमें शत्रुको मारनेसे राज्य और मरनेसे स्वर्ग मिलता है। चत्रियोंके लिये युद्धमें मरनेके सिवाय और कोई सुख नहीं है, राजाके वचन सुन उनकी प्रशंसा करके सब चत्री फिर पाण्डवोंसे युद्ध करनेको लौटे। पाण्डवलोग भी उनको आते देख अपनी सेनाका व्यूह बनाकर विजयके लिये क्रोधमें भरकर दौड़े अर्ज्जुन भी तीन लोकोंमें विख्यात गांडीव धनुषपर टङ्कार देते हुए युद्ध करनेको चले। नकुल, सहदेव और महारथ सात्यकि बहुत प्रसन्न होकर शकुनिकी सेनाकी ओर चले।

१८ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! जब यह सब सेना लड़नेको उपस्थित होगई तब म्लेच्छदेशका राजा महापराक्रमी शाल्व पाण्डवोंकी सेनासे युद्ध करनेको खड़ा हुआ राजा शाल्व पर्व्वतके समान भारी और ऐरावतके समान मतवाले शत्रुनाशक हाथी पर बैठकर युद्ध करनेको आये जो हाथी भद्रक वंशमें उत्पन्न हुआ था, राजा दुर्य्योधन सदा ही जिसकी सेवा करते थे, जो सदा युद्ध करनेवाले, हाथियोंके आगे रहता था, उस ही शास्त्र जाननेवाले, सेवकोंसे कसे हुए हाथीपर चढ़कर राजा शाल्व युद्ध करने को आया। उस हाथीपर चढ़े राजा शाल्व ऐसे दीखते थे, जैसे उदयाचलपर प्रातःकालके सूर्य्य। तब वह हाथी राजा शाल्वके सहित पाण्डवोंकी ओर चला राजा शाल्व अपने वज्रके समान बाणोंसे पाण्डवोंके वीरोंको मारने लगे।

हे राजन्! उस समय पाण्डवोंके योद्धा राजा शाल्वके बाणोंमें अन्तर नहीं देखते थे, अर्थात् किसीको यह नहीं जान पड़ता था, कि ये कब बाण चढ़ाते, कब खींचते और कब छोड़ते हैं। जैसे ऐरावत पर चढ़े इन्द्रके बाणोंसे दानव व्याकुल होगये थे, ऐसे ही पाण्डवोंके वीर राजा

शाल्वसे व्याकुल होगये। उस समय शाल्वका एक हाथी पाण्डव, सोमक और सृञ्जय वंशी चत्रियोंको अनेक रूपसे दिखाई देने लगा। अर्थात् जिधर जो देखता था, उसे चारों ओर ऐरावतके समान घूमता हुआ शाल्वका हाथी ही दोखता था, उस समय हमारे शत्रुओंकी सेना चारों ओर भयसे व्याकुल भागती ही दीखती थी, कोई युद्धमें खड़ा होनेकी इच्छा नहीं करता था। उस समय राजा शाल्वने पाण्डवोंकी सेनाके वीरोंको भगा दिया, और अपने हाथीको चारों ओर घुमाने लगे। पाण्डवोंकी सेनाको भागते देख तुम्हारे सब प्रधान वीर राजा शाल्वकी प्रशंसा करने लगे। और चन्द्रमाके समान निर्म्मल शङ्ख बजाने लगे। इस कौरवोंके प्रसन्न शब्दको सुनकर पाण्डवोंके प्रधान सेनापति पाञ्चालदेशके राजपुत्र वीर धृष्टद्युम्नको ऐसा क्रोध हुआ कि चमा न कर सके, तब वीर धृष्टद्युम्न शीघ्रता सहित शाल्वके हाथीकी ओर इस प्रकार दौड़े जैसे जम्भासुर इन्द्र सहित ऐरावतकी ओर दौड़ा था, राजा द्रुपदके बेटे और पाण्डवोंके सेनापतिको अपनी ओर आते देख वीर शाल्वने अपना हाथी उनकी ओर दौड़ाया, सेनापतिने उस हाथीको अपनी ओर आते देख जलती अग्निके समान तेज विषमें बुझे अत्यन्त तेज तीन बाण मारे, फिर महात्मा धृष्टद्युम्नने पांच सौ तेज बाण हाथीके शिरमें मारे, तब वह हाथी बाणोंसे व्याकुल होकर युद्धसे भागा। परन्तु राजा शाल्वने कोड़े और अङ्कुशोंसे अपने भागते हुए हाथीको फिर पाञ्चालदेशके स्वामी धृष्टद्युम्नकी ओर लौटाया। वीर धृष्टद्युम्न अपने रथकी ओर उसे आते देख शीघ्रता सहित डरसे घबड़ाकर गदा लेकर रथसे कूदे उस हाथीने धृष्टद्युम्नके रथको सारथी और घोड़ोंके सहित सूंड़से उठाकर फेंक दिया और पैरोंसे चूरा कर दिया। धृष्टद्युम्नको रथहीन और हाथीके डरसे व्याकुल देख भीमसेन, सात्यकी और शिखण्डी वेगसे दौड़े उन सब वीरोंने उस हाथीकी ओर अनेक बाण चलाये तब वह व्याकुल होकर चक्कर खाने लगा। तब राजा शाल्व इस प्रकार बाण चलाने लगे। जैसे सूर्य्य अपनी किरणोंको जगत्में फैला देता है। तब पाण्डवोंको ओरके अनेक वीर मरने लगे। तब सेनापति धृष्टद्युम्नके सहित सब वीर शाल्वका पराक्रम देख घबड़ाने लगे। और हाथीके रोकनेका उपाय करने लगे। तब महापराक्रमी शत्रुनाशन वीर धृष्टद्युम्न पर्व्वतके शिखरके समान भारी गदा लेकर और सावधान होकर वेगसे हाथीकी ओर लौटे, तब काले मेघके समान मद बरसते और पर्व्वतके समान भारी शरीरवाले, हाथीके वीर धृष्टद्युम्नने एक गदा, मारी उस गदाके लगनेसे हाथीका शिर फट गया मुहसे रुधिर बहने लगा और इस प्रकार पृथ्वीमें गिरा जैसे भूकम्प होनेसे पर्व्वत टूटकर गिर पड़ता है। उसे हाथीके गिरते ही तुम्हारी सेनामें हाहाकार होगया, उसी समय सात्यकीके बाणसे राजा शाल्वका शिर भी कटकर गिर गया, वह हाथी, राजा शाल्वके सहित इस प्रकार पृथ्वीमें गिरा जैसे इन्द्रके वज्र लगनेसे पर्व्वत टूट पड़ता है।

२० अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! वीर राजा शाल्वके मरनेपर तुम्हारी सेना भागने लगी। और इस प्रकार कांपने लगी, जैसे आंधी चलनेसे वृक्ष। अपनी सेनाको भागते देख महावीर महाबलवान कृतवर्म्मा पाण्डवोंसे युद्ध करनेको चले, कृतवर्म्माको बाण चलाते और पर्व्वतके समान खड़ा देख तुम्हारी सेना फिर लौटी, हे महाराज! तब कौरव और पाण्डवोंका फिर घोर युद्ध होने लगा। और दोनोंने मृत्युको आगे कर लिया,

इस समय कृतवर्म्माने बिचित्र युद्ध किया। क्यों कि एकले होने पाण्डवोंकी सब भारी सेनाको रोक दिया। तब दोनों ओरके वीर प्रसन्न होकर गर्ज्जने और युद्ध करने लगे। उनके गर्ज्जनेका शब्द आकाशतक फैल गया, अपनी सेनाको व्याकुल देख सिनीके पोते सात्यकी दौड़े उन्होंने आते हो अपने सात बाणोंसे महा बलवान राजक्षेम धूर्त्तिको मारडाला। उनको अपनी ओर आते और बाण बर्षाते देख कृतवर्म्मा वेगसे दौड़े, तब ये दोनों वृष्णि-बंशी वीर तेज बाण चलाते हुए घोर युद्ध करने लगे। तब पाण्डव और पाञ्चाल आदि सब वीर इन दोनोंका युद्ध देखने लगे। तब वे दोनों मतवाले हाथियोंके समान प्रसन्न होकर बाण बर्षाने लगे दोनों अपने अपने रथोंको अनेक प्रकारकी गतियोंसे घूमते थे, कभी बाणोंमें छिप जाते थे और कभी प्रगट होजाते थे, उस समय हमने दोनों यदुवंशी वीरोंके बाण आकाशमें टीड़ीदलके समान घूमते देखे, तब कृतवर्म्माने सात्यकीके शरीरमें एक बाण मारा और चार बाणोंसे चारों घोड़ोंको मारडाला। उस बाणके लगनेसे सात्यकीको ऐसा क्रोध हुआ जैसे अङ्कुश लगनेसे हाथीको तब उन्होंने कृतवर्म्माके आठ बाण मारे तब कृतवर्म्माने भी कानतक धनुष खींचकर तीन बाण सात्य-कीको मार एकसे धनुष काट दिया। तब सात्यकीने उस धनुषको फेंककर शीघ्र दूसरा धनुष लेकर बाण चढ़ाया, तब महाबलवान महापराक्रमी सात्यकीने अपने धनुष कटनेसे महाक्रोध करके कृतवर्म्माकी ओर दौड़े, तब दश तेज बाणोंसे कृतवर्म्माके सारथी और घोड़ोंको मरा देख कृतवर्म्माने सात्यकीके मार-नेके लिये भाला चलाया तब सात्यकीने उस भालेको मार्गहीमें काटकर चूरा कर दिया तब कृतवर्म्मा घबड़ाने लगे। तब सारथी और घोड़े रहित रथपर बैठे कृतवर्म्माकी छातीमें एक तेज बाण मारा उस बाणके लगते ही कृतवर्म्मा रथसे नीचे उतरे उनको रथहीन और सात्यकीसे हारा हुआ देख तुम्हारे सब वीर डरने लगे। विशेष कर राजा दुर्य्योधन घबड़ा गये, कृतवर्म्माको रथहीन देखकर कृपाचार्य्य दौड़े और उन्हें अपने रथपर बिठलाकर सब धनुषधारियोंके देखते देखते युद्धसे हटा ले गये, कृतवर्म्माको भागते और सात्यकीको युद्धमें खड़ा देख तुम्हारी सेना फिर भागने लगी परन्तु ऐसी धूल उड़ी कि पाञ्चाल सेना तुम्हारी भागती सेनाको देख न सकी दुर्य्योधनको छोड़ और सब सेना भागने लगी। अपनी सेनाको भागते देख राजा दुर्य्योधनको महाक्रोध हुआ और उन एकलेहीने पांचो पाण्डव, धृष्टद्युम्न, शिखण्डी, द्रौपदीके पांचों पुत्र, सब पाञ्चाल, सब सृञ्जय, सब सोमक और सब केकयोंको रोक दिया उस समय एकले महापराक्रमी दुर्य्योधन सावधान होकर घोर युद्ध करने लगे। जैसे यज्ञशालामें मन्त्रोंसे दी हुई आहुति जलाती हुई अग्नि चारों ओर प्रकाशित दीखती है ऐसे ही उस युद्धमें राजा दुर्य्योधन दीखने लगे। उस समय उनके आगे कोई वीर इस प्रकार नहीं ठहरता था। जैसे यमराजके आगे मनुष्य। तब थोड़े ही समयमें कृतवर्म्मा दूसरे रथमें बैठकर युद्धमें आगये।

२१ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! उस समय महा-वीर दुर्य्योधन रथमें बैठे ऐसे दीखते थे, जैसे शिव; राजा दुर्य्योधन शत्रुओंपर इस प्रकार बाण चला रहे थे, जैसे मेघ पर्व्वतोंपर जल बरसाते हैं, सब युद्धभूमिमें दुर्य्योधनके बाण ही बाण देखने लगे उस समय पाण्डवोंकी सेनामें कोई हाथी, घोड़ा, रथ, मनुष्य ऐसा न बचा था जिसके शरीरमें दुर्य्योधनका बाण न लगा

हो, उस समय हम जिस योद्धाको देखते थे उसे ही दुर्य्योधनके वाणोंसे व्याकुल पाते थे, जैसे चलती हुई सेनाकी धूलसे मनुष्य छा जाते हैं तैसे ही दुर्य्योधनके वाणोंसे छागये थे, उस समय महाधनुषधारी शीघ्र वाण चलानेवाले राजा दुर्य्योनके वाणोंसे पृथ्वी भर गई। राजा दुर्य्योधन एकले ही सबसे लड़ते रहे यह देखकर हम सब लोग आश्चर्य्य करने लगे, दुर्य्योधनने युधिष्ठिरके सौ, भीमसेनके सत्तर, सहदेवके पांच, नकुलके चौसठ, धृष्टद्युम्नके पांच, द्रौपदीके पुत्रोंके सात सात और सात्यकिके तीन वाण मारे फिर एक वाणसे सहदेवका धनुष काट दिया तब प्रतापी सहदेवने उस धनुषको फेंक कर शीघ्रता सहित दूसरा धनुष लेकर दुर्य्योधनके शरीरमें दश तेज वाण मारे ऐसे ही नकुल भी राजा दुर्य्योधनके शरीरमें नौ वाण मार सिंहके समान गर्ज्जने लगे, सात्यकिने एक, द्रौपदीके पुत्रोंने तिहत्तर, धर्म्मराज युधिष्ठिरने पांच और अस्सी वाण भीमसेनने मारे और भी अनेक वीरोंने चारों ओरसे दुर्य्योधनको वाणोंसे छा दिया परन्तु दुर्य्योधन कुछ न घबड़ाये और शीघ्र सहित सावधान होकर वाण चलाते रहे उस समय राजा दुर्य्योधन ऐसा काम कर रहे थे, जैसा कोई मनुष्य नहीं कर सक्ता, किसीकी यह शक्ति नहीं थी, कि उनकी ओरको देख सके तब पाण्डवोंके वीर भी सावधान होकर राजा दुर्य्योधनकी ओर दौड़े तब दोनों ओरसे महाघोर शब्द होने लगा, जैसे वर्षाकालमें बढ़ते हुए समुद्रका शब्द होता है, ऐसे ही सेनाका शब्द होने लगा, तब इधरसे भी अनेक वीर विजयी पाण्डवोंसे युद्ध करनेको चले, अश्वत्थामाने भीमसेनको रोक दिया, उस समय वाणोंके मारे हमे यह नहीं जान पड़ता था, कि पूर्व्व, पश्चिम किधर है दोनों महापराक्रमी दोनों महावीर दोनों महा योद्धा भीमसेन और अश्वत्थामा एक दूसरेके मारनेका यत्न करने लगे, दोनोंकी धनुषके शब्दसे सब मनुष्य डरने लगे, उसी समय शकुनि युधिष्ठिरकी ओर वाण चलाने लगे और महाराजके चारों घोड़ोंको मारकर सब सेनाका उत्साह बढ़ानेके लिये सिंहके समान गर्ज्जे, तब राजा सहदेवके रथपर बैठकर युद्धसे चले गये, फिर दूसरे रथमें बैठकर महाराजने शकुनिके शरीरमें नौ वाण मारकर पांच और मारे, और सिंहके समान गर्ज्जने लगे, तब शकुनि और युधिष्ठिरका घोर युद्ध होने लगा। उस युद्धको देखकर सिद्ध, चारण और गन्धर्व्व दोनोंकी प्रशंसा करने लगे। महावीर शकुनिके पुत्र उलूक महापराक्रमी नकुलकी ओर दौड़े और नकुल भी उनकी ओर दौड़े, दोनों उत्तम कुलमें उत्पन्न हुए महारथ बली घोर युद्ध करने लगे। वे दोनों एक दूसरेके वाणोंको काटकर अपनी अपनी विजयका यत्न करने लगे, उधर सात्यकि और कृतवर्म्मा भी बली और इन्द्रके समान युद्ध करने लगे। दुर्य्योधनने एक वाणसे धृष्टद्युम्नका धनुष काट दिया, और उनके शरीरमें अनेक वाण मारे, धृष्टद्युम्नने भी दूसरा धनुष लेकर दुर्य्योधनसे घोर युद्ध किया, जैसे दो मतवाले, हाथी घोर युद्ध करते हैं। ऐसे ही इन दोनोंका भयानक युद्ध हुआ।

जैसे इन्द्रियोंके सङ्ग जीव लड़ता है। ऐसे ही कृपाचार्य्य और द्रौपदीके पुत्रोंका महाघोर युद्ध हुआ, उस युद्धमें कुछ मर्य्यादा न रही जैसे मूर्खको इन्द्री व्याकुल कर देती है। तैसे ही उन पांचोंने कृपाचार्य्यको व्याकुल कर दिया, परन्तु कृपाचार्य्य भी एकले ही उस पांचोंके सङ्ग विचित्र युद्ध करते रहे, जैसे जीव इन्द्रियोंको जीतनेका उपाय करता है, तैसे ही कृपाचार्य्य भी उनके जीतनेका उपाय करने लगे। पैदल पैदलोंसे रथी रथियोंसे, हाथीपर चढ़े हाथी पर चढ़ोंसे और घुड़चढ़े घुड़चढ़ोंसे घोर युद्ध करने लगे।

हे राजन्! इस प्रकार सब ओर घोर और विचित्र युद्ध हुआ, कोई वीर शत्रुके पास जाकर गर्जने लगा और कोई किसीको मारने लगा। घोड़ों और पैदलोंके दौड़नेसे ऐसी धूल उड़ी कि दिन ही में रात्रिसी दीखने लगी। रथोंके पहियोंके वायु और हाथियोंके श्वाससे उड़कर धूल सूर्य्यतक पहुंच गई, उस धूलसे सूर्य्यका तेज घट गया, सब भूमि और वीर भी छागये। फिर थोड़े समयके पश्चात् वीरोंका रुधिर बहनेसे सब धूल बैठ गई, जब यह घोर धूल शान्त हुई, तब मैंने फिर देखा कि चारों ओर घोर युद्ध होरहा है। हे राजेन्द्र! उस दो पहरकी समयमें चारों ओर वीरोंके कवच ही पड़े दीखते थे, जैसे जलते हुए बनमें बांस चटकनेका शब्द होता है। ऐसे ही बाणोंके चलनेका शब्द सुनाई देता था।

२२ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन्! ऐसा घोर युद्ध होनेसे तुम्हारी सेना इधर उधर भागने लगी। तब राजा दुर्य्योधन बहुत यत्नसे उनको रोक कर पाण्डवोंकी सेनासे युद्ध करने लगे। तब तुम्हारी ओरके और भी वीर लौटि और घोर युद्ध करने लगे। यह युद्ध देवासुर संग्रामके समान हुआ उस समय दोनों ओरसे कोई भागा नहीं, उस समय दोनों ओरके वीर केवल अनुमान और चिन्होंसे युद्ध कर रहे थे, अर्थात् कोई किसीको पहचान नहीं सक्ता था, तब राजा युधिष्ठिरको महाक्रोध हुआ, और राजोंके समेत तुम्हारे पुत्रोंको जीतनेके लिये, कृपाचार्य्यके शरीरमें तीन बाण मार कर चार बाणसे कृतवर्म्माके चारों घोड़ोंको मारडाला। तब यशस्वी कृतवर्म्माको अश्वत्थामाने अपने रथपर चढ़ा लिया कृपाचार्य्यने भी युधिष्ठिरके आठ बाण मारे, तब राजा दुर्य्योधनने युधिष्ठिरसे लड़नेके लिये सात सौ रथ, भेजे, वे वायु और मनके समान तेज चलनेवाले रथ वीरोंके सहित युधिष्ठिरकी ओर दौड़े तब उनमें बैठे वीर युधिष्ठिरको घेरकर बाण चलाने लगे। राजा युधिष्ठिर उनके बीचमें ऐसे छिप गये, जैसे सूर्य्य मेघोंमें। राजाको घिरा देख शिखण्डी राजाकी रक्षाके लिये दौड़े तब फिर पाञ्चाल और कौरवोंका घोर युद्ध होने लगा। रुधिर बह चला, पाञ्चाल और पाण्डवोंने थोड़े ही समयमें उन सात सौ रथोंका नाश कर दिया, और तुम्हारी सेनाकी ओर दौड़े जैसा उस समय कौरव और पाण्डवोंका युद्ध हुआ ऐसा न सुना था और न देखा था, इस मर्य्यादा रहित घोर युद्धमें दोनों ओरके वीरोंका नाश होने लगा, दोनों ओरसे धनुषधारी गर्जने लगे। शङ्ख बजाने लगे और धनुषोंपर टङ्कार देने लगे। कहीं वीरोंके शरीर कटने लगे। अपनी अपनी विजयके लिये वीर दौड़ने लगे। इस घोर युद्धमें पृथ्वी भरकी अनेक युवती स्त्री विधवा हुईं, तब जगत्का नाश करनेवाले अनेक घोर उत्पात हुए फिर उस पवित्र कुरुक्षेत्रमें क्षत्रीलोग सावधान होकर युद्ध करने लगे।

हे राजन्! स्वर्गमें जानेकी इच्छावाले, क्षत्री चारों ओर गर्जने लगे। उस समय बन और पर्व्वतोंके सहित भूमि हिलने लगी; आकाशसे जलती हुई दण्डके समान बिजली गिरी आकाशसे सूर्य्यके मण्डलकी ओरको बिजली गिरने लगी। भयानक वायु चलने लगा, बालू बर्षने लगी, हाथियोंकी आंसू बहने लगीं। और सब कांपने लगे। इन सब शकुनोंका निरादर करके वीर क्षत्री फिर भी युद्ध करने लगे और सावधान होकर शत्रुओंको मारने लगे। उस रमणीय कुरुक्षेत्रमें स्वर्ग जानेकी इच्छावाले क्षत्री घोर युद्ध करने लगे। तब गान्धारराज सुबलके पुत्र अपने प्रधान वीरोंसे बोले, तुम लोग पाण्डवोंके आगे खड़े हुए युद्ध किये जाओ

और मैं पीछेसे जाकर नाश किये देता हूं, शकुनिके ऐसे बचन सुन हमारी ओरके मद्र-देशीय योद्धा प्रसन्न होकर गर्जने और हंसने लगे। तब पाण्डवोंकी ओरके योद्धा भी मद्र-देशीय वीरोंके ऊपर घोर बाण बर्षाने लगे। तब वे सब इधर उधरको भाग चले अपनी सेनाको भागते देख बलवान शकुनि क्रोधकर बोले, अरे अधर्म्मियों तुम लोग युद्ध छोड़कर कहां भागे जाते हो? युद्ध करो भागनेसे क्या होगा?

हे महाराज! उस समय घोर प्राससे युद्ध करनेवाले दस सहस्र वीर शकुनिके सङ्गमें थे, उसी सेनाको सङ्गमें लेकर वीर शकुनि पाण्डवोंके पीछेसे जाकर बाण बर्षाने लगे तब वह पाण्डवोंकी सेना इस प्रकार फट गई जैसे वायु लगनेसे मेघ फट जाते हैं, तब राजा युधिष्ठिर चारों ओरको देखने लगे। फिर महाबलवान सहदेवसे बोले, हे पाण्डव! यह दुर्बुद्धि सुबल-पुत्र सावधान होकर हमारी सेनाको पीछेसे मार रहा है, तुम बहुत शीघ्र द्रौपदीके पुत्रोंके सहित दौड़ो और इसको मारडालो। मैं पाञ्चाल वीरोंके सहित इस रथ सेनाको नाश कर दूंगा, हमारी आज्ञासे तुम्हारे सङ्ग सब हाथी सब घोड़े और तीन सहस्र पैदल जाय और तुम हमारी आज्ञासे शकुनिको मारो।

महाराजकी आज्ञा सुनते ही धनुषधारी वीरोंके सहित सात सौ हाथी पांच सहस्र घोड़े, तीन सहस्र पैदल, पांचो द्रौपदीके पुत्र और बलवान सहदेव महायोद्धा शकुनिसे युद्ध करनेको चले। इनको आते देख प्रतापवान शकुनि भी पाण्डवोंके सामनेसे हटकर पीछेसे सहदेवकी सेनाका नाश करने लगा। तब पाण्डवोंके वीर घुड़चढ़े योद्धा हठसे शकु-निकी सेनामें घुसे और वे सब वीर शकुनिकी सेनापर सहस्रों बाण बर्षाने लगे।

हे राजन्! उस युद्धमें महावीर गदा और प्रास आदि शस्त्र चलाने लगे। हे महाराज! यह घोर युद्ध आपकी उस कपट सम्मतिहीका फल हुआ दोनों ओरसे धनुषके रोदोंके शब्द होने लगे, एक वीर दूसरेको मारने लगा, उस समय कोई अपने और परायेको नहीं पहचा-नता था, हे भरतकुल सिंह! वीरोंके हाथसे छूटी हुई सांगी आकाशमें इस प्रकार छूटती थी, मानों सहस्रों बिजली गिर रही हैं, चमकती और गिरते हुए सहस्रों खड्गोंसे आकाशकी अद्भुत शोभा दीखती थी, हे भरतकुल सिंह! आकाशमें चलते हुए प्रास ऐसे जान पड़ते थे मानो सहस्रों जुगुनू चमक रहे हैं, सहस्रों घोड़े रुधिरमें भीगे वीरोंके सहित पृथ्वीमें गिरने लगे, किसीके मुखसे रुधिर गिरने और कोई पिसकर मर गये। हे महाराज! उस समय दोनों सेना धूलसे भर गई और चारों ओर वीर इधर उधरको घबड़ाकर भागने लगे। कोई वीर पृथ्वीमें गिरा और किसीके मुखसे रुधिर बहने लगा, कोई महापराक्रमी वीर दूसरे वीरको बाल पकड़कर घोड़ेपरसे खींचने लगा, कोई मल्ल युद्ध करने लगा, कोई घोड़ेसे गिरकर मरगया, कोई अभिमानी वीर पृथ्वीमें गिरकर मर गया, उस समय कटे हुए शिर और रुधिरसे भीगे हाथोंसे पृथ्वी भर गई, तब किसी तेज घोड़ेकी भी यह शक्ति न हुई कि थोड़ी दूर भी चल सके, सब शस्त्रधारी रुधिरसे भीग गये, यह घोर युद्ध थोड़े समय तक होता रहा तब शकुनि बचे हुए छः सहस्र घुड़चढ़ोंको लेकर युद्धसे भाग गये, तब पाण्ड-वोंके भी छः सहस्र घुड़चढ़े थकी हुई शकु-निकी सेनाके पीछे दौड़े; तब रुधिरमें भीगे प्राणकी आशा छोड़े अपने वीरोंको पीछे दौड़ते देख सहदेव बोले, इस समय रथोंपर बैठे वीर युद्ध नहीं करसक्ते और हाथी सेनाकी तो कथा ही क्या है? राजा शकुनि युद्ध छोड़कर भाग गये, अब लौटकर नहीं आवेंगे इसलिये हमारे सङ्गके रथ रथ सेनामें और हाथी हाथी सेनामें मिल-

जांय, सहदेवके वचन सुन द्रौपदीके पांचो पुत्र मतवाले, हाथियोंको सेनाको लेकर महारथ पाञ्चाल राजा धृष्टद्युम्नकी ओरको चले गये। सहदेव भी शकुनिको सेनाको धूलसे भरी देख एकले राजा युधिष्ठिरके पास चले गये। सब वीरोंको गया हुआ देख शकुनि क्रोध करके धृष्टद्युम्नकी सेनाको बाईं ओरसे काटने लगे, तब धृष्टद्युम्नको सेनासे घोर युद्ध होने लगा, दोनों ओरसे खड्ग चलने लगे, और वीरोंके शिर कट कटकर गिरने लगे और धनुषोंसे बाण छूटनेका ऐसा शब्द होने लगा, जैसे तालके वृक्ष टूटनेसे होता है, शस्त्रोंके साथ कहीं हाथ और कहीं पैर कटकर गिरने लगे और कहीं ऐसा घोर शब्द होने लगा कि, सुन-कर रोंए खड़े होने लगे। जैसे मांसके लिये एक पक्षी दूसरेको मारता है, ऐसे ही वीर लोग भी भाई, पुत्र और मित्रोंको मारने लगे, कहीं परस्पर लड़ते हुए वीर हम पहले तुझे मारेंगे हम पहले तुझे मारेंगे; ऐसा शब्द करने लगे, कहीं सहस्रों वीर मरकर घोड़ोंसे गिरने लगे और कहीं घोड़ेही गिरने लगे। कहीं अत्यन्त तेज चलनेवाले घोड़े पृथ्वीमें गिर कर तड़फने लगे। कहीं हाहाकार करते हुए मनुष्य गिर गये, कहीं वीरोंके मर्मस्थानोंको काटते हुए शक्ति और खड्गोंके घोर शब्द होने लगे।

हे राजन्! ऐसे तुम्हारी ओरके सब वीर शस्त्रोंके घाव और प्याससे व्याकुल होकर इधर उधरको भागने लगे। अनेक वीर रुधिरकी गन्धिसे मतवाले होकर अपने और परायेको भी मारने लगे। उस समय जो जिसके आगे आगया, उसने उसीको मारडाला। हे राजन्! उस समय अनेक विजय चाहनेवाले, क्षत्री, शस्त्रोंसे मरकर पृथ्वीपर गिर गये। स्यार, गिद्ध और भेड़िये बहुत प्रसन्न हुए, उस दिन तुम्हारे पुत्रके देखते देखते तुम्हारी सेनाका बहुत नाश हुआ। उस रुधिरसे भीगे और मरे हुए शरीरोंसे ढकी पृथ्वीको देखकर कादर लोग डरने लगे, दोनों ओरकी सेना खड्ग, पट्टिश और परिघोंसे कटकर पृथ्वीमें गिर गई, तो भी योद्धा लोग बलके अनुसार शस्त्र चलाते रहे और कहते रहे कि जबतक हमारा प्राण रहेगा, तबतक शक्ति भर युद्ध करेंगे। वीरोंके घावसे रुधिर बहने लगा, कहीं कबन्ध (रुण्ड) चमकता खड्ग हाथमें लिये हुए रुधिरमें भीगे कटे शिरको हाथमें लिये घूमने लगे। इस प्रकार सहस्रों कबन्ध होगये, तब रुधिरकी गन्धिसे वीर भी घबड़ाने लगे। जब मार काटका शब्द कम हुआ, तब शकुनिने देखा कि मेरे सङ्ग बहुत थोड़े घुड़चढ़े रह गये। परन्तु शकुनि उतने ही वीरोंको लेकर धृष्टद्युम्नकी भारी सेनाकी ओरको चले पाण्डवोंके वीर भी हाथी, घोड़े और रथोंपर चढ़कर और पैदल भी शकुनिकी ओर दौड़े। धृष्टद्युम्नने शकुनिकी सब सेनाको अपनी सेनाके बीचमें घेरलिया और युद्ध समाप्त करनेके लिये, तुम्हारी सेनाको काटने लगे। तुम्हारे वीर भी अपने चारों ओर पाण्डवोंकी सेनाको देख रथ घोड़े और हाथियोंपर चढ़कर अनेक प्रकारके शस्त्र चलाने लगे। कोई कोई पैदल मुक्के और दांतोंसे शत्रु-ओंको मारने लगा। कोई शस्त्र नष्ट होनेसे आप भी मर गया, जैसे पुण्य नाश होनेपर विमानोंसे देवता गिरते हैं। तैसे ही हाथी, घोड़े और रथोंसे वीर गिरने लगे, इस समय वीरोंको भाई, पुत्र और पिता कुछ नहीं जान पड़ता था, तब मर्य्यादा रहित युद्ध होगया।

२३ अध्याय समाप्त

———

सञ्जय बोले, जब वह घोर शब्द कुछ कम हुआ और पाण्डवोंने तुम्हारी उस सेनाका भी नाश कर दिया, तब शकुनि सात सौ घुड़-

चढ़ोंको सङ्ग लेकर लौट गये और सेनामें जाकर कहने लगे कि, हे शत्रुनाशन चत्रियों घोर युद्ध करो! फिर सबसे बोले, महाबलवान राजा दुर्य्योधन कहां हैं? शकुनिके वचन सुन सब चत्री बोले, जहां यह पूरे चन्द्रमाके समान छत्र शोभित होरहा है, जहां ये कवच पहने रथोंपर चढ़े अनेक वीर खड़े हैं, जहां वह मेघके समान घोर शब्द होरहा है। वहीं महाबली राजा दुर्य्योधन युद्धकर रहे हैं। आप शीघ्र वहां जांय तो अवश्य दर्शन होगा। चत्रियोंके ऐसे वचन सुनकर राजा शकुनि तुम्हारे पुत्रके पास गये, राजा दुर्य्योधनको रथ सेनाके बीचमें खड़े देख सब चत्रियोंको प्रसन्न करते हुए ऐसे बोले, मानो युधिष्ठिरको जीतकर ही आये हैं। हे राजन् दुर्य्योधन! तुम इन सब रथ सेनाको जीत लो मैंने पाण्डवोंके सब घुड़-चढ़े वीरोंको मारडाला, जब तुम इस युधिष्ठि-रसे रचित रथ सेनाको जीत लोगे तबमैं हाथी सेना और पदातियोंका नाश कर दूंगा। शकु-निके ऐसे वचन सुन तुम्हारे ओरके सब वीर प्रसन्न होकर युधिष्ठिरकी सेनाकी ओर दौड़े, सब चत्री धनुषोंपर बाण चलाने लगे, सिंहके समान गर्ज्जने लगे। तब चारों ओरसे बाण छूटने और धनुषकी टङ्कारका शब्द होने लगा, इन सब चत्रियोंको अपने पास आया हुआ देख अर्ज्जुन श्रीकृष्णचन्द्रसे बोले, हे कृष्ण! आप साव-धान होकर घोड़े हांकिये और इस समुद्रके समान सेनामें प्रवेश कीजिये, अब मैं अपने तेज-बाणोंसे सबको नाश कर दूंगा। आज हमलो-गोंको परस्पर युद्ध करते हुए अठारह दिन बीत गये, देखो प्रारब्धही बलवान है। पहले दिन इन महात्मा चत्रियोंकी सेना अनन्त जान पड़ती थी परन्तु आज सब ही नष्ट होगयी, वह समुद्रके समान दुर्य्योधनकी सेना हमलोगोंसे युद्ध करते करते आज गौके चरणके समान रह गई है; जब भीष्म मरे थे, तब हम लोगोंने जाना था। कि अब मूर्ख दुर्य्योधन सन्धिकर लेगा तो सबका कल्याणही होगा परन्तु उस मूर्खने ऐसा नहीं किया, भीष्मने जो कहा था, वही उसके लिये अच्छा था। परन्तु बुद्धि हीन दुर्य्योधनने वह भी न माना जब उस महाघोर युद्धमें भीष्म मरकर पृथ्वीमें गिरे थे, तब न जाने फिर किस लिये युद्ध होता रहा? भीष्मके मरनेपर भी युद्ध होता रहा इससे हम जानते हैं कि धृतराष्ट्रके पुत्र महामूर्ख हैं। फिर वेद जाननेवालोंमें श्रेष्ठ गुरु द्रोणाचार्य्य, कर्ण और विकर्णके मरनेपर भी युद्ध समाप्त न हुआ, जब पुत्रोंके सहित पुरुषसिंह कर्ण मारे गये थे और सेना बहुत थोड़ी रह गई थी तब भी युद्ध समाप्त न हुआ। जब वीर अवायुद्ध, कुरुवंशी जलसन्ध और राजा श्रुतायुध मारे गये तब भी वह युद्ध समाप्त न हुआ। जब भूरिश्रवा शल्य, शाल्व और उज्जैनके प्रधान वीर मारे गये तौभी युद्ध समाप्त न हुआ। जब जयद्रथ, अलायुद्ध राचस, वाह्लिक और सोमदत्त मारे गये तब भी युद्ध समाप्त न हुआ। जब वीर भगदत्त, काम्बोजदेशी महावीर और दुःशासन मारे गये तब भी युद्ध समाप्त न हुआ। इन अनेक देशोंके प्रधान बलवान और वीर राजोंको मरा हुआ देख भी युद्ध समाप्त न हुआ, अनेक अचौहिणीपति राजोंको भीमसेनके हाथसे मरा देखकर भी दुर्य्योधनने मूर्खता और लोभसे युद्धको समाप्त न किया। दुर्य्यो-धनको छोड़कर राजकुलमें उत्पन्न हुआ ऐसा कौन चत्री होगा जो वृथा ऐसा घोर बैर करे? जिनमें भी कुरुवंशी ऐसा कौन मूर्ख होगा जो शत्रुको अपनेसे अधिक बलवान, गुणवान और तेजवान जान कर युद्ध करे? जिसने सन्धिके लिये तुम्हारेही बचन न सुने वह दूसरेके क्या सुनता? जिसने शान्तिके लिये अनेक यत्न करते हुए भीष्म, विदुर और द्रोणाचार्य्यके बचन न सुने उसको औषधि क्या है? हे जनार्द्दन!

जिसने अपनी पिताके बचन न सुने और कल्याण बचन कहती हुई माताका जिसने निरादर कर दिया वह निश्चय ही वंशका नाश करनेको उत्पन्न हुआ था हमको अभी भी इसकी नीति और चेष्टासे यही मालूम देताहै कि यह हमे जीता हुआ राज्य न देगा, विदुरने हमसे पहले ही कहा था कि, दुर्य्योधन जीते जी तुम्हारा राज्य तुमको न देगा। जबतक इस दुर्बुद्धिके शरीरमें प्राण रहेंगे तबतक पापरहित पाण्डवोंके साथ पाप ही करता रहेगा, सत्यवादी विदुर सदा यही कहा करते थे कि यह मूर्ख बिना युद्ध किये बसमें नहीं आवेगा, महात्मा विदुरने जो कुछ कहा था दुष्ट दुर्य्योधनके वैसे ही लक्षण जान पड़ते हैं। जिस मूर्खने परशुरामके कल्याण भरे बचन न माने वह निश्चय ही नाशके मुखमें बैठा है। जब यह उत्पन्न हुआ था तब ही अनेक सिद्धोंने कहा था कि यह दुष्ट सब क्षत्रियोंका नाश करेगा आज उन सब सिद्धोंका बचन ठीक हुआ अर्थात् दुर्य्योधनके कारणसे सब क्षत्रियोंका नाश होगया। आज हम बचे हुए क्षत्रियोंको भी मारडालेंगे। जिस समय ढेरे शून्य हो जायंगे और कोई क्षत्री न रहेगा तब ये मूर्ख दुर्य्योधन अपने मरनेका उपाय करेगा, बस इसके मरनेहीसे यह वैर समाप्त होजायगा। हे वृष्णिकुलश्रेष्ठ! मैं अपनी बुद्धि और विदुरके बचनसे और इस दुष्टकी चेष्टासे ऐसेही समझता है इसलिये आप इसी सेनाके आगे हमारे रथको ले चलिये। मैं इन सबको दुर्य्योधनके सहित मारूंगा। हे माधव! आज इन दुर्बल सेनाको दुर्य्योधनके देखते मार धर्म्मराजका कल्याण करूंगा।

सञ्जय बोले, अर्ज्जुनके बचनको स्वीकार कर श्रीकृष्णने बेडर होकर उस घोर सेनाकी ओरको घोड़ोंकी सान उठाई और सेना प्रवेश किया, कुन्त, खड्ग और बाणोंसे भयानक शङ्करूपी कांटोंसे भरे, गदा और परिघरूपी मार्गशले रथ और हाथीरूपी वृक्षोंसे भरे, घोड़े और पदातिरूपी लताओंसे पूर्ण, उस सेनारूपी बनमें महायशस्वी कृष्ण उस ऊंची पताकावाले रथको घुमाने लगे। वे सफेद घोड़े अर्ज्जुनके समेत कृष्णसे प्रेरित होकर चारों सेनामें दीखने लगे। तब शत्रुनाशन अर्ज्जुन उस सेनापर इस प्रकार बाण बरसाने लगे जैसे मेघ जल बर्षाता है उस समय अर्ज्जुनकी धनुषसे छूटे हुए अर्ज्जुनके बाणोंका चारों ओर घोर शब्द होने लगा, अर्ज्जुनके धनुषसे छूटे हुए बज्रके समान बाण चारों ओर क्षत्रियोंके कवचोंमें लगने लगे उन बाणोंके लगनेसे सब वीर, हाथी, घोड़े और रथोंसे मर मर कर गिरने लगे। बाण भी इस प्रकार पृथ्वीमें गिरते थे, जैसे शब्द करते हुए पक्षी। उस समय गाण्डीव धनुषसे छूटे हुए बाण ही चारों ओर दीखते थे, उस समय कोई दिशा नहीं दिखलाई देती थी, तौभी वीर अर्ज्जुनके आगेसे भागते नहीं थे। जैसे अग्नि काठको जला देती है ऐसे ही सूर्य्यके समान तेजस्वी धनुष बाणधारी अर्ज्जुन उस सेनाको जलाने लगे। जैसे सूखे वृक्ष और लतावाले बनको अग्नि भस्म कर देता है ऐसे ही प्रतापी अर्ज्जुनने उस सेनाको भस्म कर दिया। तेज बाणरूपी ज्वालावाले अर्ज्जुनरूपी तेजस्वी अग्निने तुम्हारे पुत्रकी सेनाको क्षण भरमें नाश कर दिया, अर्ज्जुनके सोनेके पङ्खवाले एक बाणको भी कोई न सह सका अर्थात् सब एक ही एक बाणसे मर गये, अर्ज्जुनने भी हाथी, घोड़े, या मनुष्यके मारनेको दूसरा बाण नहीं चलाया। एकले अर्ज्जुनने उस घोर सेनामें प्रवेश करके बाणोंसे उस सेनाका इस प्रकारसे नाश किया जैसे इन्द्र दानवोंका नाश करते हैं।

२४ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, वीरोंको विजयके लिये अनेक यत्न करते और पीछेको न हटते देख अर्ज्जुन भी इनके मारनेका यत्न करने लगे। उस समय अर्ज्जुन बाण चलाते हुए ऐसे दीखते थे, जैसे पानी बरसाता हुआ मेघ।

हे भरतकुलश्रेष्ठ! तब तुम्हारी सेनाके वीर अर्ज्जुनके बाणोंसे व्याकुल होकर भाई, पिता और मित्रोंको छोड़कर तुम्हारे पुत्रके देखते देखते युद्धसे भागे, किसी रथको धुरी टूट गई, किसीका सारथी मर गया, किसीके पहिये टूट गये किसीके पहियेकी नाभी टूट गई, किसी वीरके पास चलानेको बाण न रहे और कोई भयसे व्याकुल होकर भाग गया। कोई बिना घाव लगे ही डरकर भाग गये, कोई अपने बान्धवोंको मरा देख अपने पुत्रोंको लेकर भागे, कोई बापको, कोई सहायकोंको कोई बन्धुओंको और कोई भाइयोंको रोने लगे, हे पुरुषसिंह! कोई सब छोड़कर युद्धसे भागे, कोई बाण लगनेसे वहीं मूर्च्छा खाकर गिर गये, कोई अर्ज्जुनके बाण लगनेसे ऊंचे खांस लेने लगे, कोई उनको अपने रथोंपर बिठला-कर धीर बढ़ाने लगे और फिर प्याससे व्याकुल होकर युद्ध करनेको चले, कोई महापराक्रमी वीर तुम्हारे पुत्रकी आज्ञा पालन करनेके लिये पानी पीकर और घोड़ोंको शान्त करके फिर युद्ध करनेको चले, कोई अपने भाई, बाप और बेटोंको डेरोंमें लिटाकर और शान्त करके कवच पहनकर फिर युद्ध करनेको चले, कोई दूसरे रथोंको सजाकर उनपर बैठ घण्टे बजाते हुए धृष्टद्युम्नकी ओर इस प्रकार दौड़े जैसे तीनों लोक विजय करनेके समय दैत्य और दानव दौड़े थे, कोई सोनेके रथपर बैठकर धृष्टद्युम्नसे युद्ध करने लगा, तब वीर धृष्टद्युम्न, महारथ शिखण्डी महा क्रोध करके उस रथ सेनासे घोर युद्ध करने लगे, तब सेनापति धृष्ट-द्युम्नको महाक्रोध हुआ और बहुत सेना अपने सङ्गमें लेकर तुम्हारे पुत्रोंको मारने चले, हे महाराज! उनको आते देख तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधन उनके ऊपर अनेक प्रकार बाण बर्षाने लगे, तुम्हारे धनुषधारी पुत्रने नाराच, अर्द्ध नाराच और वत्सदन्त आदि विषमें बुझे बाणोंसे धृष्टद्युम्नको व्याकुल कर दिया और चार बाणोंसे उनके घोड़े भी मार डाले, महाधनुषधारी धृष्टद्युम्नको उन बाणोंके लग-नेसे ऐसा क्रोध हुआ जैसे अङ्कुश लगनेसे हाथीको। तब चार बाणोंसे दुर्य्योधनके चारों घोड़ोंको मार कर एक बाणसे सारथीका शिर काट कर गिरा दिया; तब राजा दुर्य्योधन रथसे उतर कर एक घोड़े पर चढ़े और सेनासे थोड़ी दूर जाकर खड़े होगये, शत्रुना-शन महाबलवान् दुर्य्योधन अपनी सेनाका नाश देखकर उसी घोड़ेपर चढ़ कर शकुनिके पास चले गये, जब यह रथसेना नष्ट हो चुकी और बचे हुए वीर भाग गये, तब तीन सहस्र हाथि-योंने पाण्डवोंको सेनाको घेर लिया, उस समय पांचो पाण्डव उन हाथियोंके बीचमें ऐसे शोभित होने लगे, जैसे मेघोंके बीचमें पांच-ग्रह, तब महा बलवान् अर्ज्जुन कृष्ण सारथी और सफेद घोड़ोंके रथपर बैठकर उस पर्व्वतके समान हाथियोंकी सेनामें घुस कर तेज और तीक्ष्ण बाण चलाने और उस सेनाका नाश करने लगे, हमने उस समय यह देखा कि अर्ज्जुनके एक एक ही बाणसे अनेक हाथी मर कर गिर गये, भीमसेन भी मतवाले हाथीके समान उस सेनाको देखकर हाथमें गदा लेकर दण्डधारी यमराजके समान रथसे उतरे उन महारथ भीमसेनको रथसे उतरते देख तुम्हारे सब सेना डरने लगी। भीमसेनको गदा धारण किये देख हाथी और घोड़े भी विष्टा और मूत्र करने लगे, उस समय भीमसेनकी गदासे पर्व्वतके समान शिर टूटे और रुधिरमें भीगे हाथी इधर उधरको भागते दीखते थे, कहीं

भीमसेनकी गदाके लगनेसे कहीं चिल्लाते हुए हाथी इस प्रकार पृथ्वी पर गिरते थे, इधर उधर भागते हुए हाथियोंको देखकर तुम्हारी सब सेना भयसे व्याकुल होगई, तब राजा युधिष्ठिर, नकुल और सहदेव भी क्रोध करके अपने तेज बाणोंसे हाथियोंको मारने लगे, द्रुपदपुत्र धृष्टद्युम्न भी राजा दुर्य्योधनको जीत कर उनको घोड़े पर चढ़ कर भागते देख और पाण्डवोंको हाथियोंसे घिरा हुआ जान उधर होको हाथियोंको मारनेकी इच्छासे युद्ध कर नेके लिये चले गये।

इधर रथसेनामें शत्रुनाशन दुर्य्योधनको न देखकर, अश्वत्थामा, कृपाचार्य्य और कृतवर्म्मा क्षत्रियोंसे पूछने लगे कि राजा दुर्य्योधन कहां हैं? किसीने जब उनके बचनका उत्तर न दिया तब इन तीनों महारथोंने जान लिया कि महाराज आजके युद्धमें मारे गये, उस समय उन तीनोंके मुखोंका रङ्ग उड़ गया तब फिर घबड़ा कर क्षत्रियोंसे पूछने लगे कि, महाराज कहां हैं? तब किसी क्षत्रीने कहा कि पाञ्चाल राजा धृष्टद्युम्नकी घोर सेनासे हारकर राजा दुर्य्योधन शकुनिके पास चले गये हैं, कोई कोई बाणोंसे व्याकुल क्षत्री क्रोधसे भरकर कहने लगे कि, दुर्य्योधनसे क्या काम है? कहीं जीता हो तो ढूंढ़ने होसे क्या? चलो सब मिलकर पाण्डवोंसे युद्ध करें अब राजासे क्या काम है?

वे सब बाहन रहित बाणोंके घावोंसे पीड़ित क्षत्री दुर्य्योधनके ठीक पता न लगा सके और सब चिल्लाने लगे कि, हम जिस पाण्डवोंकी सेनासे घिरे हुए हैं, आज उसका सर्व्वनाश करेंगे। ये हमारी ओरके हाथियोंको मारकर पाण्डव लोग निकले जाते हैं। उनके बचन सुनकर महापराक्रमी अश्वत्थामा, कृपाचार्य्य और महाधनुषधारी कृतवर्म्मा अपनी रथसेनाको छोड़कर धृष्टद्युम्नकी सेनाको काटते हुए शकुनिके पास पहुंच गये, उनके चले जानेके पश्चात् धृष्टद्युम्न और पाण्डव भी तुम्हारी सेनाका नाश करते करते मिल गये। उन वीरोंको अपनी ओर आते हुए देखकर तुम्हारी ओरके वीरोंको जीनेकी आशा छूट गई, सबके मुखोंके रङ्ग उड़ गये; हम अपनी सेनाको शस्त्र रहित और भागती हुई देखकर घबड़ाने लगे, और धृष्टद्युम्नसे आप ही युद्ध करने लगे, उस समय हमारी ओरके पांच महारथ अर्ज्जुन और धृष्टद्युम्नसे व्याकुल होकर कृपाचार्य्यके पास भाग गये, वहां भी महापराक्रमी धृष्टद्युम्न पहुंच गए और थोड़ा ही युद्ध करके उन्होंने उन पांचोंको जीत लिया। तब हम फिर भागे और थोड़ी दूर जाकर देखा कि चार सौ रथोंके समेत महारथ सात्यकि युद्ध करनेको चले जाते हैं। उस समय धृष्टद्युम्नके घोड़े कुछ थक गये थे, इसलिये वह हमको पकड़ न सके, तब मैं उनसे छूटकर सात्यकिकी सेनाकी ओर इस प्रकार भागा, जैसे पापी नरककी ओरको दौड़ता है। तब वहां भी क्षणमात्र घोर युद्ध होता रहा महारथ सात्यकिने मेरी सब सामग्री काट डाली, तब मुझे पृथ्वीमें मूर्च्छित पड़ा देख जीता ही पकड़ लिया, तब हमने थोड़े ही समयमें देखा कि भीमसेनकी गदा और अर्ज्जुनके बाणोंसे हमारी सब गजसेना नष्ट होगयी। उस समय पर्व्वतोंके समान हाथियोंके गिरनेसे पाण्डवोंके रथोंकी गति बन्द होगई तब महाबलवान भीमसेनने उन हाथियोंको खींच खींचकर अपने रथोंका मार्ग बना लिया, तब अश्वत्थामा, कृपाचार्य्य और कृतवर्म्मा उस रथ सेनामें भी शत्रुनाशन महारथ दुर्य्योधनको न पाकर बहुत घबड़ाये और धृष्टद्युनको वैसे ही युद्ध करते खड़े तथा अपनी सेनाको वैसे ही नष्ट होते छोड़ राजाको ढूढ़नेके लिये शकुनिकी ओर चले गये।

२५ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन् धृतराष्ट्र ! जब महाबलवान भीमसेनने उस गजसेनाका नाश कर दिया, और प्राण नाशक दण्डधारी यमराजके समान घूमने लगे । और जब राजा दुर्य्योधनका कहीं पता न लगा, तब तुम्हारे सब बचेहुए पुत्रने भीमसेनसे युद्ध करनेको चले, दुर्म्मर्षण, श्रुतान्त, जैत्र, भूरिबल, रवि, जयत्सेन सुजात, दुर्विषह, अरिहा, श्रुतर्वा और महाबाहु इन सब महावीर तुम्हारे पुत्रोंने चारों ओरसे भीमसेनको घेर लिया । हे महाराज ! तब महारथ भीमसेन भी अपने रथपर चढ़कर तुम्हारे पुत्रोंके मर्म्मस्थानोंमें बाण मारने लगे । तब तुम्हारे पुत्र भी उनकी ओर दौड़े तब भीमसेनने हंसकर और क्रोध करके एक बाणसे दुर्म्मर्षणका शिर काटकर पृथ्वीपर गिरा दिया । दूसरे सब शरीर काटने योग्य बाणसे श्रुतान्तको और तीसरेसे जयत्सेनको मारडाला । शत्रुनाशन जयत्सेन उस बाणके लगते ही पृथ्वीपर गिर गया । तब श्रुतर्वाने महाक्रोध करके गिद्धके पङ्ख लगे, अत्यन्त तेज सौ बाण भीमसेनके शरीरमें मारे, तब भीमसेनने क्रोध करके विष और अग्निके समान एक तेज बाणसे जैत्र, भूरिबल और रविको मारडाला । ये तीनों भाई कटकर रथसे इस प्रकार पृथ्वीमें गिरे जैसे बसन्त कालमें फूला हुआ, टेसू कटकर गिरता है ; तब भीमसेनने एक अत्यन्त तेज बाणसे दुर्व्विमोचनको मारकर गिरा दिया, दुर्व्विमोचन मरकर इस प्रकार पृथ्वीमें गिरे जैसे कोई बड़ा वृक्ष पर्व्वतके शिखरसे टूटकर पृथ्वीमें गिरता है । फिर भीमसेनने दो दो बाणोंसे दुर्द्धर्ष और सुजातको मारडाला ; ये दोनों मरकर पृथ्वीमें गिर गये तब दुर्व्विषहको अपनी ओर आते देख उसे भी एक बाणसे मारडाला ; वह भी सब धनुषधारियोंके आगे पृथ्वीमें गिर गया । अपने अनेक भाइयोंको एकले भीमसेनसे मरा देख श्रुतर्वाको महाक्रोध हुआ, वे अपनी सुवर्ण भूषित धनुषको घुमाते हुए विष और अग्निके समान बाण छोड़ते हुए भीमसेनकी ओर दौड़े और भीमसेनका धनुष काटकर बीस बाण उनके शरीरमें मारे, महाबलवान भीमसेनने शीघ्रता सहित दूसरा धनुष लेकर अनेक बाण चलाये, और श्रुतर्वासे कहने लगे, कि खड़ारह खड़ारह उस समय उन दोनोंका ऐसा घोर भयानक और अद्भुत युद्ध हुआ, जैसा जंभासुर और इन्द्रका हुआ था । इन दोनोंके यमराजके दण्डके समान तेज बाणोंसे आकाश, पृथ्वी, दिशा और सब कोने भर गये । तब श्रुतर्वाने क्रोध करके भीमसेनके हृदय और हाथोंमें अनेक बाण मारे, तब उन बाणोंसे व्याकुल होकर भीमसेनका क्रोध ऐसा बढ़ा जैसे पूर्णमासीके दिन समुद्र बढ़ता है । तब भीमसेनने अपने बाणोंसे उनके घोड़े और सारथीको मार डाला ।

श्रुतर्वाको रथहीन देखकर भीमसेनने बहुत तेज बाणोंसे व्याकुल कर दिया और अपनी बाण बिद्याकी शीघ्रता दिखलाई ।

तब श्रुतर्वा भी खड्ग और ढाल लेकर रथसे उतरने लगे । परन्तु भीमसेनने शीघ्रता सहित तेज बाणोंसे उसका शिर काटकर पृथ्वीमें डाल दिया, तब शिर काटनेसे उसका शरीर भी पृथ्वीमें गिर गया, वीर श्रुतर्वाको मरा हुआ देख तुम्हारी सेना भयसे व्याकुल होगई और बचे हुए वीर उनसे युद्ध करनेको दौड़े, उनको अपनी ओर आते देख प्रतापवान भीमसेन भी युद्ध करनेको चले, तब उन्होंने चारों ओरसे भीमसेनको घेर लिया तब भीमसेनने अपने तेज बाणोंसे उन सबको इस प्रकार व्याकुल कर दिया जैसे इन्द्र राक्षसोंको व्याकुल कर देता है । भीमसेनने रथोंमें बैठे पांच सौ वीर, घोड़ों पर चढ़े सात सौ वीर, आठ सौ घोड़े और सहस्रों पैदल मारडाले ।

इस प्रकार तुम्हारे पुत्रोंका नाश करके भीमसेनने अपनेको कृतकृत्य और अपने जन्मको

सफल जाना, उनको इस प्रकार युद्ध करते देख तुम्हारी सेनाके किसी वीरको यह शक्ति न देख पड़ी कि उनकी ओर दृष्टि कर सके। इस सब सेनाको भगाकर और अनेक वीरोंको भगाकर भीमसेन ताल ठोकने लगे। उस तालके शब्दसे हाथी डरने लगे। हे महाराज! उस समय तुम्हारी जो सेना मरनेसे बची थी सो भयसे व्याकुल होगई।

२६ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे महाराज! उस समय तुम्हारे पुत्रोंमेंसे केवल दुर्य्योधन और सुदर्शन ही मरनेसे बचे थे, ये दोनों अश्वसेनामें खड़े थे, उनको देख श्रीकृष्ण अर्ज्जुनसे बोले।

हे अर्ज्जुन! शत्रु मरनेसे थोड़े शेष हैं तुम अपनी जातिकी रक्षा करो ये देखो सञ्जयको पकड़े हुए सात्यकी युद्धसे लौटे आते हैं, देखो पापी धृतराष्ट्रके पुत्रोंसे लड़ते लड़ते नकुल और सहदेव भी थक गये हैं। यह देखो दुर्य्योधनको छोड़कर कृतवर्म्मा, कृपाचार्य्य और महारथ अश्वत्थामा खड़े हैं।

यह देखो हमारे प्रधान सेनापति महातेजस्वी धृष्टद्युम्न सब दुर्य्योधनकी सेनाका नाश करके प्रभद्रकवंशी क्षत्रियोंके सहित युद्धभूमिमें खड़े हैं।

यह देखो जिनके शिरपर छत्र लगा है, जो बार बार चारों ओर देख रहे हैं, जो व्यूह बनाये घुड़चढ़ी सेनाके बीचमें खड़े हैं वही महाराज दुर्य्योधन हैं। तुम तेज बाणोंसे इनका नाश करके कृतकृत्य होंगे। हे तात! जबतक हाथी सेनाको मरा देख और तुमको आया देख यह सेना न भाग जाय तभीतक तुम दुर्य्योधनको जीत लो, तुम अपनी सहायताके लिये शीघ्र एक मनुष्य भेजकर धृष्टद्युम्नको अपने पास बुला लो, इस समय पापी दुर्य्योधन बहुत थक गया है, इसलिये इसे मार ही डालना चाहिये। यह पाण्डवोंकी सेनाका नाश करके पाण्डवोंको जीत लिया यह समझकर कैसा प्रसन्नतासे खड़ा है। जब इसकी सब सेना मारी जायगी और पाण्डवोंके बाणोंसे व्याकुल होगा तब आप ही मरनेके लिये युद्धमें आवेगा।

श्रीकृष्णके ऐसे वचन सुन अर्ज्जुन बोले, हे कृष्ण! धृतराष्ट्रके सब पुत्रोंको भीमसेनने मारा है, ये जो दोनों खड़े हैं सो भी अब नहीं बचेंगे। भीष्म मारे गये, द्रोणाचार्य्य मारे गए, कर्ण मारे गए, मद्रराज शल्य मारे गए, जयद्रथ मारे गए, अब सुबलपुत्र शकुनीके सङ्गवाले पांच सौ घुड़चढ़े, दो सौ रथ, एक सौ हाथी और तीन सहस्र पैदल शेष हैं। प्रधानोंमें अश्वत्थामा, कृपाचार्य्य, त्रिगर्त्तदेशके राजा सुशर्मा, उलूक, शकुनी और कृतवर्म्मा शेष रहगये हैं अब दुर्य्योधनकी बस इतनी ही सेना है, परन्तु जगत्में कालसे कोई नहीं बचता इसलिये यह भी नहीं बचेंगे। देखो सेना नाश होनेसे दुर्य्योधनका तेज कैसा कम होगया है? हमें निश्चय है कि आज ही महाराजके शत्रुओंका सर्व्व नाश होगया। यदि युद्ध छोड़कर न भागे तो आज कोई वीर हमसे नहीं बचेगा जो आज हमसे युद्ध करनेको आवेंगे, वे चाहें साक्षात् देवता ही क्यों न हों तौभी जीते नहीं बचेंगे। आज तेज बाणोंसे दुष्ट शकुनीको मारकर महाराजका पुराना शोक दूर करूंगा। जिस शकुनिने उस सभामें जुआ खेलकर हमारे रत्न छीन लिये थे, सो आज मैं सब लेलूंगा। पाण्डवोंके हाथसे पति और पुत्रोंको मरा हुआ सुन आज हस्तिनापुरकी स्त्री रोवेंगी। हे कृष्ण! आज यह कर्म्म समाप्त होजायगा। हमारे धनुषकी टङ्कारको यह घुड़चढ़ी सेना नहीं सह सक्ती, अब तुम चलो हम इसका नाश करेंगे।

यशस्वी अर्ज्जुनके वचन सुन कृष्णने दुर्य्योधनकी सेनाकी ओर घोड़े हांके, महारथ

अर्ज्जुन, महारथ भीम और महारथ सहदेव दुर्य्योधनको मारनेके लिये सिंहके समान गर्ज्जते हुए चले।

उनको धनुष धारण किये वेगसे आते देख महारथ सुबलपुत्र शकुनि युद्ध करनेको चले, तुम्हारे पुत्र सुदर्शन भीमसेनसे, सुशर्म्मा और शकुनी अर्ज्जुनसे और घोड़ेपर चढ़े दुर्य्योधन सहदेवसे युद्ध करने लगे।

तब दुर्य्योधनने एक प्रास सहदेवके शिरमें मारा उसके लगनेसे सहदेव रुधिरमें भीग गए और विषैले सांपके समान खांस लेते हुए मूर्च्छित होकर रथपर गिर गये, फिर थोड़े समयमें चैतन्य होकर महाक्रोध करके दुर्य्योधनको अपने तेज बाणोंसे व्याकुल कर दिया, महापराक्रमी अर्ज्जुन भी अपने तेज बाणोंसे अनेक घुड़चढ़े वीरोंके शिर काटने लगे। इस सेनाका नाश करके अर्ज्जुन त्रिगर्त्तदेशको रथ सेनाकी ओर चले गये। त्रिगर्त्तदेशीय महारथ भी अर्ज्जुन और कृष्णके ऊपर बाण वर्षाने लगे। फिर अर्ज्जुन सत्यकर्म्माके युद्ध करनेको गये, उसकी एक धुरी काटकर महायशस्वी अर्ज्जुनने शिलापर घिसे तेज बाणोंसे चमकते हुए सोनेके कुण्डल सहित उसका शिर काट दिया।

हे राजन्! तब महापराक्रमी अर्ज्जुन इस प्रकार युद्धमें घूमने लगे। जैसे हरिनोंके झुण्डमें भूखा सिंह घूमता है।

सत्यकर्म्माको मारकर फिर अर्ज्जुनने तीन बाण सुशर्म्माके शरीरमें मारे अनन्तर सोनेके रथोंमें बैठे वीरोंका नाश करके शीघ्रता सहित क्रोधरूपी तेज विषको छोड़ते हुए प्रस्थलदेशके राजाकी ओर दौड़े और उनकी ओर सौ बाण छोड़े फिर घोड़ोंको बाणोंसे पूरित करके एक यमराजके दण्डके समान बाण सुशर्म्माके हृदयमें हंसकर मारा, उस बाणके लगनेसे सुशर्म्माका हृदय फट गया। और वह मरकर पृथ्वीमें गिर गया तब पाण्डवोंकी सेना बहुत प्रसन्न और तुम्हारी सेना बहुत दुःखी होगई फिर अपने तेज बाणोंसे उसके पैंतालीस महारथ पुत्रोंको मारडाला, फिर त्रिगर्त्तदेशीय सब सेनाका नाश कर दिया।

हे महाराज! उस ही समय महारथ भीमसेन भी क्रोध करके तुम्हारे पुत्र सुदर्शनसे युद्ध करने लगे। तब हंसकर उसे बाणोंसे छिपा दिया, फिर एक बाणसे शिर काटकर पृथ्वीमें गिरा दिया। जब महावीर सुदर्शन मरकर पृथ्वीमें गिरे, तब उनके सङ्गी भीमसेनसे युद्ध करने लगे और अनेक प्रकारके बाण वर्षाने लगे। तब भीमसेनने वज्रके समान घोर बाणोंसे उस सब सेनाका नाश कर दिया अनन्तर अनेक सेनाके प्रधान वीर भीमसेनसे युद्ध करनेको आये भीमसेनने अपने तेज बाणोंसे उनका भी नाश कर दिया।

इसी प्रकार तुम्हारी ओरके वीरोंने भी पाण्डवोंके महारथोंको बाणोंसे व्याकुल कर दिया दोनों ओरके वीर बाणोंसे मर मर सोचते हुए पृथ्वीमें गिर गये।

२७ अध्याय समाप्त।

———

सञ्जय बोले, हे महाराज धृतराष्ट्र! जब यह हाथी, घोड़े और मनुष्योंका नाश करनेवाला घोर युद्ध होने लगा, तब सुबलपुत्र शकुनी सहदेवसे युद्ध करनेको आये, प्रतापवान् सहदेवने उनको अपनी ओर आते देख पक्षियोंके समान शीघ्र चलनेवाले अनेक बाण शकुनीकी ओर छोड़े।

उलूकने भीमसेनके शरीरमें दश और शकुनिने भी तीन बाण मारे, फिर शकुनीने सहदेवको ओर नव्वे बाण चलाये ये चारों वीर युद्धमें क्रोध करके पक्षियोंके पङ्ख लगे सोनेके तारोंसे मढ़े शिलापर घिसे बाण कानोंतक

खींच खींचकर छोड़ने लगे। उस समय इन चारोंकी धनुषोंकी वाण वर्षा ऐसी दीखती थी जैसे मेघसे जल बर्षता हो।

हे महाराज! तब भीमसेन और महाबलवान सहदेवने महाक्रोध करके तुम्हारी सेनाका नाश करना बिचारा तब इन दोनोंने इतने वाण छोड़े कि तुम्हारी सब सेना पूरित होगई और आकाशमें महा अन्धकार दीखने लगा। अनेक घोड़े वाणोंसे व्याकुल होकर इधर उधर भागने लगे, अनेक मरे हुए वीर उनके पैरोंमें आकर इधर उधरको खिचने लगे, अनेक घोड़ोंपर चढ़े वीर उन घोड़ोंके सहित मरकर मार्गहीमें गिर गये। किसीका कवच कट गया और किसीका प्रास टूट गया, गिरते हुए खड़्ग, साङ्गी, प्रास और परशुधोंसे पृथ्वी ऐसी पूरित होगई जैसी वसन्तकालमें फूलोंसे। हे महाराज! दोनों ओरके वीर क्रोध करके सेनामें घूमने और शत्रुओंको मारने लगे, हे पृथ्वीनाथ! कुण्डल पहिने कमलके समान सुन्दर कटे हुए मुखोंसे पृथ्वी भर गई, कवच और बाजूबन्द पहिने, खड़्ग, प्रास और परशुध लिये हाथीके सूंड़के समान सुन्दर कटे हुए हाथ पृथ्वीमें चारों ओर दीखने लगे, अनेक कबन्ध उठ कर नाचने लगे, और मांस खानेवाले, जन्तु चारों ओर घूमने लगे, कौरवोंकी थोड़ी सेना देखकर पाण्डवोंके वीर बहुत प्रसन्न हुए और शत्रुओंका नाश करने लगे।

उस ही समय प्रतापवान शकुनीने एक प्रास सहदेवके शिरमें मारा, उसके लगनेसे सहदेव गिरते ही व्याकुल होकर रथमें गिर गये तब प्रतापवान भीमसेनने क्रोध करके अपने वाणोंसे सब सेनाको रोक दिया और अनेक वीरोंको मारकर सिंहके समान गर्जने लगे, उस शब्दसे हाथी घोड़े और मनुष्य व्याकुल होकर इधर उधर भागने लगे।

शकुनीके सङ्गियोंको भागते देख राजा दुर्य्योधन बोले, अरे अधर्म्मियों? लौटो और युद्ध करो भागनेसे क्या होगा युद्ध करनेसे यश और मरनेसे स्वर्ग मिलता है। जो वीर सम्मुख युद्धमें मरता है। वह निःसन्देह स्वर्गमें जाता है।

राजाके ऐसे वचन सुन मृत्यु अवश्य होगी, यह निश्चयकर वीर लोग लौटे। उनके लौटनेसे घोर शब्द होने लगा। उस समय यह सेना ऐसी दीखने लगी, जैसे उबलता हुआ समुद्र। उनसे युद्ध करनेको पाण्डवोंकी सेनाके वीर भी चले।

इतने ही समयमें महापराक्रमी सहदेवने सावधान होकर हंसकर शकुनीके शरीरमें दश और घोड़ोंके तीन तीन वाण मारकर शकुनीका धनुष काट दिया। शकुनीने शीघ्रता सहित दूसरा धनुष लेकर नकुलके शरीरमें छः और भीमसेनके शरीरमें सात वाण मारे।

हे महाराज! उसी समय पिताकी रक्षा करते हुए उलूकने भीमसेनके शरीरमें सात और सहदेवके शरीरमें सत्तर वाण मारे, भीमसेनने भी क्रोध करके उलूकके आठ, शकुनीके चौसठ और रक्षा करनेवाले वीरोंके तीन तीन वाण मारे, फिर ये सब वीर इकट्ठे होकर सहदेवके ऊपर इस प्रकार वाण बर्षाने लगे। जैसे बिजली वाले मेघ पर्व्वतके ऊपर जल बर्षाते हैं, तब महा प्रतापवान सहदेवने उन सबको अपने वाणोंसे रोककर एक वाणसे उलूकका शिर काटकर पृथ्वीमें गिरा दिया। वह सहदेवके हाथसे मरकर रुधिरमें भीगकर पाण्डवोंकी प्रसन्नता बढाता हुआ पृथ्वीमें गिरा।

हे महाराज! अपने पुत्रको मरा हुआ देख शकुनीकी आंखमें आंसू भर आई और रुके हुए उनके कण्ठसे सांस लेते हुए क्षणभर तक बिदुरके वचनोंको स्मरण करते हुए शान्त होगये, और सोचने लगे। फिर क्रोध करके सहदेवकी ओर तीन वाण चलाये, प्रतापी सहदेवने उन्हें अपने वाणोंसे काटकर शकुनीका धनुष काट

दिया। तब सुबल पुत्रने क्रोध करके सहदेवकी ओर चमकता हुआ एक खड्ग चलाया। सहदेवने हंसकर एक बाणसे उस खड्गके दो टुकड़े कर दिये, तब शकुनीने एक भारी गदा लेकर सहदेवकी ओर फेंकी परन्तु वह रथतक न पहुंचने पाई बीचहीमें गिर गई, तब शकुनीने क्रोध करके कालरात्रिके समान भयानक सांगी सहदेवकी ओर चलाई उस सोनेसे मढी शक्तिको सहदेवने अपने बाणोंसे काटकर इस प्रकार पृथ्वीमें गिरा दिया, जैसे चमकती हुई, बिजलीको।

उस सांगीको कटी और शकुनीको भयसे व्याकुल देख शकुनीके सहित सब सेना इधर उधर भाग चली। उस समय सहदेवकी विजय देखकर बिजयी पाण्डवोंकी सेनामें घोर शब्द होने लगा। तुम्हारी सब सेना युद्धसे बिमुख होगई उस सेनाको भागते हुए देख प्रतापवान सहदेव सहस्रों बाण बर्षाते हुए सोनेके रथमें बैठे रोदे सहित महाधनुषको घुमाते गान्धार देशीय बीरोंसे रचित बड़े बड़े घोड़ोंके रथपर बैठे शकुनीको अपना अंश समझकर अर्थात् हमने सभामें इसे मारनेकी प्रतिज्ञाकी थी। यह बिचार कर उसके पास जाकर बोले, अरे दुर्बुद्धे! मनुष्य बन, चत्रियोंका धर्म्म स्मरण कर युद्धकर, अरे मूर्ख! तूही सभामें फांसे लेकर हम लोगोंको हंसता था, आज उसका फलभोग, जिन जिन दुरात्माओंने हंस हंसकर हमारा निरादर करा था। वे सब मारे गये, अब केवल एक कुलाङ्गार दुर्य्योधन और उसका मामा तू शेष है। जैसे कोई मनुष्य जड़से तोड़ कर वृक्षका फल पृथ्वीमें गिराता है। ऐसे ही इस बाणसे तेरा शिर काट अभी पृथ्वीमें गिरा दूंगा। ऐसा कहकर शार्दूलके समान महाबलवान योद्धाओंमें श्रेष्ठ बीर सहदेवने क्रोधमें भरकर बलसे धनुष खींचा और शकुनीके शरीरमें दश बाण मारकर चार बाणोंसे चारों घोड़े मारडाले, फिर एक एक बाणसे धनुष ध्वजा और छत्र काटकर सिंहके समान गर्ज्जने लगे। फिर ध्वजा, छत्र और धनुष रहित शकुनीको बाणसे व्याकुल करके और भी अनेक बाण चलाये। तब सुबल पुत्र शकुनी क्रोध करके सहदेवकी मारनेके लिये, एक प्रास उठाकर सहदेवकी ओर दौड़े। उस ही समय सहदेवने क्रोध करके एक ही समय धनुषपर तीन बाण चढाकर छोड़े, एकसे शकुनीका प्रास और दोसे मोटे मोटे हाथ कट गये, फिर सहदेवने एक तेज बाणसे उसका शिर काटकर पृथ्वीमें गिरा दिया, और अत्यन्त ऊंचे शब्दसे गर्ज्जने लगे। बीर सहदेवने उस तेज बाणके द्वारा कुरुकुल बिरोधके मूल शकुनीके तड़फते हुए शिर और हाथ रहित शरीरके टुकड़े टुकड़े कर दिये, रुधिरमें भीगे हुए शकुनीको पृथ्वीमें सोते हुए देख तुम्हारी सेनाके बचे हुए बीर भयसे व्याकुल होकर शस्त्र ले लेकर युद्धसे भाग गये। तुम्हारी सेनाके बीरोंके मुख सूख गये, गांडीवधनुषकी टङ्कार सुनकर हाथी, घोड़े और दुर्य्योधन भयसे व्याकुल होकर इधर उधरको भागने लगे। शकुनीको रथसे गिराकर सब पाण्डवोंके योद्धा अपनी सेनाको प्रसन्न करनेके लिये शङ्ख बजाने लगे। फिर सब पाण्डव और श्रीकृष्ण सहदेवके चारों ओर खड़े होकर उनकी प्रशंसा करके कहने लगे, हे बीर! तुमने प्रारब्धसे इस छलीको पुत्रके सहित युद्धमें मारा।

२८ अध्याय समाप्त।

आगे ह्रद प्रवेश पर्व्व लिखते हैं।

सञ्जय बोले, हे महाराज! तब शकुनीके सङ्गी क्रोध करके पाण्डवोंसे युद्ध करनेको दौड़े, वे सब केवल सहदेवको मारने लगे, तब बिषभरे सांपके समान क्रोध करके तेजस्वी भीमसेन और अर्ज्जुन उनको मारने को दौड़े। तब अर्ज्जुनने अपने बाणोंसे उन घोड़ोंपर चढ़े हुए बीरोंके

शिर और हाथ काटकर पृथ्वीमें गिरा दिये।

राजा दुर्योधनने अपनी सेनाका नाश देखकर बचे हुए हाथी, घोड़े, रथोंपर बैठे और पदातियोंसे कहा कि तुम लोग सब इकट्ठे होकर बन्धुबान्धवों सहित पाण्डवोंको और सेना सहित सेनापति धृष्टद्युम्नको मारकर शीघ्र हमारे पास आओ।

उन सब वीरोंने राजाकी आज्ञाको शिरसे ग्रहण किया, और पाण्डवोंको मारनेको चले, परन्तु उनके सङ्ग कोई प्रधान नहीं था, इसलिये व्यूह न बन सका। कहीं घोड़े भागने लगे। और कहीं सेनामें धूल उड़ने लगी, उस समय तुम्हारी ओरके वीरोंको दिशाका ज्ञान भी नहीं रहा था।

तब पाण्डवोंकी सेनामेंसे थोड़से वीर निकले और उन्होंने क्षण भरमें इन सबोंको मारडाला।

हे महाराज! उस समय पाण्डव और सृञ्जयवंशी क्षत्रियोंके हाथसे ग्यारह अक्षौहिणी सेना समाप्त हुई।

हे महाराज! उस सहस्रों महात्मा राजोंसेभरे डेरेमें घावसे व्याकुल एकले राजा दुर्योधन खड़े रह गये।

हे महाराज! उस समय अपने वीर और सहायकोंसे दुर्योधनको पृथ्वी शून्य दीखने लगी, पाण्डवोंके धनुषका शब्द सुनकर तथा, उन्हें नाचते कूदते देखकर और उनका मनोर्थ सिद्ध जानकर राजा दुर्योधन बहुत घबड़ाये तब उन्होंने अपनेको वाहन और सेनासे हीन देखकर भागनेकी इच्छा करी।

धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! जिस समय हमारी सब सेना मर गई और डेरोंमें कोई नहीं रहा तब पाण्डवोंकी कितनी सेना शेष थी? उस समय अपनी सेनाका नाश देखकर मेरे पुत्र मूर्ख दुर्योधनने क्या किया? सो तुम हमसे कहो।

सञ्जय बोले, उस समय पाण्डवोंकी सेनामें दो सहस्र रथ, सात सौ हाथी, पांच सहस्र घोड़े और एक लाख पदाति शेष थे, इस ही सेनाका व्यूह बनाकर धृष्टद्युम्न खड़े थे।

हे महाराज! उस समय महारथ दुर्योधन पाण्डवोंको कूदते और अपनी सेनाका नाश देख गदा हाथमें लेकर भयसे व्याकुल होकर मरे हुए घोड़ेको छोड़ पूर्व्वकी ओरको भगे। हे महाराज! जो तेजस्वी दुर्य्योधन केवल गदा लेकर पैरों भागे जाते थे। वे ही एक दिन ग्यारह अक्षौहिणीके स्वामी थे। हे महाराज! थोड़ी दूर पैरों चलकर महाराजने बुद्धिमान धर्म्मात्मा बिदुरके बचनोंको स्मरण किया, महाराज अपने मनमें कहने लगे। कि बुद्धिमान बिदुरने हमारे बैरसे क्षत्रियोंके इस सर्व्वनाशको पहले ही देख लिया था। ऐसा बिचारकर दुःखसे व्याकुल महाराज तालावमें प्रवेश करनेको चले।

हे महाराज! उस समय धृष्टद्युम्नको अगाड़ी करके पाण्डव अपनी सेनाके सहित तुम्हारे बचे हुए वीरोंको मारने लगे। हे महाराज! हाथी, घोड़े, और मनुष्योंके सहित जब सुबल पुत्र शकुनी मारे गये, तब तुम्हारी सेनाके डेरे ऐसे दीखने लगे, जैसे वृक्ष कटनेसे बनकी भूमि, हे महाराज! उस समय तुम्हारी सेनामें केवल कृतवर्म्मा, पराक्रमी अश्वत्थामा और कृपाचार्य्यके सिवाय और कोई वीर नहीं दीखता था।

हे राजन्! मुझे सात्यकीके रथमें बंधा हुआ देख सेनापति धृष्टद्युम्न बोले, इसे जीता ही छोड़ दो क्यों कि इसके जीने और मरनेसे हमें कुछ लाभ और हानि नहीं।

धृष्टद्युम्नके बचन सुन महारथ सात्यकीने मेरे मारनेको तेज खड़्ग निकाला उसी समय महात्मा व्यास आये, और उन्होंने कहा कि सञ्जयको मत मारो इसे जीता ही छोड़ दो।

व्यासके बचन सुन सात्यकी उनके आगे हाथ जोड़ने लगे और मुझे छोड़कर बोले, हे सञ्जय! तुम्हारा कल्याण हो यहांसे भागजावो।

उनकी आज्ञा सुनकर मैं शस्त्र और कवचसे रहित होकर रुधिरमें भीगकर सन्ध्या समय हस्तिनापुरकी ओर चला। एक कोसभर चला था, तो देखा कि महाराज दुर्य्योधन घावोंसे व्याकुल एकले गदा लिये पैरों चले जाते हैं। मुझे देखते ही महाराजकी आंखोंमें आंसू भर आए और मेरी ओर न देख सके फिर उन्होंने मेरी ओरसे मुख फेर लिया। फिर मैं भी दीन होकर उनके पास ठहर गया, मैं भी उन्हें एकला युद्धसे भागते हुए देखकर दुःखसे व्याकुल होगया और चणभर कुछ न कह सका फिर अपने पकड़े जानेका और व्यासकी कृपासे जीते छूटनेका सब बर्णन उनसे किया।

फिर महाराजने चैतन्य होकर अपने भाई और सब सेनाका समाचार मुझसे पूंछा मैंने जो कुछ देखा था सब कह दिया। हे महाराज! अश्वत्थामा, कृतवर्म्मा और कृपाचार्य्य जीते हैं। मैं इस समाचारको नहीं जानता था मुझसे अब व्यासने कहा कि वे तीनों जीते हैं।

हे महाराज! फिर महाराजने ऊंचा स्वांस लेकर मेरा हाथ पकड़ लिया और कहने लगे।

हे सञ्जय! अब हम अपने सहायकों में तुम्हारे सिवाय किसीको जीता नहीं देखते जो हो तुम महाराजसे जाकर कहना कि तुम्हारा पुत्र दुर्य्योधन सहायक, वैसे वैसे मित्र भाई और पुत्रोंके मरनेपर भी अभी जीता है। पाण्डवोंके राज्य छीन लेनेपर दुर्य्योधनके सिवाय और कौन जी सक्ता है? और यह भी कहना कि घावोंसे व्याकुल होकर जीता ही युद्धसे चला आया है और तालाबमें छिपा है। ऐसा कहकर महाराज तालाबमें घुस गये और जलको मायासे स्तम्भित कर दिया।

जब महाराज तालाबमें चले गये तब मैंने दूरसे आते हुए वाणोंसे व्याकुल कृपाचार्य्य, अश्वत्थामा और कृतवर्म्माको देखा, उन्होंने मुझे देखकर घोड़ोंको तेज हांका और मेरे पास आकर बोले, हे सञ्जय! तुम प्रारब्धहीसे जीते हो कहो राजा दुर्य्योधन कहीं जीते हैं वा नहीं?

तब मैंने महाराजकी कुशल उनसे कही और दुर्य्योधनने जो कुछ मुझसे कहा था सब उनको कह सुनाया और यह भी कह दिया कि महाराज इस तालाबहीमें हैं।

मेरे बचन सुन और तालाबको बड़ा भारी देख अश्वत्थामा ऊंचे स्वरसे रोकर कहने लगे कि हाय हमको धिक्कार है कि जो महाराज यह भी नहीं जानते कि हम लोग अभी जीते हैं। यदि महाराज हमको मिलजांय तो अभी हम सब पाण्डवोंको जीत लेंगे। बहुत समय तक इस प्रकार रोकर पाण्डवोंकी सेनाको उधर ही आते देख मुझे कृपाचार्य्यके रथपर बिठलाकर डेरोंकी ओर चले गये।

हे महाराज! वहां जाकर हमने देखा कि सूर्य्य अस्त होनेके समय डेरोंमें पहरे देनेवाले मनुष्य व्याकुल हो रहे हैं। तब हम लोगोंसे राजा दुर्य्योधनका सर्व्वनाश सुन डेरोंमें हाहाकार मचगया। बूढ़े, रानी और डेरोंकी रचा करनेवाले मनुष्य राजोंकी स्त्रियोंको ले लेकर अपने अपने नगरोंकी ओरको चल दिये।

हे महाराज! डेरोंमें स्त्रियोंके रोनेका महा शब्द उठा, कोई छाती पीटने लगीं, कोई शिर पीटने लगीं, कोई नखूनोंसे छाती चीरने लगीं, कोई बाल उखाड़ने लगीं और कोई हाहाकार कर करके शोच करने लगीं।

तब दुर्य्योधनके मन्त्री इकट्ठे होकर रोने लगे, फिर रानियोंको सङ्ग लेकर हस्तिनापुरको चले, उनके सङ्ग वेत्रधारी और द्वारपाल भी चले स्त्रियोंकी रचा करनेवाले लोग भी पलङ्ग और बिछौने लदवा कर खच्चरोंके रथपर चढ़कर अपनी अपनी रानियोंको लेकर अपने

गदायुद्धपर्व्व ।

आगे गदायुद्धपर्व्व लिखते हैं ।

महाराज धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! जब पाण्डवोंने हमारी सब सेनाका नाश कर दिया, तब हमारी ओरके बचे हुए; कृपाचार्य्य, बलवान् अश्वत्थामा, कृतवर्म्मा, और मूर्ख राजा दुर्य्योधनने क्या किया?

सञ्जय बोले, हे राजन्! जब महात्मा क्षत्रियोंके परिवार डेरोंसे भाग गये और सब डेरे शून्य होगये, तब कृपाचार्य्य, अश्वत्थामा और कृतवर्म्मा ये तीनों महारथ सन्ध्या समय बिजयी पाण्डवोंका शब्द सुनकर डेरोंमें न बैठ सके और राजाको ढूढ़नेके लिये उस ही तालाबकी ओर चले।

धर्म्मात्मा महाराज युधिष्ठिरने भी अपने भाइयोंके सहित दुर्य्योधनको मारनेके लिये ढूढ़ने लगे। पाण्डवोंने बहुत क्रोध और यत्न करके ढूढ़नेपर भी कहीं राजा दुर्य्योधनका पता न पाया।

राजा दुर्य्योधनने गदा लेकर बहुत शीघ्रतासे तालाबमें घुसकर अपनी मायासे जलको स्थिर कर दिया।

जब ढूढ़ते ढूढ़ते पाण्डवोंके घोड़े थक गये, तब वे लोग अपने डेरोंमें जाकर अपनी सेनाका प्रबन्ध करने लगे। जब पाण्डव डेरोंमें चले गये, तब अश्वत्थामा, कृपाचार्य्य और कृतवर्म्मा धीरे धीरे उस तालाबकी ओर चले जहां राजा दुर्य्योधन सोते थे वहां जाकर पानीमें सोते हुए तेजस्वी राजा दुर्य्योधनसे बोले।

हे राजन्! आप उठिये और हम लोगोंके सहित युधिष्ठिरसे युद्ध कीजिये, तो उन्हें जीतकर राज्य कीजिये। या मरकर स्वर्गको जाइये. आपने पाण्डवोंकी सेनाका नाश कर दिया। और बचे हुए बीरोंको भी व्याकुल कर दिया। अब हम लोग आपकी रक्षा करेंगे। तब पाण्डव आपके बलको नहीं सह सकेंगे। इसलिये आप उठिये. और पाण्डवोंसे युद्ध कीजिये।

राजा दुर्य्योधन बोले, हे बीरो! हमारी और पाण्डवोंके घोर युद्धरूपी मनुष्योंके नाशसे बचे हुए तुम तीन पुरुषसिंहोंको प्रारब्धहीसे जीता देखते हैं। आप लोग बहुत थक गये हैं, और हम भी घावोंसे व्याकुल हैं, पाण्डवोंकी सेनाका उत्साह बहुत बढ़ा हुआ है। इसलिये हम इस समयमें युद्ध करना नहीं चाहते हैं। हे बीरो! आप लोगोंका जो हमारी ओर ऐसा चित्त है। यह कुछ आश्चर्य नहीं मैं आप लोगोंके बलको जानता हूं, परन्तु समयको नांघ नहीं सकता हूं, आज रात्रि भर बिश्राम करके प्रातःकाल होते ही आप लोगोंके सहित पाण्डवोंसे निःसन्देह युद्ध करूंगा।

सञ्जय बोले, महाबलवान् राजाके ऐसे बचन सुन द्रोणपुत्र अश्वत्थामा बोले, हे राजन्! आपका कल्याण हो।

आप उठिये हम आपके सब शत्रुओंको जीतेंगे, हम जय और बिजयकी शपथ खाकर कहते हैं। यदि सोमक बंशियोंका नाश न करें तो महात्माओंको व्रत्त हीन योग्य यज्ञोंका फल हमें न मिले, हे राजन्! अब हम आपसे सत्य कहते हैं, की यह रात्रि बीतनेपर हम उब पाञ्चालोंका नाश करेंगे। और बिना उनको मारे कवच नहीं खोलेंगे।

हे राजन्! जहां ये सब बात होरहीं थी, वहां उसी समय भीमसेनके लिये, मांस लानेवाले, व्याधे मांस भारसे थककर पानी पीनेको आये और उनको बैठा देख छिपकर बातें सुनने लगे। उन तीनों बीरोंनेभी जब राजाकी युद्धकी इच्छा ना देखी तब शांत होकर दूसरे दिन युद्धकी इच्छासे बैठ गये, वे व्याधेभी उन महारथोंके बचन सुन राजाकी युद्धकी इच्छा न जान और राजाको पानीमें जान महाराज युधिष्ठिरके

वीर बहुत दूर जाकर थककर एक बड़गदकी छायामें बैठकर राजाका शोच करने लगी कि महाबलवान धृष्टराष्ट्रपुत्र दुर्य्योधन जलके भीतर सोते हैं और पाण्डव भी युद्धके लिये वहीं पहुंच गये हैं, न जानें यह युद्ध कैसा होगा ? न जाने महाराजकी क्या दशा होगी ? और न जानें महाराजके सङ्ग पाण्डव कैसा व्यवहार करेंगे ? यही शोचते शोचते उन्होंने रथोंसे घोड़े छोड़े और वहीं सो रहे ।

३० अध्याय समाप्त ।

सञ्जय बोले, हे राजन् ! धृतराष्ट्र जब वे तीनों वीर चले गये, तब पाण्डवोंकी सेना उस तालाबके पास पहुंची जहां मायासे जल स्तम्भित करके राजा दुर्य्योधन सोते थे । वहां जाकर कुरुकुलश्रेष्ठ महाराज युधिष्ठिर श्रीकृष्णसे ऐसा बोले, हे कृष्ण ! यह देखो दुर्य्योधनने अपनी दैवी मायासे इस जलको कैसा स्तम्भित कर दिया है, ये किसी मनुष्यसे भी नहीं डरता आज यदि इस छलीको साक्षात् इन्द्र भी रक्षा करें तौभी यह मुझसे जीता नहीं बचेगा ।

श्रीकृष्ण बोले, हे महाराज ! इस छलीको छलहीसे मारिये, छलीको छलसे मारनेमें कुछ भी पाप नहीं होता । हे भारतकुलश्रेष्ठ आप इस जलमें कुछ क्रिया करके इसको मारिये इन्द्रने अनेक दानवोंको मारा है, महात्मा रामने भी कौशलहीसे महा बलवान बालीको मारा था, विष्णुने भी कौशलहीसे हिरण्याक्ष राक्षसको मारा था, और विष्णुने ही कौशलहीसे हिरण्यकशिपु राक्षसको भी मारा था, इन्द्रने भी वृत्रासुरको कौसलहीसे मारा था । इसी प्रकार पुलस्त्यकुलमें उत्पन्न हुए रावण नामक राक्षसको भी सेना और बान्धवोंके सहित कौशलहीसे मारा था, आप भी वैसे ही कौशल और बलसे दुर्य्योधनको मारिये ।

हे राजन् ! पहिले समयमें मैंने भी विप्रचित्ती और तारक नाम राक्षसको कौशलहीसे मारा था, बातापी इल्वल, शुन्द, उपशुन्द, त्रिशिरा भी कौशलहीसे मारे गये, कौशलहीसे इन्द्र स्वर्गका राज्य करते हैं । हे युधिष्ठिर ! कौशलही जगत्में प्रधान है और कुछ नहीं, अनेक दैत्य, दानव और राक्षस कौशलहीसे मारे गये हैं । इसलिये आप भी कौशलसे ही काम कीजिये ।

सञ्जय बोले, श्रीकृष्णके ऐसे बचन सुन महाव्रतधारी कुन्तीपुत्र युधिष्ठिर जलमें सोते हुए महाबलवान दुर्य्योधनसे बोले ।

हे दुर्य्योधन ! सब क्षत्री और अपने वंशका नाश करके अब अपने जीनेकी इच्छासे तुम जलमें क्यों घुसे हो ? तुम उठो और हम लोगोंसे युद्ध करो । हे पुरुषश्रेष्ठ ! तुम्हारा वह अभिमान और तुम्हारा वह गौरव अब कहां गया ? जो तुम डरकर पानीके भीतर छिपे हो, सभामें सब लोग तुम्हें वीर कहा करते थे, परन्तु आज पानीमें छिपनेसे हमें वह सबकी बात झूठ जान पड़ी, तुम क्षत्रीकुलमें उत्पन्न हुए हो विशेषकर कुरुवंशी कहलाते हो अपने जन्म और वंशका स्मरण करो और उठकर हम लोगोंसे युद्ध करो । हम कुरुकुलमें उत्पन्न हुए हैं । यह कहके भी क्या युद्धसे डरकर छिपे हो ? क्या यह तुम्हारे लिये एक लाजकी बात नहीं है ? राज्य और युद्धमें न रहना युद्ध छोड़कर भागना यह क्षत्रियोंका धर्म्म नहीं है ।

मूर्ख और अनाड़ी लोग ऐसा करते हैं, युद्ध छोड़कर भागनेसे क्षत्रियको स्वर्ग नहीं होता तुम बिना युद्ध समाप्त किये भाई, पुत्र, पिता, सम्बन्धी, मामा और बान्धवोंको नाश कराकर तुम किसलिये इस पानीमें छिपे हो, रे दुबुद्धे !

तू वृथा वीरताका अभिमान किया करता था, और सबको सुनाया करता था, कि मैं वीर हूं; वीर लोग क्षत्रियोंको देखकर कदापि युद्ध छोड़ कर नहीं भागते, हे वीर! तुम युद्ध छोड़कर क्यों भाग आये? सो तुम अब भय दूर करके उठो और हम लोगोंसे युद्ध करो। सब क्षत्रियोंका नाश कराके अब तुम्हें जीना धर्म्म नहीं है, हे दुर्य्योधन! तुम्हारे समान क्षत्रिय अपने धर्म्मको नहीं छोड़ते हैं, हे भारत! तुम जो पहिले कर्ण और सुबलपुत्र शकुनिके आश्रयसे अपनेको सब मनुष्योंसे अधिक मानते थे, उस हो घोर पापका फल भोगनेके लिये आज तुमको हम लोगोंसे युद्ध करना होगा, तुम्हारे समान क्षत्रियको युद्ध छोड़कर भागना बहुत अनुचित है, तुम्हारा वह बल, तुम्हारा वह अभिमान, तुम्हारा वह तेज, तुम्हारा वह गर्ज्जना और तुम्हारी वह शस्त्रविद्या आज कहां गई? जो डरसे पानीमें छिपे हो, तुम उठो और क्षत्रिय धर्म्मके अनुसार हम लोगोंसे युद्ध करो ब्रह्माने तुम्हारा यही धर्म्म बनाया है कि, हम लोगोंको जीतकर पृथ्वीके स्वामी बनो अथवा लड़कर पृथ्वीमें शयन करो, हे महारथ! तुम अपने धर्म्मको पालन करो और हम लोगोंको मार कर जगत्के राजा बनो।

सञ्जय बोले, हे महाराज! बुद्धिमान युधिष्ठिरके ऐसे वचन सुन जलके भीतरसे तुम्हारे पुत्र ऐसा बोले।

दुर्य्योधन बोले, हे पृथ्वीनाथ! हे भारत! मनुष्योंको भय हो यह कुछ आश्चर्य्यकी बात नहीं है। भय होना मनुष्योंका स्वाभाविक धर्म्म है परन्तु मुझे वह भी नहीं है अर्थात् मैं किसी समय किसीसे नहीं डरता मैंने तुम्हारे भयसे मरनेके डरसे या किसी शोकसे जलमें प्रवेश नहीं किया है वरन युद्ध करता बहुत थक गया, रथ टूट गया सारथी और रक्षा करनेवाले मर गए, कोई साथी न रहा, तब थोड़ासा सांस लेनेके लिये इस जलमें आयाथा, अब तुम और तुम्हारे सब साथी सावधान हो जाओ मैं जलसे निकल कर सबको मारूंगा।

युधिष्ठिर बोले, हम सब सावधान हैं और बहुत समयसे तुम्हें ढूंढ़ रहे हैं इसलिये तुम उठो और हम लोगोंको मारकर इस जगत्का राज्य करो। अथवा हम लोगोंके हाथसे मर कर वीर लोकको जावो।

दुर्य्योधन बोले, हे कुरुकुलश्रेष्ठ! मैं जिन लोगोंके लिये जगत्का राज्य करना चाहता था, वे मेरे सब भाई मरे हुए पृथ्वीमें सोते हैं; और भी जगत्के उत्तम क्षत्रिय नष्ट होगये, पृथ्वी रत्नोंसे हीन होगई अब विधवा स्त्रीके समान मैं इसको नहीं भोगना चाहता; द्रोणाचार्य्य, कर्ण और भीष्म पितामह मर गये, इसलिये अब मुझे युद्ध करनेसे कुछ लाभ नहीं है, तौ भी पाञ्चाल और पाण्डवोंका उत्साह तोड़नेके लिये मैं अब भी तुम्हें मारनेका साहस करता हूं ऐसा कौन मूर्ख राजा होगा जो अपने सब सहायकोंका नाश कराके राज्य करनेकी इच्छा करे! इसलिये अब यह रत्न हीन पृथ्वी तुम्ही लो। जगत्में ऐसा कौन मनुष्य होगा, जो भाई पुत्र और जातिका नाश कराके जीनेकी इच्छाकरे; विशेषकर मेरे समान वीर; अब मुझे जीनेकी कुछ इच्छा नहीं, मैं हरिनका चमड़ा ओढ़कर बनको जाता हूं। यह क्षत्रिय, हाथी और घोड़ोंसे रहित पृथ्वी तुम्हारी हो, हे राजन्! तुम अपनी इच्छानुसार वीर और रत्नोंसे रहित पृथ्वीका राज्य करो।

सञ्जय बोले, हे राजन्! महायशस्वी युधिष्ठिर जलके भीतरसे दुर्य्योधनके ऐसे वचन सुन ऐसा कहने लगे।

युधिष्ठिर बोले, हे तात! अब इस वृथा रोनेसे कुछ फल न होगा। जैसी शकुनीके मनमें छलसे पाण्डवोंका राज्य छीननेकी इच्छा

थी। वैसी मेरे मनमें नहीं है। तुम अत्यन्त समर्थ भी हो तो भी मैं तुम्हारा दिया राज्य नहीं चाहता परन्तु तुम्हे मारकर पृथ्वीका राजा बनूंगा। अब तुम पृथ्वीके स्वामी नहीं हो, इसलिये तुम्हे देनेंका भी कुछ अधिकार नहीं जब तुम समर्थ थे, और हमलोग कुलकी शान्तिके लिये धर्म्मसे आधा राज्य मांगते थे, तभी तुमने हमें क्यों नहीं दिया था?

महावीर श्रीकृष्णका निरादर करके अब तुम हमको राज्य देना कहते हो, यह तुम कैसी भूलकी बात कहते हो? कौन ऐसा राजा होगा जो समर्थ होकर अपना राज्य दूसरेको देनेको इच्छा करे?

हे राजन्! तुमको इस समय पृथ्वी देने और अपने वशमें रखनेकी समर्थ नहीं है। तुमने श्रीकृष्णसे कहा था को मैं सुईके नाकेके समान पृथ्वी बिना युद्धके युधिष्ठिरको न दूंगा। सो तुम आज सब पृथ्वी मुझे क्यों देते हो? तुम पहिले सुईके नाकेके समान पृथ्वी नहीं छोड़ना चाहते थे, सो आज सब पृथ्वी छोड़नेकी क्यों इच्छा करते हो? तुम हमको जीतकर जगत्‌के राजा बनों। ऐसा कौन मूर्ख राजा होगा जो अपने जीतेजी अपने शत्रुको राज्य दे? परन्तु तुम मूर्ख हो, अपनी मूर्खतासे बक बक करते हो, अब तुम हम लोगोंको जीतकर पृथ्वीके राजा बनों। अथवा हमारे हाथसे मरकर स्वर्गको जावो। हमारे और तुम्हारे दोनोंके जीनेसे लोगोंको यह सन्देह बना रहेगा, कि भारत युद्धमें न जाने किसकी विजय हुई, रे मूर्ख! तेरा जीना इस समय हमारे हाथमें है, हम अपनी इच्छासे जीसक्ते हैं। परन्तु तू नहीं जीसक्ता। तेने हमारे मारनेके लिये घरमें आग लगाई, विष खिलाया, सांपसे कटवाया, पानीमें डुबाया, छलसे हमारा राज्य छीन लिया, सभामें द्रौपदीके वस्त्र खींचे इत्यादिक अप्रिय कामोंसे अब मैं तुझे जीता न छोडूंगा। इसलिये उठो और युद्ध करो, युद्ध होसे कल्याण होगा।

युधिष्ठिरने और सब वीरोंने भी दुर्य्योधनको इत्यादि अनेक कठोर बातें कहीं।

३१ अध्याय समाप्त।

महाराज धृतराष्ट्र बोले, हे सञ्जय! हमारे पुत्र दुर्य्योधन स्वभावहीसे महाक्रोधी थे। उन्होंने युधिष्ठिरके ऐसे कठोर बचन सुनके क्या कहा? उन्होंने इससे पहिले, किसीके कठोर बचन नहीं सुने थे, सब जगत् महाराज कहकर जिनका आदर करता था, जिस छत्रकी छाया अभिमानमें सूर्य्यके समान आकाशमें घूमती थी, जिसकी कृपासे वन और म्लेच्छोंके सहित यह पृथ्वी स्थिर थी, हे सञ्जय! उस मेरे पुत्रने पाण्डवोंके कठोर बचन सुनके कैसे सहे? और क्या कहा? सो तुम हमसे कहो उस समय वे ऐसी आपत्तिमें पड़े थे, कि एक सेवक भी उनके सङ्ग न था।

सञ्जय बोले, हे राजेन्द्र! भाइयोंके सहित युधिष्ठिरके ऐसे कठोर बचन सुनकर राजा दुर्य्योधन बार बार हाथ पटकते हुए और गर्म्म स्वांस लेते हुए युद्ध करनेकी इच्छा करने लगे। और युधिष्ठिरसे ऐसा बचन बोले।

हे महाराज! आप लोग वाहन और सहायकोंके सहित हैं, मैं अकेला वाहनरहित और थका हुवा हूं। सो रथोंमें बैठे शस्त्र सहित अनेक वीरोंसे अकेला शस्त्र रहित पैदल घावोंसे व्याकुल किस प्रकार युद्ध करूंगा? हे राजन्! धर्म्मसे एक एक के सङ्ग युद्ध करनेसे कुछ भय नहीं करता परन्तु अकेलेसे अनेक वीरोंके सहित युद्ध करना अधर्म्म है, मैं तुमसे भीमसेनसे, अर्ज्जुनसे, नकुलसे, सहदेवसे, श्रीकृष्णसे, धृष्टद्युम्नसे, सब पाञ्चालोंसे और सात्यकि आदि सब वीरोंसे कुछ नहीं डरता, मैं एकला हो

सबको मार सक्ता हूं। परन्तु जगत्में कीर्त्तिका मूल धर्म्म ही है, आपका धर्म्म नष्ट न हो, इसी-लिये, यह सब कह रहा हूं। जैसे वर्ष सब ऋतुवोंको नांघ जाता है, ऐसे ही मैं सब तुम लोगोंको जीत लूंगा? जैसे प्रातःकाल एकला सूर्य्य अपने तेजसे सब तारोंको छिपा देता है। ऐसे ही आज मैं एकला रथ, और अस्त्रोंसे हीन होनेपर भी तुम्हारा सबका नाश करूंगा। हे पाण्डवो! तुम लोग स्थिर और सावधान होजावो, आजमैं महायशस्वी क्षत्रिय, बाह्लीक, भीष्म, द्रोणाचार्य्य, महात्मा कर्ण, बीर जयद्रथ, वीर भगदत्त, मद्रराज शल्य, भूरिश्रवा, अपने, पुत्र, सुबलपुत्र शकुनी आदि अपने बान्धवोंके ऋणसे छूटूंगा। और तुम्हें बान्धवोंके सहित मारूंगा? ऐसा कहकर महाराज चुप होगए।

महाराज युधिष्ठिर बोले, हे महावीर! प्रारब्धहीसे तुम क्षत्रियधर्म्मको जानते हो, प्रारब्धहीसे तुम युद्धके लिये उपस्थित हुए हो, प्रारब्धहीसे तुम्हार चित्तमें बीरता आई है। तुम्हे धन्य है जो तुम एकले ही हमसे युद्ध करनेको उपस्थित होगए। अब हम तुम्हारी इच्छानुसार तुम्हे एक वरदान देते हैं। जो तुम्हारी इच्छा हो सो शस्त्र ले लो। और हम सबमेंसे जिस बीरके सङ्गमें तुम्हारी इच्छा हो उससे युद्ध करो और सब लोग युद्ध देखेंगे, कोई लड़ेगा नहीं, और भी वरदान देते हैं। कि हम पांचोंमेंसे एकको मारनेसे भी तुम्हारा राज्य मिलेगा अथवा मरकर स्वर्ग मिलेगा।

दुर्य्योधन बोले, आपने जो कहा हम वही स्वीकार करते हैं। शस्त्र हमारे पास गदा है, आपकी सम्मती हो तो हम इसीसे युद्ध करें, अब तुम सबमेसे जो गदा युद्ध जानता हो सो गदा लेकर हमसे पैदल गदा युद्ध करें, रथोंमें बैठकर अनेक विचित्र युद्ध किए आज यह आपकी आज्ञासे घोर गदा युद्ध भी होजाय। और लोग अनेक शस्त्रोंसे युद्ध करते हैं। परन्तु मैं केवल गदाहीसे भाइयोंके सहित तुमको मारूंगा। पाञ्चाल और सृञ्जय आदि तुम्हारे सब पक्षपति योंको मारूंगा। हे युधिष्ठिर! मैं युद्धमें इन्द्रसे भी नहीं डरता।

युधिष्ठिर बोले, हे गान्धारीपुत्र दुर्य्योधन! तुम मनुष्य बनो पानीसे निकलकर गदा धारण करके एक एकसे युद्ध करो आज यदि इन्द्र भी तुम्हारी रक्षा करें तौभी जीते नहीं बचोगे।

सञ्जय बोले, युधिष्ठिरके इन कटु बचनोंको पुरुषसिंह दुर्य्योधन क्षमा न कर सके और भीतरसे मतवाले हाथीके समान स्वास लेने-लगे। जैसे उत्तम घोड़ा कोड़ेकी चोट नहीं सह सक्ता, ऐसे ही दुर्य्योधन युधिष्ठिरके कड़वे बचन न सह सके, तब बलसे सब पानीको उथल पुथल करके सोनेसे जड़ी पर्व्वतके समान भारी दृढ़ गदाको कन्धेपर रखकर इस प्रकार उठे, जैसे मतवाला हाथी जलसे निकलता है। महाबलवान दुर्य्योधन दो पहरके सूर्य्यके समान खड़े होकर गदाको कूने लगे। उस समय गदाधारी दुर्य्योधनका शरीर ऐसा दीखता था, जैसे शिखरके सहित पर्व्वत और प्रलयकालमें शूलधारी यमराज। महाबाहु शत्रुनाशन गदाधारी दुर्य्योधनको सब लोग दण्डधारी यमराज, बज्रधारी इन्द्र और त्रिशूलधारी शिवके समान देखने लगे।

उनको युद्धमें एकले खड़ा देख पाञ्चाल, सृञ्जय और पाण्डव ताली देकर हंसने लगे। तुम्हारे पुत्र दुर्य्योधन उस हंसीको न क्षमा कर सके और नेत्र फैलाकर देखने लगे। मानो पाण्डवोंको भस्म कर देंगे। फिर दांत चबाकर भौंह टेढ़ी करके श्रीकृष्ण और पाण्डवोंसे बोले।

अरे पाण्डवो! तुम सब हमारे पास आओ और हंसीका फल लो और पाञ्चालोंके सहित मरकर स्वर्गको जावो।

सञ्जय बोले, रुधिर और पानीमें भीगे, दुर्य्योधनका शरीर उस समय ऐसा दीखता था,

जैसे झरनोंके सहित पर्व्वत उस समय पाण्डवोंने उन्हें दण्डधारी यमराजके समान देखा, तब मतवाले बैलके समान नाचते हुए मेघके समान गर्ज्जते हुए दुर्य्योधन गदा लेकर पाण्डवोंको ललकारने लगे।

दुर्य्योधन बोले, हे युधिष्ठिर! अब तुम लोग एक एक मुझसे युद्ध करनेको चले आवो, क्योंकि धर्म्मके अनुसार एक बीरके साथ अनेक बीर नहीं लड़ सक्ते। यद्यपि मेरा बैर सबहीके सङ्ग है। और सभीको मुझसे लड़ना चाहिए परन्तु आप युक्त और अयुक्त विषयोंको जानते हैं।

महाराज युधिष्ठिर बोले, हे दुर्य्योधन! तुम्हारी बुद्धि ऐसी न होनी चाहिए क्योंकि यह बतलाओ कि अभिमन्युको के महारथोंने मिलकर मारा था? क्षत्रियोंका धर्म्म महादुष्ट और नीच है, नहीं तो अभिमन्युको कौन मार सक्ता था? तुम सब लोग धर्म्मात्मा और बीर थे, और सब लोग इन्द्रलोकमें जानेके लिये धर्म्मसे युद्ध कर रहे थे, और यह भी जानते थे कि, एक बीरके सङ्ग अनेक बीरोंका युद्ध न करना चाहिए तब अभिमन्युको तुम्हारी सम्मतिसे अनेक बीरोंने क्यों मारा? धर्म्म सब मनुष्य करना चाहते हैं। परन्तु धर्म्म बड़ा कठिन है, धर्म्म करनेसे स्वर्गका द्वार दीखने लगता है, जो हो अब तुम यह कवच, पहिनो बालोंको ठीक करके टोप लगावो और भी जो सामग्री तुम्हारे पास न हो सो हम से लो, हम फिर भी एक बरदान तुम्हें देते हैं। कि हम पांचोंमेंसे जिसके सङ्ग तुम लड़ना चाहो उस एकको मारकर राजा बनोगे, अथवा उसके हाथसे मरकर स्वर्गको जावोगे, हे बीर! जीवदानको छोड़कर और जो तुम्हारी इच्छा हो सो हमसे मांगो।

सञ्जय बोले, हे राजन्! तब तुम्हारे पुत्रने सोनेका विचित्र कवच पहिना और सोनेका विचित्र टोप ओढ़ा उस समय उनकी शोभा सुमेरु पर्व्वतके समान दीखने लगी तब गदा लेकर दुर्य्योधन खड़े हुए और ऐसा बोले, पांचो पाण्डवोंमेंसे जिसकी इच्छा हो सो गदा लेकर हमसे युद्ध करनेको आवै। चाहे सहदेव, चाहे भीमसेन, चाहे नकुल, चाहे अर्ज्जुन और चाहे साक्षात् युधिष्ठिर हो मुझसे क्यों न लड़ें, आज सबको मारूंगा आज मैं सोनेकी मढ़ी गदासे युद्ध करके इस बैरके पार जाऊंगा, मुझे यह निश्चय है कि जगत्‌में मेरे समान कोई गदायुद्ध नहीं जानता, इसलिये यदि धर्म्मसे लड़ोगे तो मैं तुम सबोंको मारडालूंगा। परन्तु मुझे ऐसे अभिमानके बचन न कहने चाहिये अथवा जो कहता हूं वह सब सत्य करके दिखला दूंगा, इसलिये कहनेमें कुछ दोष नहीं; अधिक क्या कहैं जिसे युद्ध करना हो सो गदा लेकर आवे हमारे बचन सत्य हैं वा झूठ हैं सो प्रत्यक्ष होजावेंगे।

३२ अध्याय समाप्त।

सञ्जय बोले, हे राजन् धृतराष्ट्र! दुर्य्योधनको इस प्रकार गर्ज्जते देख श्रीकृष्ण बोले, हे युधिष्ठिर! आपने यह क्या भूल करी जो दुर्य्योधनको यह बरदान दिया कि हम पांचोंमेसे एकको मारकर राजा बनोगे, यदि अब यह तुमसे, अर्ज्जुनसे, नकुलसे या सहदेवसे युद्ध करना चाहे तो क्या हो? इसने तेरह बर्षतक लोहेके भीमसेन बनाकर तोड़नेका अभ्यास किया है, तब हम लोगोंकी कार्य्यसिद्धि कैसे होगी? हे राजोंमें श्रेष्ठ! हम इस समयमें भीमसेनके सिवाय और किसीको ऐसा नहीं देखते जो दुर्य्योधनको जीत सके आपने क्रोध और साहसमें भर करके ऐसे बचन कह दिये जैसे शकुनी और आपसे पहिले जुवा हुआ था वैसे ही अब यह दूसरा जुआ होगया, जो हो भूलसे; भीमसेन बलवान और समर्थ हैं, परन्तु राजा दुर्य्योधन चतुर और चालाक हैं, चतुर

बलवानसे सदा तेज रहता है, यह नियम है ऐसे चालांक शत्रुके सङ्गमें आपने घोर प्रतिज्ञा कर दी, आप आपत्तिमें पड़े और हम लोगोंको भी दुःखमें डाला, ऐसा कौन राजा होगा जो इतने युद्धसे प्राप्तहुए राज्यको एक मनुष्यके मरनेपर शत्रुके हाथमें देदे? हमें कोई ऐसा मनुष्य और देवता नहीं दीखता जो गदाधारी दुर्य्योधनको जीत सके, आप भीमसेन, नकुल, सहदेव और अर्ज्जुन पांचोमें कोई ऐसा नहीं है जो धर्म्मसे युद्ध करते हुए दुर्य्योधनको जीत सके तब आपने ऐसा क्यों कहा कि गदासे युद्ध करो? और एकको मार कर राजा होजाओ? राजा दुर्य्योधन बड़ा चतुर है, इसलिये भीमसेन उन्हें जीत सकें या नहीं इसमें हमें सन्देह है, हमें यह निश्चय होता है कि पाण्डु और कुन्तीकी सन्तान केवल भीख मांगने और बनमें रहनेहीके लिये उत्पन्न हुई है राज्य भोगनेको नहीं।

भीमसेन बोले, हे यदुकुलश्रेष्ठ! आप कुछ भय मत कीजिये हम निःसन्देह दुर्य्योधनको मारेंगे और इस घोर बैरके पार जांयगे। हमें निश्चय है, कि धर्म्मराजकी विजय होगी हमारी दुर्य्योधनको गदासे दुगुणा भारी है, इसलिये आप भय मत कीजिये हम दुर्य्योधनसे गदा युद्ध कर सक्ते हैं। आप सब लोग देखिये हम एकले तीनों लोकोंके सहित शस्त्रधारी देवतोंसे युद्ध कर सक्ते हैं। फिर दुर्य्योधनकी तो कथा ही क्या है?

सञ्जय बोले, भीमसेनके ऐसे बचन सुन उनकी प्रशंसा करके प्रसन्न होकरके श्रीकृष्ण बोले, हे महाबाहो! तुम्हारे ही आश्रयसे आज राजा युधिष्ठिर शत्रुरहित हुएहैं और तुम्हारे ही आश्रयसे इनको यह उत्तम लक्ष्मी प्राप्त हुई है, तुमने धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंको मारा, तुमने अनेक राजा और राज पुत्रोंको मारा तुम्हारे पास आते ही कलिङ्ग, मागध, प्राच्य, गान्धार, और कुरुबंशी क्षत्रियोंका नाश होगया। जैसे विष्णुने जीत कर स्वर्ग इन्द्रको दिया था, वैसे ही तुम दुर्य्योधनको मार कर सब पृथ्वी युधिष्ठिरको दो हमें यह निश्चय है कि तुम इसे मारोगे तुम उसकी जङ्घा तोड़ कर अपनी प्रतिज्ञा पालन करना। यह चालांक, बलवान् और महायोद्धा है इसलिये यत्नके सहित सावधान होकर इससे युद्ध करना।

हे राजन्! तब सात्यकी युधिष्ठिरादि पाण्डव और धृष्टद्युम्नादि पाञ्चाल भीमसेनकी प्रशंसा करने लगे। तब महाबलवान भीमसेन सृञ्जयवंशी क्षत्रियोंके बीचमें खड़े सूर्य्यके समान तेजस्वी युधिष्ठिरसे बोले, हे महाराज! मैं इससे युद्ध कर सक्ता हूं, यह नीच नहीं मुझे जीत सक्ता है, जैसे अर्ज्जुनने खाण्डव बनको जलाके अपना महा क्रोध शान्त किया था, वैसे ही आज मैं दुर्य्योधनको मारकर अपने हृदयमें भरे क्रोधको शान्त करूंगा, आज इस पापीको गदासे मारकर आपके हृदयका शल्य निकालूंगा। हे पापरहित! आप प्रसन्न हूजिए आज आप बिजय और कीर्त्ति माला पहिनेंगे, मूर्ख दुर्य्योधन राज्य, धन और प्राणोंसे छूटेगा, आज अपने पुत्रको मरा हुआ सुन राजा धृतराष्ट्र शकुनिकी सम्मतिसे किये हुए पापका स्मरण करेंगे।

ऐसा कह कर भरतकुलश्रेष्ठ बलवान भीमसेन गदा लेकर खड़े होगये और जैसे इन्द्रने वृत्रासुरको ललकारा था, वैसेही दुर्य्योधनको पुकारने लगे। दुर्य्योधन भी उस ललकारको क्षमा न कर सके और जैसे मतवाला हाथी मतवाले हाथीकी ओर युद्ध करनेको दौड़ता है, ऐसे भीमसेनकी ओरको दौड़े गदाधारी दुर्य्योधनको पाण्डवोंने शिखरधारी कैलाशके समान देखा; महाबलवान एकले दुर्य्योधनका सब पाण्डव इस प्रकार साहस बढ़ाने लगे जैसे झुण्डसे छूटे हाथीका। राजा दुर्य्योधनको उस समय न कुछ घबड़ाहट थी, न